फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 130 प्रभात जयपुर, गुरूवार 11 दिसम्बर, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

Gyaraspur Ki Apsara In A Store Room With Bars?

In a barred antechamber to the right of the curator's tube-lit and laminate-walled sarkari office rests a millennium-old nature spirit or yakshi, identified as a 'salabhanjika'

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

'Zia' Fitted 'Nisha'

From Headlines to Melody : How a Newspaper Inspired R. D. Burman's 'Nisha' in Sanam Teri Kasam

राहुल ने गृह मंत्री शाह से पूछा, ''चुनाव आयुक्त'' को सरकार ने सभी कानूनी कार्यवाही व दंड देने से मुक्ति क्यों दी है?

प्रत्युत्तर में अमित शाह ने पूछा, ''इंदिरा गांधी ने अपने आपको सभी कानूनी कार्यवाही और दण्ड से मुक्ति क्यों प्रदान की थी, जब न्यायालय ने उन पर गैर वाजिब तरीके से चुनाव लड़ने का आरोप लगाया था''

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसंबर। लोकसभा में एसआईआर पर हुई बहस के दौरान गृह मंत्री अमित शाह के जवाब के बाद, राहुल गांधी ने तीखी टिप्पणी की।

गृह मंत्री के जवाब से असंतुष्ट संयुक्त विपक्ष सदन से वॉकआउट कर गया। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि ठीक मोदी की तरह, गृह मंत्री ने भी कांग्रेस पर हमला करने में ज़्यादा समय गंवाया, बजाय इसके कि एसआईआर के उन विवादित पहलुओं पर स्पष्टीकरण देते, जिन पर राजनीतिक दल लगातार सवाल उठा रहे हैं।

शाह के जवाब के बाद राहुल गांधी ने कहा कि गृह मंत्री उनके द्वारा उठाए गए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- एक वरिष्ठ नेता ने लोकसभा में हुई इस नोक-झोंक पर टिप्पणी की कि शाह चुनाव आयुक्त से तुलना कर रहे हैं तथा यह भी सच है कि अपने को ''इम्युनिटी'' प्रदान करने के बाद, इंदिरा गांधी चुनाव हार गई थीं।
- राहुल गांधी ने नोक-झोंक के बाद दावा किया कि अमित शाह नोक-झोंक के दौरान रक्षात्मक मुद्रा में थे।
- राहुल गांधी ने तीन सवाल उठाए थे। पहला सवाल था, उन्हें वोटर लिस्ट का, मशीन द्वारा पढ़ा जा सके, ऐसा प्रिंटआउट क्यों नहीं दिया गया।
- दूसरा सवाल था, ईवीएम के काम करने के तरीके का ''पारदर्शी'' ऑडिट क्यों नहीं कराया जा रहा।
- तीसरा सवाल था, चुनाव आयुक्त की चयन प्रक्रिया से सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को क्यों अलग किया गया।
- कांग्रेस की रणनीति है कि राहुल गांधी के सवालों का जो भी जवाब अमित शाह ने लोकसभा में दिया है, उसी को कमोबेश कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे अगले दिन राज्यसभा में उठायेंगे।

थरूर ने सावरकर अवॉर्ड ठुकराया

तिरुवनंतपुरम, 10 दिसंबर। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने बुधवार को वीर सावरकर इंटरनेशनल इम्पैक्ट अवार्ड 2025 को ठुकराते हुए कहा कि उन्हें हाई रेंज रूरल डेवलपमेंट सोसाइटी (एचआरडीएस इंडिया) द्वारा घोषित इस सम्मान के बारे में कभी सूचित ही नहीं किया गया था।

इससे पहले एनजीओ ने नयी दिल्ली में उद्घाटन पुरस्कार समारोह के लिए चयनित छह हस्तियों में थारूर का नाम भी शामिल किया था, इस समारोह में कथित रूप से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद थे।

थरूर ने कहा कि उन्हें इस घोषणा के बारे में मीडिया रिपोर्टों के माध्यम से ही पता चला जब वह स्थानीय निकाय चुनावों में अपना वोट डालने के लिए केरल में थे।

थरूर ने लिखा कि उन्हें पुरस्कार की प्रकृति, इसे प्रदान करने वाले संगठन या किसी भी प्रासंगिक विवरण के बारे में जानकारी नहीं थी और इसलिए कार्यक्रम में भाग लेने या सम्मान स्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

- थरूर ने कहा, उन्हें अवॉर्ड की जानकारी तब मिली जब वे केरल में थे, उन्हें अवॉर्ड की प्रकृति व अवॉर्ड देने वाले संगठन के बारे में कुछ भी पता नहीं है।

एनडीए गठबंधन की घटक तेलगु देशम पार्टी काफी क्षुब्ध है, प्र.मंत्री व गृह मंत्री से

मुद्दा है, तेलगु देशम के कोटे से नियुक्त युवा नागरिक उड्डयन मंत्री को भाजपा प्र.मंत्री मोदी व गृह मंत्री द्वारा निहत्था छोड़ देना, इंडिगो एयरलाइन्स के मसले पर

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर। इंडिगो एयरलाइंस संकट को संभालने के तरीके को लेकर तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) और भाजपा के बीच बढ़ती नाराज़गी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में एक नई खलबली पैदा कर दी है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू के करीबी वरिष्ठ नेताओं के अनुसार, उन्हें यह बात बहुत खली है कि भारत के सबसे युवा कैबिनेट मंत्री, केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू को ''अनावश्यक राजनीतिक अपमान'' झेलना पड़ा।

टीडीपी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि व्यापक उड़ान व्यवधानों के कारण पैदा हुए संकट के दौरान राम मोहन नायडू की कड़ी आलोचना से पार्टी हैरान रह गई। एक वरिष्ठ टीडीपी सांसद ने खुलकर कहा कि यह संकट ''हद से ज्यादा एकाधिकार वाली विमानन व्यवस्था'' का नतीजा है, जो कथित तौर पर इंडिगो के पक्ष में है और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तेलगु देशम की शिकायत है कि जब भी कोई भारी संकट का समय प्रस्तुत हुआ है, चाहे पहलगाम का आतंकी हमला हो या बालासोर की भारी ट्रेन दुर्घटना या लाल किले पर आतंकी बम विस्फोट, प्र.मंत्री, गृह मंत्री स्वयं आगे आए हैं, सरकार का पक्ष रखने।
- पर, इस बार इंडिगो एयरलाइन्स के देश व्यापी झमेले में दोनों नेताओं ने एकदम कुछ नहीं बोला।
- तथा सबसे युवा कैबिनेट मंत्री राम मोहन नायडू, जिन्होंने कुछ महीने पहले ही उड्डयन मंत्री की जिम्मेदारी संभाली है, के पक्ष में भाजपा का कोई नेता खड़ा नहीं हुआ और युवा मंत्री को सारी आलोचना व निंदा स्वयं वहन करनी पड़ी।
- अन्ततोगत्वा तेलगु देशम पार्टी के नेता व मु.मंत्री चंद्रबाबू नायडू को स्वयं यह कहना पड़ा, ''जिस गंभीरता, पारदर्शिता से व बिना विचलित हुए युवा उड्डयन मंत्री इस संकट से निपटे वह प्रशंसनीय है।''
- तेलगु देशम व भाजपा के बीच यह भावात्मक दूरी एनडीए सरकार के लिए शुभ समाचार नहीं है।

'टैरिफ का कारण रूसी तेल नहीं, सीज़फायर में ट्रंप की भूमिका को नकारना था'

आरबीआई के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने युनिवर्सिटी ऑफ ज़्यूरिख़ में एक कार्यक्रम के दौरान यह दावा किया

-सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर। एक चौंकाने वाले खुलासे में, रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने दावा किया है कि ट्रंप प्रशासन द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने का कारण मोदी सरकार द्वारा डॉनल्ड ट्रंप के भारत-पाकिस्तान युद्धिवराम में मध्यस्थता के दावे को खारिज करना था, न कि भारत का रूस से तेल आयात करना।

ज़्यूरिख विश्वविद्यालय में बोलते हुए, राजन ने कहा: ''रूस का तेल मुद्दा नहीं था... मुझे लगता है कि मुख्य मुद्दा ज्यादा व्यक्तित्वों से संबंधित था, खासकर वाइट हाउस में एक व्यक्ति से और ट्रंप द्वारा भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष को रोकने का श्रेय लेने के बाद भारत द्वारा की गई कुछ टिप्पणियों को उन्होंने कैसे लिया... इससे सम्बधित था। पाकिस्तान ने इसे सही तरीके से खेला... और कहा कि यह सब ट्रंप की वजह से था।''

पूर्व आरबीआई गवर्नर ने कहा, ''भारत ने यह दलील देने की कोशिश की थी कि दोनों देशों ने ट्रंप के बिना समझौता किया था... सच शायद बीच में कहीं है... लेकिन इसके परिणामस्वरूप भारत को 50 प्रतिशत टैरिफ मिला, और पाकिस्तान को मात्र 19 प्रतिशत। मुझे समझ में आता है कि स्विट्ज़रलैंड में आपके नेता ने ट्रंप को शुल्क के बारे में समझाने की कोशिश की थी, और यह अच्छा नहीं हुआ... तो हम नहीं जानते कि भारत और अमेरिका के बीच वास्तव में क्या हुआ, लेकिन उम्मीद है कि लंबी अवधि में सभी पक्षों पर समझदारी का पालन होगा और हम सभी उचित डील तक पहुंचेंगे।''

अगस्त में, वॉशिंगटन ने भारत द्वारा रुस से तेल खरीदने के नाम पर भारतीय वस्तुओं पर व्यापार शुल्क को 50 प्रतिशत तक दोगुना कर दिया था।

अक्टूबर में, ट्रंप ने दावा किया था कि मोदी ने रूस से तेल खरीदना बंद करने का वचन दिया था।

जब भारत के इस बयान के बारे में पूछा गया कि उसे मोदी और ट्रंप के बीच

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राजन के दावे से एक भारी ऑनलाइन बहस छिड़ गई है। मोदी समर्थकों का कहना है कि भारत सरकार ने ट्रंप के दबाव के बजाय राष्ट्रीय हितों को तवज्जो दी।
- राजन ने कहा कि ट्रंप के दावों पर पाकिस्तान सही खेला, उसने न केवल ट्रंप का दावा स्वीकार किया, बल्कि नोबेल के लिए ट्रंप का नाम भी आगे बढ़ाया।

बैल्जियम से मेहुल चोकसी का प्रत्यार्पण सन्निकट

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर। अधिकारियों ने बताया कि बेल्जियम के सुप्रीम कोर्ट, ''कोर्ट ऑफ कैसेशन'', ने मंगलवार को भगोड़े हीरा व्यापारी मेहुल चोकसी की उस अपील को खारिज कर दिया, जिसमें उसने पंजाब नेशनल बैंक के 13,000 करोड़ रुपये के कथित बैंक घोटाले के मामले में भारत के प्रत्यर्पण अनुरोध को चुनौती दी थी।

चोकसी जनवरी 2018 में,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- 1500 करोड़ रूपए के पीएनबी घोटाले में वांछित भगोड़े मेहुल चोकसी की प्रत्यार्पण के खिलाफ दायर अपील बैल्जियम कोर्ट ने ठुकरा दी।

ट्रंप की प्रशासनिक निर्णय लेने की क्षमता पर पुन: चिंता जताई जाने लगी है

राष्ट्रपति ट्रंप के भतीजे फ्रेड ट्रंप तृतीय द्वारा अपने परिवार के बारे में हाल ही में प्रकाशित पुस्तक से इस चर्चा को और मजबूती मिल रही है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर। वॉशिंगटन में राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के व्यवहार और फैसले लेने के तरीके को लेकर चिंताएँ एक बार फिर से सामने आई हैं। हाल के दिनों में उनके कई अनियमित सार्वजनिक बयानों और उनके ही परिवार के कुछ सदस्यों में बढ़ती बेचैनी ने इस चिंता को हवा दी है। राजनीतिक आलोचक लंबे समय से ट्रंप पर, जल्दबाज़ी में फैसले लेने और बढ़ा-चढ़ाकर बोलने का आरोप लगाते रहे हैं, लेकिन हाल की घटनाओं ने इस बात पर व्यापक बहस छेड़ दी है कि क्या उनका करीबी ग्रुप ऐसे व्यवहार को बढ़ावा दे रहा है, जो उनके दूसरे कार्यकाल में शासन को कमज़ोर कर सकता है।

ट्रंप के आलोचक उन मौकों की ओर इशारा करते हैं, जब चुनाव प्रचार के दौरान या पद पर रहते हुए उन्होंने गलत साबित हो चुके दावों को दोहराया या फिर बीते और वर्तमान घटनाक्रमों की समय-सीमा को मिलाते हुए बोलते नज़र आए। एक बयान, जिसने काफी ध्यान खींचा, वह था उनका यह दावा कि जैफ्री एपस्टीन फाइलों से जुड़ा विवाद पिछली सरकारों द्वारा गढ़ा गया था, जबकि एपस्टीन की गिरफ्तारी और मृत्यु ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान हुई थी। समर्थक ऐसे बयानों को केवल भाषण शैली का हिस्सा बताते हैं, जबकि आलोचकों के अनुसार यह अस्थिरता का बढ़ता हुआ पैटर्न है।

बेचैनी बढ़ने का एक और कारण है, ट्रंप के भतीजे फ्रेड ट्रंप तृतीय की नई किताब ''ऑल इन द फैमिली: द ट्रंप्स एंड हाउ वी गॉट दिस वे।'' हालांकि किताब में ट्रंप तृतीय राष्ट्रपति का कोई डायगनोसिस नहीं करते हैं, लेकिन वे परिवार में उम्र से जुड़ी मानसिक बीमारियों के लंबे इतिहास पर बात करते हैं और यह भी कहते हैं कि उन्हें अपने चाचा की बातचीत के तरीके में ''बदलाव'' दिखाई दे रहा है। वे याद करते हैं कि उनके दादा फ्रेड ट्रंप सीनियर कई वर्षों तक अल्ज़ाइमर रोग से जूझते रहे, और अन्य रिश्तेदारों का भी ज़िक्र करते हैं, जिनको ऐसी ही परेशानियाँ हुईं। ट्रंप तृतीय के अनुसार, यह बदलाव केवल उम्र का मामला नहीं है, ट्रंप अब तक के सबसे उम्रदराज़ राष्ट्रपति हैं, बल्कि उनके सार्वजनिक संदेशों में बढ़ती अनिश्चितता ज़्यादा चिंता का विषय है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पुस्तक के अनुसार, ट्रंप परिवार में बढ़ती उम्र के साथ परिवार के बुजुर्गों में समझने, याद रखने और सोचने जैसी संज्ञानात्मक क्रियाओं में दिक्कत आने लगती है।
- किताब के अनुसार, लेखक के पितामह फ्रेड ट्रंप सीनियर कई साल तक अलज़ाइमर बीमारी के साथ जिए थे तथा परिवार के कई अन्य वृद्ध इन बीमारियों से ग्रस्त रहे हैं।
- ट्रंप के समर्थक भी अब स्वीकार करते हैं कि ये कमियां अब राष्ट्रपति ट्रंप में नज़र आने लगी हैं। पर, अहम् सवाल है, क्या इससे सरकार के निर्णय भी प्रभावित होने लगे हैं? क्योंकि, ट्रंप अमेरिका के इतिहास में सबसे अधिक उम्र के राष्ट्रपति हैं।

भारत को चावल पर ट्रंप की टैरिफ धमकी की चिंता करने की जरूरत नहीं

ट्रंप की धमकी में कोई दम नहीं है, इसके लिए कुछ अहम दलीलें दी जा सकती हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 दिसंबर। भारत ने 2024 में 170 से अधिक देशों को 20 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक चावल का निर्यात किया। यह दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है, जो भारत के बाद आने वाले चार देशों के कुल निर्यात से भी ज्यादा है। अमेरिका भारत के चावल निर्यात का केवल 3 प्रतिशत ही खरीदता है।

राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की भारत के खिलाफ हालिया धमकी ने एक तरह से हलचल मचा दी है, और अब सभी, किसान से लेकर किराना व्यापारी तक, यह इंतज़ार कर रहे हैं कि क्या यह विवाद चरम तक पहुंचेगा। इस बार, उन्होंने भारत के बासमती चावल पर निशाना साधा और भारत पर, बिना किसी प्रमाण के, सस्ता चावल अमेरिकी बाज़ार में ''डंप करने'' का आरोप लगाया। एक अनौपचारिक टिप्पणी में, राष्ट्रपति ने इसे ''अनुचित'' व्यापार बताते हुए, अपनी आदत के अनुसार, इसे दंडित करने के लिए टैरिफ की धमकी दी।

यह धमकी वाइट हाउस में अमेरिकी किसानों और सांसदों के साथ एक बैठक के दौरान दी गई। दरअसल, यह एक खास किस्म का राजनीतिक ड्रामा है, जिसमें ट्रंप का कोई मुकाबला नहीं है। पाठकों को बता दें कि बैठक में एक नाराज़ किसान ने भारत और अन्य कुछ चावल निर्यातक देशों से सस्ते आयातों की बात कही। ट्रंप ने इस मौके का फायदा उठाया और शिकायत करने वाले किसान को आश्वासन दिया कि वे कार्रवाई करेंगे। उन्होंने बड़बोले अंदाज़ में कहा कि टैरिफ, समस्या का समाधान दो मिनट में कर सकता है।

वर्ष 2025 में, अमेरिका को भारत के चावल निर्यात का मूल्य लगभग 392 मिलियन डॉलर था, जो भारत के कुल चावल निर्यात का लगभग मात्र 3 प्रतिशत था। इसमें से अधिकांश बासमती चावल है, जो लंबे दाने वाला सुगंधित चावल होता है तथा जिसे अमेरिका में रहने वाले भारतीय प्रवासी और फारसी-अरब दुनिया के अप्रवासी बहुत पसंद करते हैं।

अमेरिकी किसान बासमती नहीं उगाते हैं। वे उगा भी नहीं सकते। इसके लिए मिट्टी में विभिन्न तथा अलग किस्म के खनिजों की जरूरत होती है और दाने को पनपने के लिए हिमालय की हवा की आवश्यकता होती है। अमेरिका लंबे और मध्यम लम्बाई वाले चावलों का उत्पादन करता है, जो लुइसियाना, अर्कांसस और कैलिफोर्निया में उगते हैं। इसलिए यह कहना कि भारत अमेरिकी किसानों को बासमती डंप करके नुकसान पहुंचा रहा है, यह कहने के समान होगा कि इटैलियन ऑलिव ऑयल का तेल सोयाबीन बाज़ार को नष्ट कर रहा है। ये एक-दूसरे का विकल्प बिल्कुल नहीं हैं।

व्यापार कानून में ''डंपिंग'' अपमानजनक नहीं है। यह एक तकनीकी निष्कर्ष है। किसी भी देश को यह जांच करनी चाहिए कि निर्यातक अपनी लागत से कम की कीमत पर माल बेच रहा है या नहीं। इसके अलावा, यह साबित भी करना होता है कि इस बिक्री से घरेलू उत्पादकों को नुकसान हो रहा है। इसमें महीनों की कागजी कार्रवाई, सुनवाई और अपीलें शामिल होती हैं। राष्ट्रपति को यह बताने की हिम्मत कौन करे कि चावल जितना सरल है, यह जटिल और लंबी प्रक्रिया नौकरशाही की प्रक्रिया उतनी ही जटिल है, और अगर बिना प्रमाण के शुल्क बढ़ा दिए जाते हैं, तो भारत के पास इस कदम को वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (डब्ल्यूटीओ) में चुनौती देने का विकल्प हमेशा रहेगा, चाहे इन दिनों वह अमेरिका के सामने कितना भी विनम्र एवं आत्मसमर्पित क्यों न हो गया हो। भारत ने पहले भी ऐसा किया है और कई मामलों में जीत हासिल की है।लेकिन ट्रंप, शुल्कों का इस्तेमाल एक जादू की छड़ी की तरह करते हैं। वे इसे घुमाते हैं और उम्मीद करते हैं कि दुनिया डर जाएगी। कानूनी आवश्यकताओं का कोई उल्लेख नहीं, उचित एवं जरूरी प्रक्रिया का कोई उल्लेख नहीं, और इस बात का उल्लेख भी नहीं कि अमेरिका ने कुछ उत्पादों से शुल्क हटा लिए, क्योंकि वे अमेरिकी घरों को भी उतना ही नुकसान पहुंचा रहे थे, जितना विदेशी निर्यातकों को।

यदि अमेरिकी राष्ट्रपति भारतीय चावल पर शुल्क और बढ़ाते हैं, तो इसका प्रभाव असमान होगा। अमेरिकी उपभोक्ताओं के लिए, खासकर उन आप्रवासी परिवारों के लिए, जो रोजाना बासमती का उपयोग करते हैं, कीमत बढ़ेगी। भारतीय से लेकर फारसी रेस्तरां तक, सभी पर दबाव पड़ेगा।

खुदरा विक्रेताओं, जो आयातित सुगंधित चावल पर निर्भर हैं, के पास कम विकल्प होंगे। कुछ खरीदार थाई जैस्मिन चावल खरीदने लगेंगे या अन्य सस्ते ग्रेड्स पर जाएंगे, लेकिन उनका कुल बिल बढ़ेगा। अमेरिकी किसानों के लिए, यह कदम सुरक्षा का अहसास करवा सकता है, लेकिन यह संरचनात्मक समस्याओं का समाधान नहीं करेगा। अमेरिका चावल की घरेलू किस्में बासमती की जगह नहीं ले सकतीं। टैरिफ से उन्हें मदद नहीं मिलेगी। इसलिए अगर कोई लाभ होगा भी, तो वह केवल भावनात्मक होगा, आर्थिक नहीं।

- पहला तर्क यह है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है। निर्यातकों की लिस्ट में भारत के बाद जो चार देश आते हैं, उनका कुल चावल निर्यात भी भारत के निर्यात से कम है, और भारत जितना चावल निर्यात करता है, उसका मात्र तीन प्रतिशत ही अमेरिका को भेजा जाता है।
- दूसरी दलील यह है कि अमेरिका के पास भारत के बासमती चावल का कोई विकल्प नहीं है। अमेरिका में बासमती चावल उगाया नहीं जा सकता है, इस प्रकार अमेरिकन चावल से भारत के बासमती का कोई मुकाबला नहीं है। अमेरिका में रहने वाले भारतीय प्रवासी तथा पर्शियन-अरब प्रवासी बासमती चावल ही पसंद करते हैं।

विचार बिन्दु

हमारी अभिलाषा जीवन रूपी भाप को इन्द्रधनुष के रंग में रंग देती है। –टैगोर

राजस्थान की लुप्त होती कलाएं एवं उनके संरक्षण हेतु उपाय

राजस्थान की रेतीली धरती पर जन्मी लोककलाएं केवल सजावट नहीं, बल्कि इस प्रदेश की सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्तियां हैं। दीवारों पर बने मांडणे हों, फड़ पर अंकित लोकदेवताओं की गाथाएं, कठपुतलियों के माध्यम से कही गई कहानियां हों या कावड़ के पैनलों पर उभरते प्रसंग हर कला में लोकजीवन, आस्था, संघर्ष और आनंद के रंग घुले हैं। इन कलाओं ने सदियों तक गांव–ढाणी के सामान्य जन को कलाकार बना दिया, जहां औपचारिक डिग्री से अधिक महत्व अनुभव, परंपरा और सामूहिक सीख का था।

आज इन्हीं कलाओं पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। आधुनिकीकरण की चकाचौंध, सस्ते मशीनी उत्पादों का बढ़ता दबदबा, युवाओं का पलायन, सरकारी नीतियों का सीमित प्रभाव और बाजार में मध्यस्थों की पकड ने इन लोककला परंपराओं को हाशिये पर पहुँचा दिया है। नागौर के टांकलां क्षेत्र का उदाहरण सामने है, जहां कभी सैकड़ों कारीगर सूत–धागों से दरियों पर लोकनायकों की कहानियां बुनते थे, अब नाममात्र कलाकार बचे हैं। इसी तरह शाहपुरा (भीलवाड़ा) की फड़ चित्रकला, उदयपुर–चित्तौड़ की कठपुतली, मीणा जनजाति की मांडणा, संझी, कावड़, पाने, गोदना जैसी अनेक विधाएं अब विरले घरों और कुछ संस्थागत प्रयासों तक सीमित रह गई हैं।

फड़ चित्रकला को कभी चलता–फिरता देवालय कहा गया। शाहपुरा की भूमि पर विकसित यह कला बड़े कपड़े पर पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी जैसे लोकदेवताओं की गाथाएं उकेरती है। रात को भोपा–भोपियाँ रावणहाथा की धुन पर इन फड़ों का वाचन करते, जिससे कथा, संगीत और चित्रकला का अद्वितीय संगम बनता। लेकिन धीरे–धीरे भोपा समुदाय के लोग दिहाड़ी मजदूरी या अन्य असंगठित रोजगार की ओर मुड़ गए, जिससे यह परंपरा नियमित अभ्यास और जीविका दोनों स्तर पर कमजोर हुई।

इसी प्रकार कठपुतली कला जो 'कठ' (लकड़ी) और 'पुतली' (गुड़िया) के मेल से लोककथाएं रचती है भाट और नट समुदाय की पहचान रही है। पहले ये कलाकार गांव–गांव भ्रमण कर वीर गाथाएं, सामाजिक संदेश, पुराण प्रसंग और व्यंग्य के माध्यम से जनमानस को शिक्षित और मनोरंजित करते थे। आज वही कला पर्यटन स्थलों या होटलों की छोटी–सी प्रस्तुति तक सिमट गई है, जहां कलाकार अक्सर बिचौलियों पर निर्भर हैं और उन्हें स्थायी सम्मानजनक आय नहीं मिल पाती।

मांडणा कला, जो मिट्टी या गोबर से लीपे हुए आंगन और दीवारों पर चूने व गेरू से बनाई जाती थी, ग्रामीण स्त्रियों की रचनात्मकता की सहज अभिव्यक्ति थी।शुभ कार्य, विवाह, तीज–त्योहार, होली और दीपावली के अवसर पर ये ज्यामितीय आकृतियां, देवी–देवताओं के प्रतीक, पगल्या और चौक घर–आंगन को जीवित बना देते थे। आज पक्के मकानों की सीमेंट–पुती दीवारों और टाइल्स वाले फर्श ने इस कला के नैसर्गिक कैनवास को ही समाप्त कर दिया।

सांझी, जल–सांझी, कावड़, पाने, गोदना, मेहंदी, मिट्टी की कोठियां, बांस–मिट्टी के वील और गोबर के बटेबड़े ये सभी लोककलाएं सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने का हिस्सा थीं। संझी में गांव की कन्याएं श्राद्ध पक्ष में देवी रूपांकन कर सुखी गृहस्थी की प्रार्थना करती थीं। चित्तौड़–क्षेत्र की कावड़ कला में लकड़ी के मंदिरनुमा पैनलों पर राम–कृष्ण कथाएं चित्रित होतीं, जिन्हें धीरे–धीरे खोलते हुए कथा सुनाई जाती थी। शरीर पर गुदवाए जाने वाले गोदने केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि जातीय पहचान और आध्यात्मिक प्रतीक भी थे।

इन कलाओं के क्षरण के कारण बहुआयामी हैं। पहला, औद्योगीकरण और वैश्विक बाजार ने मशीनी उत्पादों को सस्ता और सर्वसुलभ बना दिया, जिससे श्रम–सघन हस्तशिल्प प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गया। दूसरा, शिक्षा और रोजगार के आधुनिक मॉडल ने युवाओं को गांव से शहर की ओर धकेला; संयुक्त परिवार और पीढ़ीगत प्रशिक्षण की परंपरा टूट गई, जिससे कला का 'गुरु–शिष्य' जैसा घरेलू तंत्र कमजोर हुआ। तीसरा, शहरीकरण और निर्माण–शैली ने पारंपरिक कच्चे घरों, मिट्टी–फर्श और चौपाल संस्कृति को बदल दिया, जो मांडणा, थापा, संझी जैसी कलाओं के स्वाभाविक मंच थे।

> **राजस्थान की लोककलाएं जड़ों से जुड़ने का पुल हैं। इनकी रक्षा करके ही समाज अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संवाद को जीवित रख सकता है। यह केवल सरकार या कारीगर की जिम्मेदारी नहीं, हर सजग नागरिक का दायित्व है कि वह जब भी किसी हस्तनिर्मित वस्तु, लोकचित्र या कठपुतली को देखे, उसे सिर्फ 'सामान' न समझे, बल्कि एक जीवंत परंपरा की धड़कन माने और उस धड़कन को थमने से बचाने के लिए अपना छोटा ही सही, पर सार्थक योगदान दे।**

आज विपणन तंत्र में कारीगर सबसे कमजोर कड़ी बनकर रह गया; उत्पाद का अंतिम बाजार मूल्य और कलाकार को मिलने वाली राशि के बीच बड़ी खाई है। पांचवां, सरकारी योजनाओं के बावजूद जागरूकता, प्रशिक्षण और व्यवहारिक क्रियान्वयन की कमी रही। भले ही राजस्थान ने हस्तशिल्प नीति बनाकर कारीगरों के लिए ऋण पर ब्याज वहन, बीमा, डिजाइन केंद्र, हैंडीक्राफ्ट पार्क और संग्रहालय जैसी प्रावधानों की घोषणा की हो, पर ज़मीनी स्तर पर इनका लाभ सीमित कलाकारों तक ही पहुंच पाया है। प्राकृतिक सामग्री–गोबर, मिट्टी, प्राकृतिक रंग, खास किस्म की लकड़ी–तक पहुंच भी पर्यावरणीय और आर्थिक कारणों से कठिन होती जा रही है।

फिर भी स्थिति निराशाजनक होना अनिवार्य नहीं है, बशर्ते संरक्षण के प्रयास बहुस्तरीय और समन्वित हों। राज्य सरकार ने हाल के वर्षों में कुछ हस्तशिल्प उत्पादों को जीआई टैग दिलाया है, जिससे उन्हें विशिष्ट भौगोलिक पहचान और कानूनी सुरक्षा मिलती है। नाथद्वारा की पिछवाई कला, जोधपुरी बंधेज, उदयपुर की कोफ्तगिरी, बीकानेर की उस्ता कला और कशीदाकारी जैसी विधाओं को यह दर्जा मिल चुका है, तथा कुल मिलाकर दर्जनों रजिस्टर उत्पाद अब इस सूची में हैं। यह दिशा सही है, पर इसे अधिक व्यापक बनाकर फड़, कावड़, मांडणा, टांकलां दरी जैसे रूपों तक बढ़ाना होगा।

सरकारी स्तर पर दो मुख्य मोर्चे महत्वपूर्ण है। आजीविका और शिक्षा। आजीविका के लिए आवश्यक है कि कारीगरों को न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसा तंत्र, आसान ऋण, समूह बीमा, कौशल उन्नयन प्रशिक्षण और राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भागीदारी की सहूलियत व्यवस्थित रूप से दी जाए। हस्तशिल्प नीति के तहत प्रस्तावित हैंडीक्राफ्ट डायरेक्टरेट, डिजाइन बैंक, हैंडीक्राफ्ट पार्क और राज्य स्तरीय संग्रहालय जैसे प्रावधान तभी कारगर होंगे, जब कारीगर की सक्रिय भागीदारी और स्थानीय पंचायतों, नगर निकायों तथा सहकारी संस्थाओं का सहयोग सुनिश्चित हो।

शिक्षा के मोर्चे पर आवश्यक है कि लोककलाओं को केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सीमित न रखा जाए, बल्कि पाठ्यक्रम, प्रोजेक्ट वर्क और फील्ड विज़िट का हिस्सा बनाया जाए। स्कूलों में मांडणा, संझी, फड़ वाचन, कठपुतली नाटक आदि पर व्यावहारिक गतिविधियां आयोजित की जा सकती हैं। इससे नई पीढ़ी इन विधाओं को 'पुरानी चीज़' नहीं, बल्कि जीवंत अनुभव के रूप में देखेगी।

पर्यटन और लोककला का समन्वय भी बड़ा अवसर है। विशेषज्ञों के अनुसार 'क्राफ्ट टूरिज़्म ट्रेल्स' विकसित कर पर्यटकों को कारीगरों के गांव, कार्यशालाओं और उत्पादन केंद्रों तक ले जाया जाए, ताकि वे निर्माण प्रक्रिया देख सकें, कलाकारों से संवाद कर सकें और सीधे खरीदारी कर सकें। इससे कारीगर को उचित मूल्य मिलेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। जोधपुर, जयपुर, उदयपुर जैसे शहर पहले से ही 'वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी' जैसी पहचान की दिशा में बढ़ रहे हैं, इन्हें आसपास के कला–ग्रामों से बेहतर ढंग से जोड़ा जा सकता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म लोककलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। ऑनलाइन गैलरी, ई–बाज़ार, शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री, पॉडकास्ट और वर्चुअल प्रदर्शनियों के माध्यम से इन कलाओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाया जा सकता है। फड़ चित्रकला की कहानी को डिजिटल कथा के रूप में, मांडणा को ई–वर्कशॉप के रूप में, कठपुतली को वेब–सीरीज़ या इंटरैक्टिव शो के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

समाधान का एक और अहम आयाम है–महिलाओं और युवाओं की भागीदारी। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से मांडणा, मेहंदी, संझी, कशीदाकारी जैसी कलाओं को माइक्रो–एंटरप्राइज में बदला जा सकता है। युवा डिजाइनर और कलाकार पारंपरिक रूपों को आधुनिक उपयोग होम डेकोर, फैशन, डिजिटल आर्ट से जोड़ सकते हैं, जिससे विरासत और नवाचार का संतुलन बने।

अंततः प्रश्न केवल कलाओं के संरक्षण का नहीं, बल्कि एक सभ्यता की स्मृति बचाने का है। लोककलाएं हमारे गांवों, बस्तियों और जनजातियों के भीतर संचित उस ज्ञान की प्रतीक हैं, जिसे लिखित इतिहास अक्सर दर्ज नहीं कर पाता। यदि इन्हें समय रहते संजोया नहीं गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल संग्रहालयों और शोध–पत्रों में इन्हें खोजेंगी, अपने आसपास के जीवन में नहीं।

राजस्थान की लोककलाएं जड़ों से जुड़ने का पुल हैं। इनकी रक्षा करके ही समाज अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संवाद को जीवित रख सकता है। यह केवल सरकार या कारीगर की जिम्मेदारी नहीं, हर सजग नागरिक का दायित्व है कि वह जब भी किसी हस्तनिर्मित वस्तु, लोकचित्र या कठपुतली को देखे, उसे सिर्फ 'सामान' न समझे, बल्कि एक जीवंत परंपरा की धड़कन माने और उस धड़कन को थमने से बचाने के लिए अपना छोटा ही सही, पर सार्थक योगदान दे।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

गागरोन दुर्ग में इतिहास रचा, 5100 विद्यार्थियों की एकसाथ चित्रकारी से बना विश्व रिकॉर्ड

राज्य सरकार की पंच गौरव योजना के तहत आयोजित हुआ गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव

झालावाड़, (निसं)। विश्व धरोहर स्थल गागरोन दुर्ग बुधवार को साक्षी बना एक अद्वितीय और ऐतिहासिक क्षण का, जब पांच हजार से अधिक विद्यार्थियों ने एक साथ चित्रकारी कर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया। राज्य सरकार की पंच गौरव योजना के तहत आयोजित गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव ने जिले ही नहीं, पूरे प्रदेश में कला और सांस्कृतिक चेतना की नई लहर पैदा कर दी। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में यह रिकॉर्ड दर्ज किया गया।

सुबह से ही ऐतिहासिक दुर्ग परिसर उल्लास, उत्साह और रचनात्मकता से भर उठा। फोर्ट की प्राचीन दीवारों और शांत जलराशि के बीच जब हजारों विद्यार्थियों ने अपनी पेंट ब्रश से रंग बिखेरने शुरू किए तो पूरा वातावरण मानो एक विशाल कैनवास में बदल गया। जिला कलैक्टर अजय सिंह राठौड़ ने इस विश्व स्तरीय उपलब्धि को जिले के लिए अविस्मरणीय क्षण बताया। उन्होंने कहा कि गागरोन दुर्ग सदियों से इतिहास का साक्षी रहा है, लेकिन आज जिस तरह यहां कला का महासागर उमड़ा, वह दुर्लभ है। यह आयोजन सिर्फ एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि हमारे बच्चों की रचनात्मकता, विरासत के प्रति सम्मान और जिले की पहचान को समर्पित है। यह आयोजन न केवल

> ■ **गागरोन दुर्ग सदियों से इतिहास का साक्षी रहा है, लेकिन आज जिस तरह यहां कला का महासागर उमड़ा, वह दुर्लभ है : कलैक्टर**

बच्चों की प्रतिभा का उत्सव बना, बल्कि गागरोन दुर्ग को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कला, संस्कृति और पर्यटन के नए केंद्र के रूप में स्थापित करने वाला साबित होगा।

आयोजन के दौरान रामबुर्ज पर पंचगौरव के तहत चयनित खेल बास्केटबॉल का रोमांचक मैच भी आकर्षण का केंद्र रहा। झालावाड़ गर्ल्स टीम और बॉयज़ टीम के बीच मैच आयोजित किया गया। विशेष बात यह रही कि जिला कलैक्टर अजय सिंह राठौड़ और पुलिस अधीक्षक अमित कुमार ने स्वयं गर्ल्स टीम की ओर से मैदान में उतरकर खेला, जिससे खिलाड़ियों और दर्शकों का उत्साह चरम पर पहुँच गया। गागरोन दुर्ग, संतरा, सागवान, कोटा स्टोन और बास्केटबॉल–जिले के पंच गौरव विषयों पर आधारित स्टॉलों पर लोगों की खूब भीड़ रही। स्टॉलों ने जिले की विशेषताओं, उद्योगों, उद्यानिकी, पर्यटन और लोक विरासत को

गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव के तहत बच्चों ने गागरोन दुर्ग को कैनवास पर उकेरा।

आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया।

सीईओ शंभूदयाल मीणा और एसडीएम अभिषेक चारण के नेतृत्व में सुरक्षा, आवागमन, पेयजल, चिकित्सा, बिजली, व्यवस्था और नियंत्रण का बेहतरीन प्रबंधन किया गया। सभी विभागों ने समन्वय के साथ ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की कि विद्यार्थी और आगंतुक पूरे समय सहज और सुरक्षित रहे। इस दौरान जिला कलैक्टर, पुलिस अधीक्षक सहित जनप्रतिनिधियों द्वारा किले में संतरा व सागवान के पौधों का रोपण किया गया। कलैक्टर ने पिछले 15 दिनों से विशेष रूप से गागरोन दुर्ग में व्यापक स्तर पर सफाई व्यवस्था और झाड़ियों की कटाई के कार्य को करने वाली मनरेगा की महिला श्रमिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने उपस्थित आमजन, विद्यार्थियों, शिक्षकों, स्वयंसेवी संगठनों और सभी विभागों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस विशाल आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर जिला प्रमुख प्रेम बाई दांगी, आरपीएससी के पूर्व अध्यक्ष श्याम सुंदर शर्मा, जिलाध्यक्ष हर्षवर्धन शर्मा, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार, उप वन संरक्षक सागर पंवार, अतिरिक्त जिला कलेक्टर अनुराग भार्गव, जिला परिषद के सीईओ शंभु दयाल मीणा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचंद मीणा, उपखण्ड अधिकारी अभिषेक चारण, उपखण्ड अधिकारी भवानीमंडी श्रद्धा गोमे, झालरापाटन प्रधान भावना झाला सहित विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधि और नागरिक मौजूद रहे।

सर्दी बढ़ने के साथ ही अलवर के सरिस्का में कई देशों के प्रवासी पक्षी पहुंचने लगे

सिलीसेढ़, कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों पर प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं

अलवर, (निसं)। अलवर के सरिस्का में टाइगर के ठिकाने पर शिकारी पक्षी आ पहुंचे हैं। सर्दी की जकड़न बढ़ने के साथ सरिस्का में प्रवासी पक्षियों ने आकर चार चांद लगा दिए हैं। यहां शिकारी पक्षियों का जमावड़ा हो गया है। कई जगहों पर जल भराव वाले स्थानों पर देखे जाने लगे हैं, जिनमें प्रमुख रूप से सिलीसेढ़ , कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों पर दुनिया भर के प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं।

सरिस्का के सीसीएफ संग्राम सिंह ने बताया कि सरिस्का टाइगर रिज़र्व जो स्वस्थ वन पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इन दिनों प्रवासी पक्षियों और शक्तिशाली रैप्टर्स (शिकारी पक्षियों) की आमद से जीवंत

> ■ **बार हेडेड गूज, रड्डी शेलडक, जैकोबिन कोयल, लेसर व्हिसलिंग डक, गार्गनी, कॉमन टील, कॉमन सैंडपाइपर और नॉर्दर्न पिंटेल पक्षी पहुंचने लगे**

हो उठा है। यहां कुल करीब 272 से अधिक पक्षी प्रजातियां हैं, उनमें से करीब 57 प्रवासी प्रजातियां शामिल हैं। सरिस्का अपने सिलीसेढ़, कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों के कारण दुनियाभर के पक्षियों को आकर्षित करता है। इस मौसम में मध्य एशिया से बार हेडेड गूज, मंगोलिया से रड्डी शेलडक, दक्षिण अफ्रीका से जैकोबिन कोयल, चीन और मालदीव से लेसर व्हिसलिंग डक, यूरोप से गार्गनी, साइबेरिया से कॉमन टील, उपोष्णकटिबंधीय यूरोप से कॉमन सैंडपाइपर और यूरोप, कज़ाकिस्तान व तिब्बत से नॉर्दर्न पिंटेल पहुंचने लगे हैं। इसके साथ ही, सरिस्का में 32 प्रजातियों के रैप्टर्स– जिनमें क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल, बोनैलीज़ ईगल, शिकरा और व्हाइट–आइड बजर्ड प्रमुख हैं–भी आसमान में मंडराते देखे जा रहे हैं। नवंबर से फरवरी तक का समय बर्डवॉचिंग के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। इस दौरान सरिस्का प्रकृति व पक्षी प्रेमियों के लिए एक अद्भुत अनुभव प्रदान करता है।

जल भराव वाले स्थानों पर प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं।

टोरड़ा सहकारी समिति में यूरिया के लिए किसानों की भीड़ उमड़ी

सहकारी समिति में दो घंटे में खाली हुई 600 कट्टे यूरिया खाद की गाड़ी

पावटा, (निसं)। फसलों के लिए आवश्यक यूरिया खाद को लेने के लिए बड़ी संख्या में किसान टोरड़ा सहकारी समिति में पहुंचे। सर्दी ने किसानों की परेशानी और बढ़ा दी है।

जानकारी के अनुसार ग्राम टोरडा स्थित सहकारी समिति पर यूरिया खाद लेने के लिए किसानों की सुबह से ही लंबी कतारें लग गई। यूरिया खाद की सीमित आपूर्ति और अत्यधिक मांग के चलते किसानों को घंटों ठंड में खाद के लिए इंतजार करना पड़ा। सुबह से ही लगी किसानों की लंबी कतारें प्रबंधन के लिए चुनौती बन गई।

कृषि अधिकारी जयप्रकाश व सोहनलाल ने बताया कि टोरडा सहकारी समिति में कुल 600 यूरिया के कट्टे उपलब्ध हुए थे, जिन्हें 2 घंटे के अंदर किसानों को वितरित किया गया। वही अभी 2000 कट्टो की और आवश्यकता है। समिति की देखरेख में वितरण प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता के साथ संपन्न हुई। किसानों की संख्या अधिक होने के कारण आपूर्ति के दौरान

ग्राम टोरडा स्थित सहकारी समिति पर यूरिया खाद लेने के लिए किसानों की भीड़ लग गई।

किसानों को थोड़ी परेशानी का सामना करना पडा। वहीं किसानों ने मांग की है कि रबी की फसल को देखते हुए यूरिया की आपूर्ति को बढ़ाया जाए, ताकि उन्हें परेशानियों का सामना न करना पड़े। यूरिया खाद की मांग अधिक होने के कारण वहां आई एक गाड़ी मात्र दो घंटे में खाली हो गई। कई किसानों को खाद नहीं मिल सका और उन्हें मायूस होकर खाली हाथ लौटना पड़ा। आमतौर पर रबी फसलों–गेहूं, सरसों, जौ और चना की बुवाई का समय किसानों के लिए खुशहाली लेकर आता है, लेकिन इस बार हालात इसके विपरीत नजर आ रहे हैं। यूरिया खाद

> ■ **यूरिया खाद की सीमित आपूर्ति और अत्यधिक मांग के चलते किसानों को घंटों ठंड में खाद के लिए इंतजार करना पड़ा**

की भारी किल्लत के चलते किसान वर्ग में हाहाकार मचा हुआ है। किसान यूरिया की तलाश में दुकानों, क्रय–विक्रय सहकारी समितियों और अन्य केंद्रों के चक्कर काटने को मजबूर हैं।

किसानों का कहना है कि यदि मौसम निकलने से पहले यूरिया उपलब्ध नहीं हुआ तो समय पर बुवाई नहीं हो पाएगी, जिससे इस बार की फसल पर सीधा असर पड़ेगा और पूरी खेती खराब होने का खतरा बना रहेगा। ऐसे में किसान सरकार और प्रशासन से शीघ्र पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध कराने की मांग कर रहे हैं, ताकि रबी फसलों की बुवाई समय पर हो सके।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 11 दिसम्बर, 2025

पौष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 3:56 तक, विष्कुम्भ योग दिन 11:40 तक, बव करण दिन 1:57 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–धनु, बुध–वृश्चिक, गुरू–मिथुन, शुक्र–वृश्चिक, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में। आज कालाष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:27 तक, चर 11:02 से 12:20 तक, लाभ–अमृत 12:20 से 2:55 तक, शुभ 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 5:30 तक

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आज खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक–सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में वाद–विवाद हो सकते हैं।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
स्वास्थ्य एवं अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

प्रवासी राजस्थानियों ने प्रतिभा, परिश्रम और उद्यमशीलता से विश्वभर में पहचान बनाई : भजनलाल शर्मा

नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित-भूपेंद्र यादव

जयपुर में प्रवासी राजस्थान दिवस के राज्य स्तरीय समारोह के अंतर्गत सीतापुरा स्थित जेईसीसी में शिक्षा क्षेत्र में अवसर, निवेश और चुनौतियों पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव, सीएम भजनलाल शर्मा आदि मौजूद थे।

जयपुर। प्रवासी राजस्थान दिवस के राज्य स्तरीय समारोह के अंतर्गत सीतापुरा स्थित जेईसीसी में शिक्षा क्षेत्र में अवसर, निवेश और चुनौतियों पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। मुख्यमंत्रीभजनलाल शर्माने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और उद्यमशीलता से विश्वभर में पहचान बनाई है। उन्होंने प्रवासियों से अपील की कि वे अपनी विशेषज्ञता को मातृभूमि के विकास से जोड़ें, ताकि राज्य के युवाओं को वैश्विक स्तर के अवसर सुलभ हो सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 21वीं सदी में ज्ञान ही वास्तविक संपत्ति है और शिक्षा, कौशल, नवाचार तथा अनुसंधान आधुनिक अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख स्तंभ हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार युवाओं के लिएअर्ली

- **शिक्षा, कौशल, नवाचार और अनुसंधान आधुनिक अर्थव्यवस्था के आधार स्तंभ**
- **प्रवासी राजस्थान दिवस में शिक्षा पर विशेष सत्र आयोजित**

कैरियर प्रोग्राम टेकबी,आई-स्टार्ट कार्यक्रम का विस्तार,स्टार्टअप पॉलिसी ,एवी जी सी-एक्सआर पॉलिसी,सेंटर फॉर एडवांस्ड स्किलिंगऔरस्टेट स्किल पॉलिसीजैसे कदम उठाकर नई संभावनाएँ तैयार कर रही है। पिछले दो वर्षों में 71 नए महाविद्यालय और 21 पॉलिटेक्निक कॉलेज खोलकर शिक्षा के बुनियादी ढाँचे को नई ऊर्जा मिली है।

विशेष सत्र की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रीभूपेंद्र यादवने कहा कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा अठाणी रहा है। नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों को 'प्रोडक्ट' नहीं, बल्कि 'पर्सनैलिटी' के रूप में तैयार करने पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।उपमुख्यमंत्रीडॉ. प्रेमचंद बैरवाने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। शिक्षामंत्रीमदन दिलावरने प्रवासी राजस्थानियों और भामाशाहों से शिक्षा में निवेश की अपील करते हुए कहा कि यह देश के भविष्य में निवेश है। उन्होंने विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल लाइब्रेरी और विज्ञान-गणित किट जैसी सुविधाओं के विस्तार की जानकारी दी।सत्र में अतिरिक्त मुख्य सचिव उच्च व तकनीकी शिक्षाकुलदीप रांकाने राजस्थान की उच्च और स्कूल शिक्षा का विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया। पैनल डिस्कशन में एमिटी यूनिवर्सिटी के चांसलरडॉ. असीम चौहान, फिजिक्सवाला के सह-संस्थापकप्रतीक माहेश्वरी, जोधपुर के निदेशकअविनाश कुमार अठावाल, आनंद राठी ग्रुप के चेयरमैनआनंद राठी, पिलानी के प्रो.वी. रामगोपाल रावऔर उदयपुर के निदेशकअशोक बनर्जीने अपने-अपने विचार साझा किए।अंत में स्कूल शिक्षा सचिवकृष्ण कुणालने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मानसून में क्षितठास्त स्कूल भवनों के पुनर्निर्माण के लिए भामाशाहों से सहयोग की अपील की। यह विशेष सत्र प्रवासी राजस्थानियों के अनुभव और राज्य की शिक्षा नीति को जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

हाईकोर्ट परिसर में बम धमाके की लगातार तीसरे दिन भी मिली धमकी

- **सप्ताह की शुरुआत से लेकर रोजाना ऐसी धमकी भरा ईमेल मिल रहा है।**

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट में लगातार तीसरे दिन भी बम विस्फोट करने की धमकी मिली है। इस सप्ताह की शुरुआत से लेकर रोजाना ऐसी धमकी भरा ईमेल मिल रहा है। धमकी की जानकारी मिलने के बाद हाईकोर्ट प्रशासन ने मुकदमों की सुनवाई करीब एक घंटे के लिए टाल दी है। दूसरी ओर बम विस्फोट की धमकी को देखते हुए गुरुवार को हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के होने वाले चुनाव में प्रशासन से अतिरिक्त सुरक्षा बल की मांग की गई है। पूर्व की तरह धमकी की सूचना मिलने के बाद उच्चाधिकारियों को इसकी जानकारी देकर परिसर की जांच की गई। इस दौरान वकीलों और पक्षकारों सहित अन्य सभी को मुख्य परिसर से बाहर कर तलाशी अभियान आरंभ किया गया।

हाईकोर्ट चौकी प्रभारी सुमेर सिंह ने बताया कि बम की सूचना मिलते ही पुलिस के बम निरोधक दस्ते और डॉग स्क्वॉड की ओर से पूरे हाईकोर्ट परिसर के चप्पे-चप्पे की जांच की गई। वहीं हाईकोर्ट के मुख्य परिसर से न्यायिक कर्मचारियों, अधिवक्ताओं व पक्षकारों को बाहर निकाला गया है। मौके पर किसी भी अनहोनी ने निपटने के लिए फायर बिठोड और एंबुलेंस तैनात की गई है।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन जयपुर के पूर्व अध्यक्ष प्रहलाद शर्मा का कहना है कि हाईकोर्ट परिसर में सुरक्षा के माकूल इंतजाम किए गए हैं, लेकिन अब यह गंभीर मुद्दा बन चुका है कि रोजाना कौन यहां बम विस्फोट की धमकी दे रहा है। इसके पीछे किसी खास मुकदमे की सुनवाई टालना है या रोजाना धमकी देकर प्रशासन को इसके प्रति उदासीन कर बाद में कोई बड़ी घटना अंजाम देने की योजना है। शर्मा का कहना है कि हाईकोर्ट बहुत संवेदनशील स्थान है और कई अहम मुद्दों की यहां सुनवाई होती है। ऐसे में जांच एजेंसी को चाहिए की वह तत्काल यह पता लगाए कि आखिर इस तरह की धमकी कौन दे रहा है और इसके पीछे क्या उद्देश्य है।हाईकोर्ट प्रशासन को सबसे पहले गत 31 अक्टूबर को बम विस्फोट की पहली धमकी मिली थी। इसके बाद एक माह की शांति के बाद 5 दिसंबर को दूसरी धमकी मिली। वहीं बीते 8 दिसंबर से रोजाना ही हाईकोर्ट प्रशासन को इस तरह की धमकी मिल रही है।

इसी तरह सेशन कोर्ट को भी अब तक दो बार बम विस्फोट की धमकी मिल चुकी है। हर बार मेल मिलने के बाद मुकदमों की सुनवाई बीच में बंद कर दी जाती है और कोर्ट परिसर खाली करा लिया जाता है। जिससे एक और भय का माहौल पैदा हो गया है, वहीं मुकदमों की सुनवाई भी प्रभावित होती है।

नई राजस्थान पर्यटन नीति एक दूरदर्शी दस्तावेज़ : मुख्यमंत्री

- **राजस्थान सरकार द्वारा बुधवार को प्रवासी दिवस के अवसर पर राज्य की महत्वाकांक्षी नई राजस्थान पर्यटन नीति-2025 को औपचारिक रूप से जारी किया गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सीतापुरा स्थित जेईसीसी परिसर में आयोजित पर्यटन सत्र के दौरान इस नीति का विमोचन किया**

जयपुर। राजस्थान सरकार द्वारा बुधवार को प्रवासी दिवस के अवसर पर राज्य की महत्वाकांक्षी नई राजस्थान पर्यटन नीति-2025 को औपचारिक रूप से जारी किया गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सीतापुरा स्थित जेईसीसी परिसर में आयोजित पर्यटन सत्र के दौरान इस नीति का विमोचन किया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, पर्यटन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, प्रवासी राजस्थानी समुदाय तथा पर्यटन क्षेत्र से जुड़े प्रमुख हितधारक उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि यह नीति राजस्थान के पर्यटन विकास को नई दिशा देने वाला एक दूरदर्शी दस्तावेज़ है, जो राज्य को राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अठाणी स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नई पर्यटन नीति निवेश, नवाचार, रोजगार और सामुदायिक सहभागिता को नई गति देगी। यह नीति विकसित राजस्थान 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री ने सभी विभागों एवं हितधारकों से इस नीति को सफल बनाने के लिए सक्रिय सहयोग का आ ान किया। उन्होंने कहा कि पर्यटन नीति की अनुपालना हेतु एक समर्पित नीति कार्यान्वयन इकाई स्थापित की जाएगी ताकि पर्यटन नीति में उल्लेखित सभी बिंदुओं पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि नई राजस्थान पर्यटन नीति-2025 के जरिए राज्य सरकार का लक्ष्य आगामी वर्षों में राजस्थान को विश्वस्तर पर प्रतिस्पर्धी, सुरक्षित और पर्यटक-अनुकूल राज्य के रूप में स्थापित करना है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि राजस्थान की संस्कृति, विरासत, कला और प्राकृतिक विविधता को नए युग की पर्यटन आवश्यकताओं से जोड़कर विश्वस्तरीय अनुभव देना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह नीति पर्यटन विकास को नयी गति और दिशा देगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि नई नीति राजस्थान को भारत का सबसे मजबूत, आधुनिक और आकर्षक पर्यटन राज्य बनाने का संकल्प है। उन्होंने कहा कि सरकार चाहती है कि हर पर्यटक राजस्थान की संस्कृति, मेहमाननवाज़ी और विविधता भरे अनुभवों से समृद्ध होकर लौटे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि यह नीति राज्य में पर्यटन के विस्तार, रोजगार सृजन, डिजिटल सुविधा, धार्मिक-सांस्कृतिक सर्किट, एस्ट्रो-टूरिज्म, एडवेंचर और वेलनेस टूरिज्म जैसे नए क्षेत्रों को गति देने वाला व्यापक रोडमैप साबित होगी।

नई नीति के तहत राज्य सरकार ने पर्यटन ढांचे को पूर्णतया आधुनिक, सुरक्षित, निवेश-अनुकूल और तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। यह नीति सिर्फ एक नीतिगत डॉक्यूमेंट ही नहीं बल्कि यह हमारे राज्य को एक वैश्विक पर्यटन महाशक्ति में बदलने का हमारा रोडमैप है। उन्होंने कहा कि हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है की पर्यटन के आधारभूत ढांचे को सुदृढ करने के लिए पर्यटन के सभी आयामों जैसे पर्यटक सुविधाओं, मार्केटिंग एवं प्रमोशन, मेले एवं त्योहार, पर्यटन निवेश, पर्यटन में आईटी, डिजिटल एवं एआई, कौशल विकास, युवाओं को पर्यटन क्षेत्र में रोजगार आदि पर लक्ष्य निर्धारित कर कार्य किया जाएगा।राज्य सरकार ने पर्यटन परियोजनाओं को तेजी से गति देने के लिए पीपीपी मॉडल और इज ऑफ डूइंग बिजनेस को केंद्र में रखा है। सभी अनुमतियों के लिए सिंगल वेब पोर्टल, पर्यटन व्यवसायों की ठोडिंग और गतिविधि निगरानी के लिए एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किया जाएगा। पर्यटन व्यवसायियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष राजस्थान पर्यटन पुरस्कार दिए जाएंगे। छात्रों को पर्यटन कोर्स व कौशल कार्यक्रमों के लिए स्कॉलरशिप, तथा पर्यटन उद्यमों को ट्रेनिंग-स्किल इंसेंटिव उपलब्ध कराया जाएगा।

चुनिंदा जिलों में स्पेशल टूरिज्म जोन (एसटीजेड) प्लग-एंड-प्ले मॉडल पर स्थापित किए जाएंगे, जहाँ आधारभूत संरचना सरकार और आतिथ्य सेवाएँ निजी क्षेत्र विकसित करेगा।कृष्ण गमन पथ और बृज-द्वारका तीर्थ मार्ग के तहत राजस्थान के प्रमुख मंदिरों में यात्री सुविधाएँ बढ़ाई जाएँगी।

वन विभाग और देवस्थान विभाग के सहयोग से धार्मिक और वन्यजीव-आधारित टूरिज्म हब भी विकसित किए जाएंगे।सरकार ऐतिहासिक स्मारकों का थ्रीडी लेजर स्कैन, वीआऱ अनुभव, डिजिटल संठाहालय और लाइट-एंड-साउंड शो विकसित करेगी। नई पर्यटन फ़िल्में, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर सहयोग और डिजिटल प्रचार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। पर्यटकों को बेहतर डिजिटल सुविधा देने के लिए नया राजस्थान पर्यटन वेब पोर्टल, मोबाइल ऐप, चैटबॉट, डिजिटल मैप व गाइडबुक लॉन्च किए जाएंगे।

प्रत्येक जिले में कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला पर्यटन विकास समिति (डीटीडीसी) द्वारा पर्यटन स्थलों के संचालन और प्रबंधन के लिए डेस्टिनेशन मैनेजमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीएमओ) के रूप में भी कार्य किया जाएगा।

पीक सीजन में समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए ये समितियाँ नियमित बैठकें आयोजित करेंगी।

राज्य के प्रमुख पर्यटन शहरों में हॉप ऑन-हॉप ऑफ बस सेवा, एयरपोर्ट-रेलवे-बस स्टैंड पर प्रीपेड टैक्सी बूथ, ई-सेगवे, रेंटल साइकिल और गाइडेड ई-वाहन सेवाएँ शुरू की जाएँगी। पर्यटकों को सभी परिवहन साधनों में एकीकृत सुविधा देने के लिए राजस्थान ट्रैवल कार्ड भी लाया जाएगा।

इस अवसर पर श्री झाबर सिंह खर्रा, राज्य मंत्री (नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन), श्री जोराराम कुमावत, मंत्री (पशुपालन, डेयरी, गोपालन एवं देवस्थान), श्रीमती मुग्धा सिन्हा, एमडी आईटीडीसी, श्री प्रवीन गुप्ता, अतिरिक्त मुख्य सचिव (पर्यटन), श्रीमती रुक्मणी रियार, पर्यटन आयुक्त तथा देश-विदेश से जुड़े अनेक पर्यटन उद्यमी, विशेषज्ञ एवं प्रवासी राजस्थानी प्रतिनिधि उपस्थित थे ।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया में युवा सहभागिता आवश्यक : राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह

मतदान का अधिकार: जनतंत्र का आधार गोष्ठी में वक्ताओं ने विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ बढ़ाने पर जोर दिया

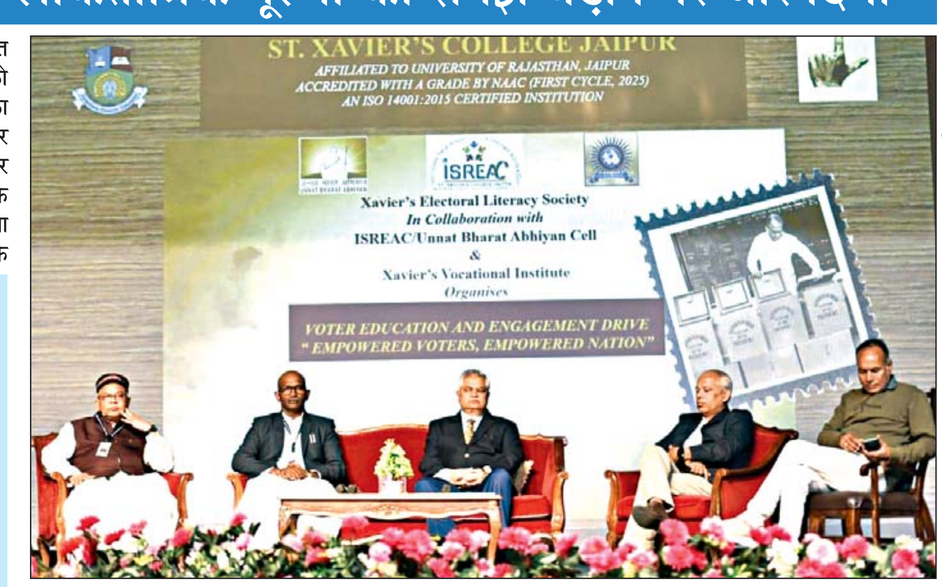

जयपुर में आयोजित संगोष्ठी में राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह सहित अन्य मौजूद रहे।

जयपुर। राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह ने कहा कि युवाओं को लोकतांत्रिक व्यवस्था और प्रक्रिया का आलोचनात्मक अध्ययन और मूल्यांकन कर इसमें सहभागी बनकर सक्रिय योगदान करना चाहिए ताकि भारतीय लोकतंत्र के स्वातंत्र्य, समता और बंधुत्व के संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप राष्ट्र के सर्वतोमुखी एवं सर्वसहभागी विकास के महान स्वप्न को साकार किया जा सके।

- **कार्यक्रम में राजेश्वर सिंह ने संबोधन में विद्यार्थियों को विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं, तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम के अध्ययन एवं अनुशीलन में प्रवृत्त होने तथा अपनी बुनियादी समझ विकसित करने हेतु प्रेरित किया**

राजेश्वर सिंह ने बुधवार को सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज, जयपुर की ज़ेवियर्स इलेक्टोरल लिटरेसी सोसायटी, उन्नत भारत अभियान एवं जेवियर्स वोकेशनल इइंस्टीटयूट द्वारा आयोजित मतदान का अधिकार: जनतंत्र का आधार विषयक युवा गोष्ठी में ये बात कही।

कार्यक्रम में राजेश्वर सिंह ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में विद्यार्थियों को विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं, विकास संबंधी मुद्दों तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम के आलोचनात्मक अध्ययन एवं अनुशीलन में प्रवृत्त होने तथा अपनी बुनियादी समझ विकसित करने हेतु प्रेरित किया ताकि वे शिक्षित, सक्षम एवं सुयोग्य जनप्रतिनिधि व दूरदृष्टि संपन्न, क्रियाशील एवं विकासोन्मुखी सरकार का चुनाव कर सकें। उन्होंने कहा कि इसके लिए उन्हें विभिन्न राजनीतिक दलों की नीति , सिद्वान्त, कार्यक्रम, कार्ययोजना एवं कार्यप्रणाली का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना चाहिए ।

उन्हें प्रत्याशियों के व्यक्तिगत व्यवहार, आचरण, जनप्रतिबद्वता, जनसमस्याओं की समझ, तथ्यात्मक एवं तार्किक प्रस्तुतीकरण की क्षमता, शैक्षिणक पृष्ठभूमि तथा आपराधिक अतीत न होने पर भी ध्यान देना चाहिए। कार्यक्रम में वक्ता के रूप में प्रो. सुधीर सोनी ने वोटर रजिस्ट्रेशन ऐप के बारे में बताया कि यह ऐप युवा मतदाताओं के लिए पंजीकरण प्रक्रिया को सरल, सुलभ और प्रभावी बनाता है।

इसके बाद विद्यार्थियों ने मतदाता शपथ ली जिसमें लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने और निभाने का संकल्प व्यक्त किया गया। इस सत्र में विद्यार्थियों ने लोकतंत्र और चुनाव प्रक्रिया से जुड़े प्रश्न पूछकर अपनी समझ को और गहरा किया। सेंट जेवियर कॉलेज के प्राचार्य ने अतिथियों को सम्मान चिन्ह देकर धन्यवाद ज्ञापन किया ।

राजस्थान बन रहा है निवेश स्थान : केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

प्रवासी राजस्थानियों की हर समस्या का समाधान राज्य सरकार की जिम्मेदारी

- **प्रवासी भाई-बहन भामाशाह के रूप में विकास में सहयोग के लिए आएं आगे- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा**
- **एनआरआर पॉलिसी-2025 तथा राजस्थान डेवलपमेंट सपोर्ट पोर्टल का भी शुभारंभ**
- **प्रवासी राजस्थानियों से प्रदेश के दीर्घकालिक विकास में योगदान देने का किया आव्हान**

जयपुर। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि उद्योग स्थापना के लिए भूमि, ऊर्जा, जल, रॉ मेटेरियल तथा शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित वातावरण पांच अनिवार्य आधार स्तंभ हैं और सभी आयामों पर मजबूत स्थिति राजस्थान को निवेश स्थान के रूप में विकसित कर रही है। उन्होंने कहा कि किफायती एवं पर्याप्त भूमि उपलब्धता, अक्षय ऊर्जा उत्पादन में राष्ट्रीय नेतृत्व, जलापूर्ति संरचना के सुदृढ़ीकरण, सुरक्षित वातावरण तथा मजबूत सड़क एवं परिवहन तंत्र के कारण राजस्थान निकट भविष्य में देश का सबसे आकर्षक निवेश गंतव्य बनकर उभर रहा है।

गजेन्द्र सिंह बुधवार को प्रवासी राजस्थानी दिवस के अवसर पर आयोजित आगामी एक वर्ष में राजस्थान चैप्टर्स द्वारा प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में योगदान की संभावनाओं के संबंध में आयोजित सेक्टोरल सेशन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि राजस्थान किफायती भूमि उपलब्धता के मामले में अन्य राज्यों की तुलना में निवेशकों के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति प्रस्तुत करता है। ऊर्जा क्षेत्र में राज्य लगातार प्रगति कर रहा है और अक्षय व पवन ऊर्जा में देश में पहले स्थान पर है। इससे उद्योगों को पर्याप्त ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित हो रही है।

उन्होंने कहा कि जल उपलब्धता को लेकर राज्य सरकार द्वारा राम जलसेतु लिंक परियोजना, यमुना जल समझौता जैसी परियोजनाएं तेज गति से संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से राजस्थान में भविष्य में जल संकट की संभावना नगण्य रहेगी। उन्होंने राज्य की शांतिपूर्ण सामाजिक संरचना, मजबूत कानून-व्यवस्था, उत्कृष्ट सड़क नेटवर्क तथा निरंतर विस्तार हो रहे औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर को प्रदेश की प्रमुख ताकत बताते हुए कहा कि ये सभी मिलकर निवेशकों को सुरक्षित, स्थाई और भरोसेमंद वातावरण प्रदान करते हैं। श्री शेखावत ने विकसित राजस्थान 2047 के विजन में देश-विदेश में बसे प्रवासी राजस्थानियों से प्रदेश के दीर्घकालिक विकास में योगदान देने का आ ान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के पर्यटन, संस्कृति, लोकपर्व, हस्तशिल्प, धार्मिक आयोजन और ऐतिहासिक धरोहरों में निवेश एवं नवाचार की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने प्रवासी राजस्थानियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने राजस्थान की संस्कृति, परंपराओं और लोकपर्वों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में भारत के दूत की भूमिका निभाई है। उन्होंने दीपावली पर्व को यूनेस्को की अमृत विरासत सूची में शामिल किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे देश की सांस्कृतिक पहचान के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रवासी राजस्थानी दिवस हमारी साझी विरासत का उत्सव होने के साथ-साथ विचारों के आदान-प्रदान एवं अनुभव साझा करने तथा राजस्थान के भविष्य को और मजबूत बनाने के लिए संवाद का एक खुला मंच है।

उन्होंने आश्वस्त किया कि प्रवासी राजस्थानियों की हर समस्या का समाधान राज्य सरकार की जिम्मेदारी है।शर्मा ने कहा कि हमने प्रवासी समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए 'राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रवासी राजस्थानी मामले विभाग' का गठन किया है। सभी जिलों में प्रवासियों के सहयोग के लिए अधिकारियों को नोडल बनाया गया है। साथ ही, राज्य सरकार ने एनआरआर के लिए एक डैशबोर्ड का निर्माण किया है।

जिसमें प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के गैप एरियाज को चिन्हित किया गया है, ताकि प्रवासी राजस्थानी अपनी मातृभूमि के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। उन्होंने आ ान किया कि प्रवासी भाई-बहन सभी क्षेत्रों में भामाशाह के रूप में सहयोग के लिए आगे आए। इस कार्य में भी राज्य सरकार उनका पूरा सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि राज्य में भूमि आवंटन की प्रक्रिया को तेज एवं सरल बनाया गया है और सरकार प्रवासी राजस्थानियों को विकास का भागीदार मानते हुए उनके साथ मिलकर विकसित राजस्थान के लक्ष्य की दिशा में कार्य कर रही है।विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार समठा विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक ने कहा कि राज्य सरकार राज्य की हवाई पट्टियों के विकास एवं विस्तार पर निरंतर कार्य कर रही है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश में नई फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूलों की स्थापना की जा रही है, जिससे युवाओं को उड्डयन क्षेत्र में प्रशिक्षण और रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होंगे तथा राजस्थान इस क्षेत्र में आधुनिक और तीव्र गति से आगे बढ़ेगा।

कार्यक्रम के दौरान प्रवासी राजस्थानियों के लिए विशेष एनआरआर पॉलिसी-2025 तथा राजस्थान डेवलपमेंट सपोर्ट पोर्टल का भी शुभारंभ किया गया। इस डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से दुनिया के विभिन्न देशों में बसे प्रवासी राजस्थानियों को राज्य के विकास कार्यों से सीधे जुड़ने का सशक्त माध्यम उपलब्ध हो सकेगा।

इस दौरान सेशन में डोमेस्टिक एवं इंटरनेशनल चैप्टर की पैनल चर्चा में 11-11 पैनलिस्ट ने भाग लिया। डोमेस्टिक में रांची के अजय मारू, मुंबई चैप्टर के गणपत कोठारी, अहमदाबाद के महेंद्र लोढ़ा, पुणे के मंगलचंद चौधरी, हैदराबाद के पवन बंसल, दिल्ली के रामावतार किला, गुवाहाटी के रतन शर्मा, बेंगलुरु से सचिन पांडिया, कोलकाता से संतोष कुमार पुरोहित, कोयंबटूर के संतोष पटवारी, सूरत के श्याम राठी ने हिस्सा लिया।

इसी प्रकार इंटरनेशनल चैप्टर के पैनलिस्ट में दोहा के अभिषेक जैन, लन्दन के अजय कुमार अग्रवाल, दुबई के अमराराम जांगिड़, सिंगापुर के दाऊ दयाल गुप्ता, म्यूनिख से हरगोविंद सिंह राणा, कंपाला के मनीष कल्ला, नेपाल के मोती डूंगर, न्यूयॉर्क के पूर्णिमा बोरिया, नैरोबी के सोनवीर सिंह, टोक्यो के त्रिभुवन खंडेलवाल, रियाद के विजय सोनी ने उपस्थित होकर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री के.के. विश्नोई, अतिरिक्त मुख्य सचिव उद्योग एवं वाणिज्य शिखर अठावाल सहित प्रवासी राजस्थानी, उद्योग जगत के प्रमुख प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने 'प्रगति पथ' प्रदर्शनी का उद्घाटन किया

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने बुधवार को प्रथम प्रवासी राजस्थानी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम स्थल (जेईसीसी) पर 'प्रगति पथ' प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल तथा केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी में प्रदेश के बदलते औद्योगिक परिदृश्य, जल सुरक्षा एवं सततता, एक जिला-एक उत्पाद, स्वस्थ राजस्थान-खुशहाल राजस्थान, शिक्षित भारत-डिजिटल भारत, राजस्थान रिफाइनरी, खनन क्षेत्र, इन्फ्रा एवं कनेक्टिविटी तथा हमारी विरासत-हमारी पहचान की थीम पर पैनल एवं वीडियो प्रदर्शित किए गए।

मुख्यमंत्री शर्मा ने इस प्रदर्शनी में दर्शायी गई प्रदेश की विकास यात्रा की जानकारियों से उन्हें अवगत कराया। इस दौरान केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल एवं भूपेन्द्र यादव ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति की सराहना की।

स्लीपर बस और ट्रक की भीषण भिड़ंत में चार की मौत, 28 यात्री घायल

छह की हालत गंभीर, हादसा जयपुर-बीकानेर नेशनल हाईवे पर फतेहपुर के पास हुआ

सीकर, (निसं)। सीकर में स्लीपर बस और ट्रक की भीषण भिड़ंत में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, घायल बस कंडक्टर ने बुधवार सुबह जयपुर में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हादसे में 28 लोग घायल हो गया, इनमें 6 की हालत अब भी गंभीर है। हादसा जयपुर-बीकानेर नेशनल हाईवे पर मंगलवार देर रात 10:40 बजे फतेहपुर के पास हुआ। बस में सवार सभी यात्री वलसाड (गुजरात) के रहने वाले हैं। ये सभी वैष्णो देवी के दर्शन कर लौट रहे थे और खाटूश्यामजी जा रहे थे। बस में करीब 50 लोग सवार थे।

- **बस में सवार 50 यात्री वलसाड (गुजरात) के रहने वाले हैं, ये सभी वैष्णो देवी के दर्शन कर लौट रहे थे और खाटूश्यामजी जा रहे थे**
- **बस के केबिन और उसके पीछे बैठे पैसेंजर्स सबसे ज्यादा घायल हुए, घायलों के शरीर में कांच-मेटल के टुकड़े घुस गए**

जानकारी के अनुसार स्लीपर बस बीकानेर की ओर से जयपुर जा रही थी। वहीं, ट्रक झुंझुनूं से बीकानेर की ओर जा रहा था। प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि ट्रक आगे से बस में घुस गया। इससे जोरदार धमाका हुआ। बस के केबिन और उसके पीछे बैठे पैसेंजर्स सबसे ज्यादा घायल हुए हैं। घायलों की शरीर में कांच-मेटल के टुकड़े घुस गए।

बस ड्राइवर समेत चार की मौत :-हादसे में बस यात्री मयंक और ड्राइवर कमलेश की मौत हो गई। एक मृतक की पहचान नहीं हुई है। वहीं, कंडक्टर मितेश को सीकर के एसके हॉस्पिटल से गंभीर हालत में जयपुर रेफर किया गया था, जिसकी बुधवार सुबह मौत हो गई।

15 घायल सीकर रेफर हुए थे :-हादसे में ज्यादा घायल अनंत, तुषार पुत्र अर्जुन, राजेश पुत्र ओमप्रकाश, प्रवीण पुत्र बाबू भाई, रंजना पत्नी सुरेश भाई, मुक्ता बेन पुत्री शैतान सिंह, आशीष पुत्र रामलाल है। साथ ही निलेश पुत्र अमित, सुहानी पुत्री अमित, कर्मल बेन, जमवंत पुत्र उदाराम, सुदा बेन पुत्री उत्तम, अर्जुन पुत्र उकल भाई, अमित पुत्र रमन लाल, शीला बेन पत्नी महेश भाई को भी सीकर रेफर किया गया था।

13 घायल फतेहपुर में एडमिट :-एक्सीडेंट में 13 लोगों को हल्की चोट आई है। इनमें महेश भाई, गंगा बेन पत्नी गोविंद भाई, कंचन, साकेत पाल, लादू पुत्र विष्णु, रमीला, रंजीत, अर्जुन, संगीता, परितेश, अतुल, इंदु बेन पत्नी जीवन भाई और एक अन्य हैं।

एंबुलेंस ड्राइवर भीम सिंह ने बताया कि रात करीब 10.30 बजे एक्सीडेंट की जानकारी मिली थी। मौके पर लोग चिल्ला रहे थे। मैंने तुरंत अपने आसपास के क्षेत्र में 108 एंबुलेंस सेवा को मदद के लिए कॉल की। स्थानीय लोगों की मदद से बस में फंसे लोगों को निकालकर फतेहपुर सरकारी हॉस्पिटल लेकर आए।

सड़क हादसे में युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। जिले के ऋषभदेव थाना क्षेत्र हाइवे पर कार की टक्कर से बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई तथा एक युवक घायल हो गया।

- **हाइवे पर कार और बाइक में भीषण टक्कर हो गई थी, एक युवक घायल**

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार सांय ऋषभदेव थाना क्षेत्र उदयपुर अहमदाबाद हाइवे पीपपली गांव हाईवे पर कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार बनोता फला खुणादरी वरदा डूंगरपुर निवासी ईश्वर (24) पुत्र रमण मीणा तथा दिलिप (23) पुत्र शंकर गंभीर घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए एमबी चकित्सालय पहुंचाया जहां ईश्वर को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर हेड कांस्टेबल हंसराज ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। दोनों बाइक पर ऋषभदेव से घर लौट रहे थे। जहां बीच रास्ते में कार ने उन्हें चपेट में ले लिया था।

ट्रांसपोर्ट ऑफिस ब्रांच इंचार्ज की मौत

बूंदी, (निसं)। बुधवार को विकास नगर स्थित एकेटी लॉजिस्टिक ट्रांसपोर्ट कंपनी के ब्रांच इंचार्ज की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई। ऑफिस में कार्यरत स्टाफ ने बताया कि 42 वर्षीय हरियाणा निवासी अमित शर्मा ट्रांसपोर्ट कंपनी में ब्रांच इंचार्ज है, वह आज किसी कार्य से ऑफिस से बाहर निकला और बाइक स्टार्ट कर कुछ दूर चलते ही अचेत होकर गिर गए। ऑफिस में कार्यरत स्टाफ उन्हें जिला अस्पताल लेकर आया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। चिकित्सकों के अनुसार प्रथम दृष्टया में मौत का कारण हृदय गति रुक जाना बताया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही बाकी खुलासा हो पाएगा। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है, परिजनों के आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

Rajasthan State Road Development And Construction Corporation Ltd., JAIPUR

No.NIT/2025-26/29210-24 — **निविदा सूचना /2025-26** — Date:10.12.2025

निम्नलिखित कार्य के लिए केन्द्र/राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों एवं उनके अधिकृत संगठनों में पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदायें आमंत्रित की जाती है-

कार्य का विवरण	कार्य की कुल अनुमानित लागत (रू.)	निविदा सूचना संख्या
Construction of CC Road & Drain work in Bansera & Ganeta Village on Dudu-Chhan BOT Road. UBN: RRC2526WSOB00997	112.75 Lakh	अल्पकालीन ई-552/25-26
Misc. Development work Landscaping and Modular Kitchen work at JJB, Sirohi (TSP) UBN: RRC2526WSOB01000	17.30 Lakh	ई-554/25-26
Construction of CC Road work in Village Boraj on Chomu-Mahla Road. UBN: RRC2526WSOB01003	126.43 Lakh	अल्पकालीन ई-556/25-26
CC Road Construction of Jobner Mod on Jaipur-Jobner-Nagaur Road. UBN: RRC2526WSOB01004	61.98 Lakh	

निविदा से सम्बन्धित प्रपत्र में निविदा शुल्क, धरोहर राशि, डाउनलोड करने व खोलने की तारीख सहित सम्पूर्ण विवरण एवं संशोधन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.nic.in तथा http://pwd.rajasthan.gov.in/rsrdc पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। महाप्रबंधक

कार्यालय नगरपालिका मण्डल अकलेरा

क्रमांकः न०पा०अ०/निर्माण/2025/1925 — दिनांकः 04.12.2025

निविदा सूचना 08/2025-26

नगरपालिका अकलेरा में उपर्युक्त श्रैणी के पंजीकृत संवेदको एवं अन्य विभिन्न अभियांत्रिक विभागों के सम्बन्धित श्रैणी में "A", "AA" श्रैणी के पंजीकृत संवेदकों से दिनांक 19.12.2025 को प्रातः 11:00 बजे तक मोहरबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र एवं शर्तों आदि का विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त किये जा सकेंगे।

NIB Code: DLB2526A8912

UBN No: DLB2526WSOB26669, DLB2526WSOB26670, DLB2526WSOB26671, DLB2526WSOB26672, DLB2526WSOB26673, DLB2526WSOB26674, DLB2526WSOB26675

राज.संवाद/सी/25/15514 — अधिशाषी अधिकारी

बूंदी : ओवरटेक के चक्कर में रोडवेज बस ट्रक से टकराई, आधा दर्जन यात्री घायल

बूंदी, (निसं)। बुधवार को लाखेरी से बूंदी आ रही रोडवेज बस रायथल थाना क्षेत्र में खटकड़ के पास एक ट्रक से टकरा कर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसे में आधा दर्जन यात्री घायल हो गये।

- **सामने से एक ट्रैक्टर-ट्रॉली आ गई, उसे बचाने के चक्कर में बस ट्रक से टकरा गई**
- **ग्रामीणों का कहना है कि बस को जो चालक चला रहा था वह बस चालक नहीं था, वह संविदा पर लगा हुआ है**

रोडवेज बस में सवार लोगो का कहना है कि चालक द्वारा ट्रक को ओवरटेक करने का प्रयास किया जा रहा था। ट्रक बस के आगे चल रहा था जब ड्राइवर ओवरटेक करने लगा तो सामने से एक ट्रैक्टर ट्राली आ गई, उसे बचाने के चक्कर में बस ट्रक से टकरा गई। दुर्घटना में आधा दर्जन सवारियां घायल हुई।

सड़क हादसे की सूचना मिलने पर रायथल थाना अधिकारी हरलाल मीणा मौके पर पहुंचे और घायलो को खटकड चिकित्सालय पहुंचाया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद कुछ घायलों को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

ग्रामीणों का कहना है कि बस को जो चालक चला रहा था वह बस चालक नहीं था, वह संविदा पर लगा हुआ है। घटना के बाद बस चालक भी मौके पर पहुंच गया और अपने आप को ऐसे जताने लगा कि वह स्वयं बस चल रहा था। वहां मौजूद लोगों ने इसका विरोध किया तो वह वहां से फरार हो गया। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई।

हादसे के बाद मौके पर लोगों की भारी भीड़ लग गई।

सड़क हादसे में वृद्ध की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के सूरजपोल थाना क्षेत्र में ट्रक की टक्कर से स्कूटी सवार वृद्ध की मौत हो गई।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार सूरजपोल थाना क्षेत्र आर्मी गेट के सामने मंगलवार सांय ट्रक ने स्कूटी को चपेट में ले लिया। हादसे में गंभीर घायल स्कूटी सवार बालाजी नगर गोवर्धन विलास निवासी धरीजसिंह (68) पुत्र भगवानसिंह गंभीर घायल हो गया, जिसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस पर हेडकांस्टेबल तखतसिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। धीरजसिंह थेला चलाता था सांय वह स्कूटी पर शहर से घर लौट रहा था। जहां बीच रास्ते हादसा हो गया।

कार्यालय नगर पालिका मण्डल केशवराय पाटन जिला - बून्दी (राज0)

npalika3@gmail.com ph.no. 07438-264346

क्रमांक :- न0पा0के0पा0/2025-26/3468-70 — दिनांक :- 05.12.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 1, 2/2025-26

नगर पालिका के0पाटन द्वारा नगर पालिका केशवराय पाटन में वित्तिय वर्ष 2025-26 के लिए श्रमिक/मैनपावर आपूर्ति हेतु वार्षिक अनुबंध करने हेतु द्विलिफाफा पद्धति/ई-निविदा पद्वति से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती हैं। कार्य की निविदा बेचे जाने की दिनांक 05.12.2025 समय प्रातः 10.00 बजें से तथा अपलोड़ करने की दिनांक 15.12.2025 सायं 6.00 बजे तक निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

Sr.No.	UBN No.	Tender cost (in lac)
1	DLB2526SLOB26480	25.00
2	DLB2526SLOB26484	25.00
	Total	50.00

राज.संवाद/सी/25/15512 — अध्यक्ष — अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगरपालिका मण्डल झालरापाटन

क्रमांकः न०पा०झा0पा0/निर्माण/2025/3107 — दिनांकः 04.12.2025

निविदा सूचना 07/2025-26

नगरपालिका झालरापाटन में उपर्युक्त श्रैणी के पंजीकृत संवेदको एवं अन्य विभिन्न अभियांत्रिक विभागों के सम्बन्धित श्रैणी में "A", "AA" श्रैणी के पंजीकृत संवेदकों से दिनांक 18.12.2025 को प्रातः 11:00 बजे तक ऑन लाईन प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाये आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र एवं शर्तो आदि का विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त किये जा सकेंगे।

NIB Code: DLB2526A8896

UBN No: DLB2526WSOB26595, DLB2526WSOB26596, DLB2526WSOB26597, DLB2526WSOB26598, DLB2526WSOB26601, DLB2526WSOB26604, DLB2526WSOB26606, DLB2526WSOB26609, DLB2526WSOB26612, DLB2526WSOB26613, DLB2526WSOB26615, DLB2526WSOB26617, DLB2526WSOB26621, DLB2526GLOB26623

अध्यक्ष नगरपालिका झालरापाटन — अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका झालरापाटन

राज.संवाद/सी/25/15489

हमला करने के मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाना पुलिस ने राह चलते व्यक्ति पर धारदार हथियार से मारपीट करने वाले 3 माह से फरार एक आरोपी को पकड़ा है। पुलिस आरोपी से पूछताछ करने में जुटी है।

जिला पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड़ देवेंद्र विश्नोई ने बताया कि विराटनगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 30 अगस्त 2025 को गोविंद गुप्ता पुत्र सीताराम गुप्ता निवासी भामोद अपने घर से भाई की दुकान पर जा रहा था। रास्ते में रोहिताश प्रजापत उर्फ छंगा पुत्र कन्हैयालाल कुम्हार उम्र 32 साल निवासी भामोद ने गोविंद के साथ गाली-गलौच करते हुए धारदार हथियार से मारपीट की, जिस पर विराटनगर पुलिस थाने में मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ करते हुए विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा अभियुक्त की गहनता से तलाशी करते हुए लगातार उसका पीछा करते हुए फरार चल रहे रोहिताश प्रजापत उर्फ छंगा पुत्र कन्हैयालाल कुम्हार निवासी भामोद को गिरफ्तार किया।

नकबजन गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। वल्लभनगर थाना क्षेत्र में स्थित मंदिर में हुई नकबजनी की वारदात का पुलिस ने खुलासा करते हुए इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार सोहनलाल पुत्र हीरा निवासी डागीखेड़ा ढुढीया वल्लभनगर ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि गांव में श्रीचामुण्डा माताजी का मंदिर है। दस वर्ष से मैं मंदिर के सेवा पूजा कर रहा हूं। 5 दिसंबर रात में आए चोर मंदिर में घुस कर दानपेटी का ताला तोड़ नकदी व माताजी की छोटी नथ चुरा ले गए। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर गठित दल ने आरोपी प्रकाश पुत्र भगवतीलाल निवासी तालाब टुस डांगीया डबोक को गिरफ्तार किया।

बीकानेर में इस सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा

बीकानेर, (निसं)। पिछले चौबीस में न्यूनतम तापमान में ज्यादा गिरावट नहीं होने से कड़ाके की सर्दी तो नहीं रही, लेकिन लूणकरणसर में पारा महज 4.8 पर आ गया है। ऐसे में शहर के बजाय गांवों में सर्दी ज्यादा है। दिसम्बर के पहले सप्ताह के बाद अब दूसरे सप्ताह में सर्दी का असर कम है। शहर में तो न्यूनतम पारा 10.5 डिग्री सेल्सियस तक आ गया है। पिछले चौबीस घंटे में बीकानेर में अधिकतम तापमान 29.6 डिग्री सेल्सियस रहा और शहर में 10.5 डिग्री सेल्सियस रहा। अधिकतम तापमान सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस ज्यादा चल रहा है। पिछले एक सप्ताह में बीकानेर में दिन का तापमान सामान्यतः 24 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा जबकि रात और सवेरे का न्यूनतम लगभग 10 डिग्री से से 13 डिग्री से. के दायरे में रहा। कुल मिलाकर सप्ताह भर ठंड बहुत ज़्यादा नहीं पड़ी, पर रातें ठंडी रही।

इस दिसंबर सीजन में जिले के कुछ हिस्सों में ज्यादा ठंड देखी गई। लूणकरणसर में 1 दिसंबर को न्यूनतम 5.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो इस सीजन के सबसे कम माना जा रहा है। आने वाले पांच दिनों में भी बीकानेर में कड़ाके की ठंड का अनुमान नहीं है अधिकतम तापमान जहां पच्चीस डिग्री सेल्सियस तक लुढक सकता है। संभावना जताई जा रही है बीकानेर शहर में न्यूनतम तापमान दस डिग्री सेल्सियस से अधिक ही रहेगा।

कार्यालय अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, संभाग प्रथम जोधपुर

क्रमांक-13602 — दिनांक-05.12.2025

निविदा सूचना संख्या-30 वर्ष 2025-26

NIB NO. PWD2526A4614

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जालोर एवं सिरोही जिलों में विभिन्न निर्माण कार्यो हेतु कन्सलटेन्सी कार्यो के लिए डीपीआर तैयार करने हेतु अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में तीन कार्यो के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। कार्यवार यू.बी.एन. संख्या निम्नानुसार है।

1. PWD2526SLOB18335 2. PWD2526SLOB18336 3. PWD2526SLOB18337

(नेमी चन्द शर्मा) अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता, सा.नि.वि. संभाग प्रथम, जोधपुर

DIPR/C/18153/2025

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

निविदा सूचना

विश्वविद्यालय में श्रम सेवा आपूर्ति हेतु निविदा जारी की गयी हैं, जिसका यूबीएन GSU2526GLRC00050 हैं। निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी http://sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/25/15446 — वित्त नियंत्रक

कार्यालय नगरपालिका मण्डल जोबनेर, जिला-जयपुर

क्रमांक/न.पा.जो./2025-26 /2611 — दिनांक 04.12.2025

निविदा सूचना

उपयुक्त श्रेणी कि सभी पंजीकृत ठेकेदारों को सुचित किया जाता है कि नगर पालिका जोबनेर द्वारा कुल 2 कार्यो की आमंत्रित निविदा सम्बंधित शर्ते व अन्य विवरण वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in and eprocrajasthan से एंव कार्य दिवस में कार्यालय समय में पालिका कार्यालय से देखा व प्राप्त किया जा सकता है। निविदा कार्यो के युबीएन नम्बर निम्न प्रकार है :- 1. DLB2526WSOB26393, DLB2526WSOB26403

राज.संवाद/सी/25/15499 — अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगरपालिका मण्डल राजलदेसर जिला चूरू (राज.)

Email-raj.churu.bika@gmail.com Phone number 01567-294504

क्रमांकः- न.पा.रा./2025-26/10427 — दिनांकः- 04.12.2025

Notice Inviting Bid

Bid for 12 Work is invited from interested bidders upto 15.12-2025, 01.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) (www.eproc.rjasthan.gov.in)

NIB Code – DLB2526A8759

UBN Code – (DLB2526WSRC26266), (DLB2526WSRC26269), (DLB2526WSRC26270), (DLB2526WSRC26274), (DLB2526WSRC26275), (DLB2526WSRC26277), (DLB2526WSRC26278), (DLB2526WSRC26279), (DLB2526WSRC26281), (DLB2526WSRC26282), (DLB2526WSRC26285), (DLB2526WSRC26286)

राज.संवाद/सी/25/15494 — अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगर निगम जयपुर

हवामहल के पीछे, पुराना पुलिस मुख्यालय, बडी चौपड, जयपुर

क्रमांक :- जसअ/2025/324 — दिनांकः 04.12.2025

ई-निविदा सूचना क्रमांक :- 20-21/2025-26

नगर निगम के कार्यो हेतु पंजीकृत फर्म्स से ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र, विस्तृत सूचना एवं शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाइट www.jaipurmc.org, www.sppp.raj.nic.in and www.eproc.rajasthan.gov.in पर स्टेट पब्लिक प्रोक्यूरमेन्ट के UBN No. JMC2526WSOB02126 to JMC2526WSOB02127 देखी जा सकती है।

उपायुक्त (गैराज) नगर निगम जयपुर

राज.संवाद/सी/25/15400

Office of The Executive Engineer, Watershed Development & Soil Conservation, Raniwara

E-Mail ID- piawcdc.raniwada@rajasthan.gov.in

File No. ()/MJSA-2/P-1/2025-26/167 — Date: 04.12.2025

NOTICE INVITING BID

NIB NO. 01 YEAR 2025-26

Bids for MJSA 2.0 Phase I NRM works (Rooftop Tanka and Tanka may agore) of estimated value INR 17.10 Lacs are invited from interested bidders up to 3.00 PM 15.12.2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in) of the state and department website (https://water.rajasthan.gov.in/wdsc). UBN - WSC2526WSRC01979, NIB-WSC2526A1127

(Ankit Kumar) Executive Engineer Watershed Development & Soil Conservation, Raniwara (Jalore)

DIPR/C/18118/2025

छप्पर में आग लगने से दो बालिकाएं जिंदा जली

बौंली/बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के मलारना डूंगर थाना अंतर्गत पीपलवाड़ा गांव में मंगलवार को देर रात्रि में विद्युत शार्ट सर्किट से छप्पर में भीषण आग लग गई, आग लगने से दो बालिकाएं जिंदा जल गई। वहीं 15 मवेशी झुलस गए।

मलारना डूंगर थाना प्रभारी राजेश कुमार मीणा ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि छप्पर में आग लगने से प्रिया नायक (14) व पूजा नायक (8) की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार मलारना डूंगर थाना अंतर्गत पीपलवाड़ा गांव का निवासी रमेश नायक देवनारायण भगवान के फड पढ़ने का काम करता है। वह अपनी पत्नी के साथ गंगापुर सिटी में किसी धार्मिक कार्यक्रम में गया हुआ था। इसी दौरान मंगलवार देर रात्रि को विद्युत शार्ट सर्किट से कच्चे छप्पर पोश घर में आग लग गई, घटना के समय दोनों बहनों के दादा रामजीलाल व दादी रामेश्वरी घर के बाहर सो रहे थे।

आग लगते ही दोनों बहनें चिल्लाने लगी, चिल्लाहट व आग की लपटें देखकर दोनों नींद से जागे एवं अपने दो पुत्रों कमलेश व छोटिया जो की पास में ही रहते थे, आवाज देकर बुलाया एवं सभी ने मिलकर आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक दोनों बहनें 90 प्रतिशत जल चुकी थी, परिजन उन्हें लेकर मलारना डूंगर चिकित्सालय पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने दोनों बहनों को मृत घोषित कर दिया।

पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर अमन कुमार ने बताया कि आग के कारण बच्चियों के पैर में जीभ तक पिघल गई एवं आग की गर्मी से जीभ का हिस्सा जलकर मुंह के बाहर निकल गया। रमेश नायक के चार बच्चियों व दो लड़के हैं। प्रिया तीसरे नंबर की व पूजा पांचवें संतान थी, आग लगने से छप्पर पोश में बंधी 15 बकरियां भी जलकर मर गई। बुधवार को हल्का पटवारी एवं प्रशासन ने आगजनी घटनास्थल का मौका मुआयना किया एवं शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

छह साल के बालक की डूबने से मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा में पानी की कुंडी में छह साल के बालक की डूबने से मौत का बड़ा ममला सामने आया है। घटना शहर स्थित कृषि उपज मंडी के पानी की कुंडी में हुई है। बताया जा रहा है कि ये बालक हार्दिक पिता बबलू राजपूत आरके कॉलोनी में रहता है। हार्दिक के माता- पिता दोनों ही कृषि उपज मंडी में राठी ब्रदर्स नामक दुकान पर काम किया करते थे। इस दौरान बालक हार्दिक मंडी स्थित पानी की कुंडी में गिर गया। इसकी जानकारी जब तक मिलती तब तक मासूम की सांसें उखड़ चुकी थी। माता-पिता पर दुखों का पहाड़ टूट गया। बताया जा रहा है कि पिता बबलू राजपूत मूल रूप से यू पी का रहने वाला है जो भीलवाड़ा के कृषि उपज मंडी में पत्नी के साथ काम किया करता था।

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति औसिया-मथानिया, जोधपुर

पता : तिवरी रोड औसिया जोधपुर - 342303, ई-मेल : kums.osian@rajasthan.gov.in, दूरभाषः- 02922274364

क्रमांक :- प.( )कृ.उ.म.स./लेखा/2025-26/राजकाज 19268250 — दिनांक :- 08/12/2025

Notice Inviting Bid (NIB 04/2025-26)

E-Bids are invited from manufacturers/direct importers/Authorized Dealer up to 11.30 A.M. of 23.12.2025 for procurement of NIR Grain Analyser/ Oil Testing Machine on Tender on behalf of office of the Secretary, Krishi Upaj Mandi Samiti Osian-mathaniya Osian-mathaniya. Details may be seen in the Bidding Document at the office of the Krishi Upaj Mandi Samiti Osian-mathaniya or State Public Procurement Portal website sppp.raj.nic.in or https://eproc.rajasthan.gov.in or website www.mandi.agriculture.rajasthan.gov.in. The bidding document may be downloaded from either of the above websites and uploaded duly filled in with payment of Rs. 1180/- (1000+18% GST) through banker's cheque/demand draft in favor of Secretary Krishi Upaj Mandi Samiti Osian-mathaniya payable at Osian-mathaniya Details of bid are following:-

Sr.	Bid Title	UBN No.
1	NIR Grain Analyzer/ Oil Testing Machine	DAM2526GLOB01069

Raj.Samwad/C/25/15453 — Secretary

राजस्थान धरोहर प्राधिकरण

भू-तल, पर्यटन भवन, संजय मार्ग (विधायकपुरी थाने के सामने), खासा कोठी, जयपुर-302001, Tel:-0141-2615648/40, E-Mail : rhppa.jaipur@gmail.com

ई-निविदा सूचना संख्या 25/2025-26

निम्नलिखित कार्यो के लिए केन्द्र/राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों द्वारा पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रु.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	Upgradation, augmentation and development of heritage corridor / Parikrama Marg, Poonchari Ka Lautha temple, Shri Narsingh Ji temple, Apsara kund, other miscellaneous temples and allied works at village Poonchari, district Deeg in the state of Rajasthan under CSR activity funded by Hindustan Zinc Limited. UBN is HPP2526WLOB00032	6714.78 Lakh	15 Months

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। इच्छुक निविदादाताओं को अपने डिजीटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

राज.संवाद/सी/25/15362 — मुख्य कार्यकारी अधिकारी

वृद्धा और उसके नाती की हत्या मामले में आरोपी दामाद व साथी गिरफ्तार

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लूटे गए गहने भी बरामद किये

उदयपुर, (कासं)। सलूंबर जिले की सेमारी थाना पुलिस ने मकान के बरामदे में सोती बुजुर्ग महिला गौरी और उसके नाती सुरेश की हत्या व लूट के मामले में आरोपी दामाद व उसके साथी को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से लूटे गए गहने भी बरामद किये हैं।

- **सास गंगाराम की पत्नी को एक माह से ससुराल नहीं भेज रही थी, इसलिए उसने दोस्त के साथ मिलकर वारदात कर दी**

थानाधिकारी गोपाल कृष्ण ने बताया कि मामले में मृतका के दामाद गंगाराम मीणा निवासी सिपुरा भागल और उसके साथी बबलू मीणा निवासी मल्लाडा को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि सास गंगाराम की पत्नी को एक माह से ससुराल नहीं भेज रही थी, इसलिए उसने दोस्त बबलू मीणा के साथ मिलकर वारदात कर दी। बच्चे को इसलिए माराए क्योंकि उसने देख लिया था। साथ ही जेवर इसलिए लूटे, ताकि पुलिस इसे लूट की घटना समझे और दामाद पर शक नहीं हो। पुलिस ने आरोपी से लूटे हुए चांदी के कडे, सोने की डूडी और नथ बरामद कर ली है।

घटना 5 दिसंबर रात 11 बजे की है। जब रात को मृतका का परिवार भतीजे देवीलाल के घर सत्संग में गया था। सास गौरी और नाती सुरेश बरामदे में खाट पर सो रहे थे।

उन्हें अकेला देखकर दामाद गंगाराम घर में घुसा। उसने साथी बबलू के साथ गौरी (65) और मासूम सुरेश (5) पर पहले लट्ठ से वार किया। फिर कुल्हाडी से चोटें पहुंचाई। थानाधिकारी ने बताया कि पूछताछ में दोनों आरोपियों ने स्वीकार किया कि हत्या के तुरंत बाद वे भागकर जंगल में छिप गए थे। इस डर को दूर करने के लिए दोनों ने शराब पी थी। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी गंगाराम स्वभाव से शुरू से ही आक्रामक रहा है। ऐसे में पुलिस ने शुरुआती जांच में ही उसे संदिग्ध माना और पूछताछ की।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड जालोर

क्रमांक-अअ/जा/2025-26/3048 — दिनांक-05.12.2025

निविदा सूचना संख्या- 19 वर्ष 2025-26

NIB NO. PWD2526A4612

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से भवन निर्माण कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में कुल 8 कार्य जिनकी लागत राशि रू. 182.00 लाख है अतः उक्त कार्यो के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	11 दिसम्बर 2025 प्रात 10.00 बजे से 23 दिसम्बर 2025 सायं 6.00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB NO.

UBN NO. 1. PWD2526WSOB18332, 2. PWD2526WSOB18333, 3. PWD2526WSOB18334, 4. PWD2526WSOB18338, 5. PWD2526WSOB18341, 6. PWD2526WSOB18344, 7. PWD2526WSOB18346, 8. PWD2526WSOB18347

(शंकर लाल) अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड जालोर मोबाईल-9983975907

DIPR/C/18204/2025

ग्राम पंचायतों को मिले स्वायत्तता और 50 प्रतिशत विकसित भूमि का अधिकार

'यदि अधिग्रहित भूमि का 50 प्रतिशत हिस्सा पंचायतों को मिले तो गांवों की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी'

जयपुर। अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस के अवसर पर बुधवार को संयुक्त अभिभावक संघ, युवा हल्ला बोल, भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी एवं ऑल कोचिंग इंस्टिट्यूट महासंघ के प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को ज्ञापन सौंपकर राजस्थान की ग्राम पंचायतों को वित्तीय स्वायत्तता, स्थायी आय स्त्रोत और विकास प्राधिकरणों द्वारा अधिग्रहित भूमि में से 50 प्रतिशत

■ मूल निवास, जाति व आय प्रमाण पत्र जारी करने का अधिकार ग्राम सरकार को मिलना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस पर प्रतिनिधिमंडल ने सौंपा ज्ञापन।

विकसित भूमि देने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि आज भी ग्रामीण गरीब, दलित और वंचित वर्ग आवास व मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जबकि पंचायतें वित्तीय अधिकारों के अभाव में सीमित दायरे में काम कर पा रही हैं। संयुक्त अभिभावक संघ के प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक जैन बिट्टू ने कहा कि 70 वर्षों बाद भी पंचायतों को स्थायी आय का स्त्रोत नहीं मिल पाया। यदि अधिग्रहित भूमि का 50 प्रतिशत हिस्सा पंचायतों को मिले तो गांवों की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और शिक्षा, रोजगार व विकास के नए द्वार खुलेंगे। आजादी के बाद जो परिवर्तन ग्रामीण शिक्षा में होने चाहिए थे, वे नहीं हुए, परिणामस्वरूप गांव खाली हो रहे हैं और संस्कार लुप्त हो रहे हैं।युवा हल्ला बोल प्रदेश अध्यक्ष ईरा बॉस ने कहा कि ग्राम स्तर पर वित्तीय स्वायत्तता ही वास्तविक लोकतंत्र की नींव है। जनसंख्या व क्षेत्रफल के आधार पर अनिवार्य बजट पंचायतों को मिलना चाहिए। जिससे गांवों से पलायन रुकेगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी एवं ऑल कोचिंग इंस्टिट्यूट महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष अनीष कुमार नाडार ने कहा कि मूल निवास, जाति व आय प्रमाणपत्र जारी करने का अधिकार ग्राम सरकार को मिलना चाहिए। इससे भ्रष्टाचार पर नियंत्रण होगा और नागरिकों की वास्तविक पहचान सुनिश्चित हो सकेगी।संयुक्त संगठनों ने आशा व्यक्त की कि राज्यपाल की पहल से ग्रामीण स्वायत्तता की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया जाएगा, जिससे गांवों का आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण संभव होगा।

फर्जी चालान और पेमेंट गेटवे से की जा रही है साइबर ठगी

जयपुर । साइबर अपराधियों ने ऑनलाइन धोखाधड़ी का एक नया तरीका अपनाया है। पुलिस महानिदेशक साइबर क्राइम के मार्गदर्शन में इस खतरे पर अंकुश लगाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक साइबर क्राईम विजय कुमार सिंह ने बताया कि अपराधी वाहन चालकों को गैर-सरकारी नंबरों से यातायात उल्लंघन (ट्रैफिक चालान) का फर्जी संदेश भेज रहे हैं।

एडीजी सिंह ने बताया कि ये संदेश तत्काल भुगतान का दबाव बनाते हैं। जैसे: रिमांइडर, ट्रैफिक नियम तोड़ने का बकाया जुर्माना। अतिरिक्त पेनल्टी या आगे की कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए तुरंत भुगतान करें। इस एसएमएस में एक फर्जी लिंक दिया जाता है और जैसे ही कोई व्यक्ति इस लिंक पर क्लिक करके भुगतान करने की कोशिश करता है, उसके बैंक खाते से पैसे आहरण होने की प्रबल संभावना बन जाती है।आमजन को इस धोखाधड़ी से बचाने के लिए साइबर पुलिस ने फर्जी वेबसाइटों की पहचान के तरीके बताए हैं। नकली वेबसाइटों का निर्माण सरकारी वेबसाइटों से मिलते-जुलते डोमेन नामों से किया जाता है। जबकि सरकारी वेबसाइटें या ..डोमेन पर होती हैं। इसके अतिरिक्त स्क्रीन पर अचानक पेमेंट या किसी स्कीम का लाभ पाने के लिए क्लिक करने का संदेश आना भी इनके फर्जी होने की मुख्य निशानी है।साइबर क्राइम विभाग ने आमजन से अपील की है कि वे किसी भी अनजान नंबर से आए एसएमएस के लिंक पर कदापि क्लिक न करें।

सौर व समग्र अक्षय ऊर्जा में राजस्थान बना सिरमौर : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

■ राजस्थान से गुजरेगा देश के एनर्जी सेक्टर का सुपर हाईवे : केन्द्रीय विद्युत मंत्री

■ प्रवासी राजस्थानी दिवस में बैटरी एनर्जी स्टोरेज पर विशेष सत्र आयोजित

जयपुर। केन्द्रीय विद्युत मंत्री मनोहरलाल ने आशा व्यक्त की है कि पश्चिमी राजस्थान में ठोट इंडियन बस्टर्ड के संरक्षण के मामले में ट्रांसमिशन लाइनों के विस्तार का जल्द ही विधिक समाधान निकलेगा। उन्होंने कहा कि ठीन एनर्जी कॉरिडोर-तृतीय को केन्द्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय से अनुमति प्राप्त हो गई है। केन्द्रीय ट्रांसमिशन नेटवर्क के अन्तर्गत 115 गीगावाट का तंत्र राजस्थान में बनाया जा रहा है। प्रसारण तंत्र का यह विस्तार इस बात का संकेत है कि देश के एनर्जी सेक्टर का सुपर हाईवे राजस्थान से होकर ही गुजरेगा।

मनोहरलाल बुधवार को जेईसीसी में प्रवासी राजस्थानी दिवस के अवसर पर बैटरी एनर्जी स्टोरेज को लेकर आयोजित विशेष सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने राजस्थान में सौर ऊर्जा क्षेत्र के विकास को लेकर राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान न केवल देश के, बल्कि वैश्विक अक्षय ऊर्जा मानचित्र पर अठाणी भूमिका निभा रहा है। आज हमारा प्रदेश सौर ऊर्जा और समठा अक्षय ऊर्जा क्षमता, दोनों में देश में प्रथम स्थान पर है।

उन्होंने कहा कि इस परिवर्तन में प्रवासी राजस्थानियों का ज्ञान, पूंजी और ग्लोबल नेटवर्क अत्यंत मूल्यवान पूंजी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार राजस्थान को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। प्रदेश को ऊर्जा लेने वाले के स्थान पर देने वाले राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय किए गए हैं। हमारी सरकार ने अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं और पार्कों के लिए 23,386 हेक्टेयर भूमि आवंटित की है, जिसके माध्यम से लगभग 10,202 मेगावाट क्षमता विकसित होने जा रही है।

शर्मा ने कहा कि अक्षय ऊर्जा निगम एवं विद्युत उत्पादन निगम को 26,784 मेगावाट क्षमता वाले सोलर पार्कों के लिए 51,808 हेक्टेयर भूमि का अतिरिक्त आवंटन किया गया है, जो आने वाले वर्षों में गीगावाट स्तर की परियोजनाओं का मजबूत आधार बनेगा। वहीं, 964 मेगावाट सोलर कैप्टिव प्लांटों एवं 1,514 मेगावाट क्षमता वाले सोलर प्लांटों को स्वीकृति दी जा चुकी है, जो उद्योगों और बड़े उपभोक्ताओं को स्वच्छ, सस्ती और दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा देंगे।

भोपाल प्रिंटिंग प्रेस से पेपर चुराकर मुख्य सरगना को देने वाला केडी डॉन गिरफ्तार

■ 23 लाख में बेचा गया था वनरक्षक भर्ती परीक्षा का पेपर

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी)ने कार्रवाई करते हुए वन रक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले में टीम ने भोपाल की प्रिंटिंग प्रेस से पेपर चुराकर मुख्य सरगना को देने वाले आरोपी केडी डॉन गिरफ्तार को गिरफ्तार किया है।

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एसओजी विशाल बंसल ने बताया कि वन रक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले में टीम ने भोपाल की प्रिंटिंग प्रेस से पेपर चुराकर मुख्य सरगना को देने वाले आरोपी केडी डॉन निवासी सेबनिया जिला भोपाल (मध्य प्रदेश) को गिरफ्तार किया है।

एसओजी एडीजी विशाल बंसल ने बताया कि 13 नवम्बर 2022 को हुई वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2020 पेपर लीक मामले के मुख्य आरोपी और 50 हजार रुपये के ईनामी बदमाश जबरा राम जाट से गहन पूछताछ के बाद एक महत्वपूर्ण कड़ी सामने आई है। एसओजी ने पेपर लीक के मुख्य स्त्रोत को तोड़ते हुए खिलान सिंह उर्फ केडी डान निवासी चोपड़ा कला भोपाल (मध्य प्रदेश) गिरफ्तार किया है। पूछताछ में यह खुलासा हुआ कि खिलान सिंह भोपाल स्थित रूचि प्रिंटिंग प्रेस (जहां वनरक्षक भर्ती परीक्षा का पेपर छपा था) से जुड़ा था और बेल कंपनी में बाइंडिंग का काम करता था।

खिलान सिंह ने प्रेस में कार्यरत कार्मिकों की मदद से वनरक्षक भर्ती परीक्षा की दोनों पारियों के पेपर चुराए थे।गिरफ्तारी के बाद पूछताछ में खिलान सिंह उर्फ केडी डान ने स्वीकार किया कि उसने ये गोपनीय पेपर मुख्य आरोपी जबरा राम जाट को 23 लाख रुपये में उपलब्ध कराए थे। उसने बताया कि यह राशि उसने नगद और ऑनलाइन माध्यमों से टुकड़ों-टुकड़ों में प्राप्त की थी। एसओजी की विशेष टीम ने अथक प्रयासों के बाद खिलान सिंह को भोपाल से दस्तयाब किया और बुधवार 10 दिसम्बर को गिरफ्तार किया गया है।

एडीसी बंसल ने बताया कि खिलान सिंह ने पूछताछ के दौरान रुचि प्रिंटिंग प्रेस में काम करने वाले कुछ अन्य कार्मिकों के नाम भी उजागर किए हैं। एसओजी टीम अब इन सभी संदिग्ध कार्मिकों की सरगर्मी से तलाश कर रही है।

राजस्थान पुलिस अकादमी बनी देश की सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण संस्थान

■ राज्यों के पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों में उत्कृष्ट संस्थान का दर्जा पाने वाली पहली अकादमी

जयपुर। राजस्थान पुलिस अकादमी ने एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल करते हुए देश के पुलिस प्रशिक्षण के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज कराया है। भारत सरकार के उपक्रम क्षमता विकास आयोग ने आरपीए को उत्कृष्ट संस्थान का दर्जा प्रदान किया है। इस सम्मान के साथ ही राजस्थान पुलिस अकादमी पूरे भारतवर्ष के राज्यों के पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों में यह प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त करने वाली पहली अकादमी बन गई है, जिसने देश के शीर्ष पाँच सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण संस्थानों में अपना स्थान सुनिश्चित किया है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने अकादमी को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान राजस्थान पुलिस के लिए एक अत्यंत गर्व का क्षण है। यह दर्शाता है कि हमारे प्रशिक्षु देश के सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण ढांचे के तहत तैयार हो रहे हैं। यह उत्कृष्टता का मानक है और हमें इसे बनाए रखना है।

वहीं पुलिस महानिदेशक प्रशिक्षण अनिल पालीवाल ने अकादमी की टीम को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आरपीए ने देश के सामने एक मिसाल कायम की है। यह दर्जा न केवल हमारी वर्तमान सफलता को दर्शाता है, बल्कि भविष्य में प्रशिक्षण पद्धितयों में नवाचार और गुणवत्ता के लिए हमें और अधिक प्रेरित करता है।अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एवं निदेशक आरपीए संजीब नार्जारी ने बताया कि यह उत्कृष्ट सम्मान आरपीए द्वारा प्रशिक्षण की गुणवत्ता, संसाधन प्रबंधन और तकनीकी उपयोग में स्थापित उच्च मानकों को दर्शाता है। अकादमी का मूल्यांकन क्षमता विकास आयोग द्वारा 8 प्रमुख स्तंभों के अंतर्गत कुल 43 कठिन मानकों पर किया गया।

इसमें प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण, संकाय विकास, प्रशिक्षण में तकनीक का उपयोग, प्रक्षिशुओं को प्रशिक्षण में सहायता, प्रशिक्षण गुणवत्ता एवं प्रशिक्षण संस्थान की कार्यप्रणाली एवं प्रशासन और अन्य संस्थानों के साथ समन्वय जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल थे।अकादमी के निदेशक नार्जारी और अतिरिक्त निदेशक शंकर दत्त शर्मा के मार्गदर्शन में गठित एक विशेष टीम ने सभी आवश्यक दस्तावेजीकरण और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस टीम में सहायक निदेशक धनपत राज, अनुकृति उज्जैन, पुलिस निरीक्षक धीरज वर्मा, दीपक यादव, नीलिमा अग्निहोत्री एवं महिला कांस्टेबल रानी शामिल थी।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के चुनाव आज

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की कार्यकारिणी के वार्षिक चुनाव गुरुवार को हाईकोर्ट परिसर में आयोजित किए जाएगे। तीन दिन से यहां बम विस्फोट की मिल रही धमकी को देखते हुए मतदान से पहले पूरे परिसर की गहनता से जांच की जाएगी। इसके बाद सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक मतदान होगा। मतदान केन्द्र पर एंट्री मेटल डिटेक्टर से गुजरने के बाद ही होगी। परिसर के मुख्य गेटों पर भी सुरक्षा गार्ड तैनात रहेंगे।चुनाव संचालन समिति सदस्य दिनेश पाठक ने बताया कि चुनाव में 5,538 मतदाता मताधिकार का उपयोग करेंगे। अध्यक्ष पद पर छह प्रत्याशी राजीव कुमार सोगरवाल, महेन्द्र शांडिल्य, अंशुमान सक्सेना, संगीता शर्मा, इन्द्रेश शर्मा व डॉ. रामरूप मीना चुनाव लड रहे हैं। महासचिव पद पर चार प्रत्याशी दीपेश शर्मा, अशोक कुमार यादव, प्रमिला शर्मा व कैलाश चन्द्र पंचोली चुनाव मैदान में हैं। वहीं उपाध्यक्ष के दो पदों के लिए छह प्रत्याशी अनुराग कलावटिया, मनोज दीक्षित, श्वेता पारीक, टेकचंद शर्मा, सुनील कुमार शर्मा व शालिनी श्योराण अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। वहीं दी बार एसोसिएशन के चुनाव शुक्रवार को आयोजित किए जाएगे।फैमिली कोर्ट से जुड़ी पारिवारिक बार एसोसिएशन की संपूर्ण कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित हुई है। चुनाव संचालन समिति से जुडे पीसी भंडारी ने बताया कि अध्यक्ष पद पर डीएस शेखावत, उपाध्यक्ष पद पर नईमुद्दीन और विष्णु कुमार शर्मा, महासचिव पद पर पंकज अरोडा, संयुक्त सचिव के पद पर जितेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष पद पर कुलदीप शर्मा, पुस्तकालय सचिव के तौर पर रामनिवास सैनी और सांस्कृतिक सचिव के तौर पर रजनी गुप्ता निर्वाचित हुई। वहीं कार्यकारिणी सदस्य के पांच पदों पर सुजाता वर्मा, विजेता यादव, पूनम जैन, मीता अठावाल और अशोक कुमार को निर्विरोध विजयी घोषित किया गया।

पुलिस ने हुक्का बार पर छापा मारा, संचालक गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (क्राइम ब्रांच सीएसटी) ने कार्रवाई करते हुए आदर्श नगर थाना क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित नाइन बीन्स कैफे की आड में चल रहे हुक्का बार पर छापा मारा। इस दौरान पुलिस ने संचालक विजय विक्रम सिंह (25) निवासी नसीराबाद जिला अजमेर को गिरफ्तार किया। जबकि 24 युवकों को हुक्का पीते हुए पकड़ा है और उनका कोटपा एक्ट में 48 सौ रुपये का चालान भी काटा है।

डीसीपी (क्राइम) अभिजीत सिंह ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि आदर्श नगर क्षेत्र स्थित नाइन बीन्स कैफे में नियमों के विरुद्ध हुक्का परोसा जा रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने रात में छापामारी की। जहां हुक्का पिलाते हुए कई युवक पकडे गए। मौके से हुक्के, फ्लेवर और उपकरण जब्त किए गए। वहीं संचालक विजय विक्रम सिंह के खिलाफ स्वास्थ्य संरक्षण अधिनियम, कॉपीराइट एक्ट और एक्साइज अधिनियम सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है। साथ ही पकड़े गए युवकों से 4 हजार 800 जुर्माना वसूल किया गया।

सार-समाचार

पुलिस दल पर जानलेवा हमला

जयपुर। कालवाड़ा थाना इलाके में कंट्रोल रुम से झगडे की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने एक परिवार के तीन लोगों ने हमला कर दिया। इस दौरान एएसआई समेंत तीन पुलिस के जवान घायल हो गए। पुलिस से मारपीट की सूचना मिलने अतिरिक्त पुलिस जाप्ता मौके पर पहुंचा और घायल पुलिसकर्मियों को नजदीकी प्राईवेट अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने आरोपित परिवार के तीनों लोगों के खिलाफ राजकार्य में बाधा डालने ओर पुलिस के साथ मारपीट करने का मामला दर्ज कर लिया है। एसीपी झोटवाड़ा आलोक सैनी ने बताया कि कालवाड थाने की पीसीआर को कंट्रोल रुम से सूचना मिली थी की हाथोज स्थित मंगलम धाम में एक परिवार के कुछ पड़ोसियों से झगड़ा कर रहे है। सूचना पर मौके पर पहुंची पीसीआर से एएसआई बलवीर सिंह, रुपनगढ़ हाल मुरलीपुरा निवासी ने दोनो पक्षों से समझाईश की। तभी जोगाराम जांगिड़, ललिता जांगिड़ और अजय जांगिड़ ने पुलिस दल पर हमला कर दिया। इस हमले एएसआई बलवीर सिंह सहित दो-तीन अन्य पुलिसकर्मियों को चोटे आई। पीसीआर से मिली सूचना के बाद पुलिस का अतिरिक्त जाब्ता मौके पर पहुंचा और घायल पुलिसकर्मियों को प्राइवेट अस्पताल चिरायु में भर्ती कराया।

दूसरे प्रिंसिपल को लाभ पहुंचाने के लिए किए तबादले पर रोक, मांगा जवाब

जयपुर। राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण ने दूसरे प्रिंसिपल को लाभ पहुंचाने के लिए प्रार्थी प्रिंसिपल का तबादला करने वाले आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अधिकरण ने प्रमुख शिक्षा सचिव और माध्यमिक शिक्षा निदेशक सहित भरतपुर डीईओ को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। अधिकरण ने यह आदेश संजय कुमार वर्मा की अपील पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।अपील में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि विभाग ने गत 22 सितंबर को भरतपुर की एक स्कूल में तैनात प्रिंसिपल का तबादला धौलपुर जिले में कर दिया था, लेकिन उसने नई जगह पर कार्यभार ठाहण नहीं किया। वहीं गत 23 नवंबर को इस प्रिंसिपल को अपीलार्थी के स्थान पर भरतपुर की स्कूल में लगा दिया और अपीलार्थी का तबादला धौलपुर कर दिया। अपील में आरोप लगाया गया कि दूसरे प्रिंसिपल ने दो माह तक नई जगह कार्य ठाहण नहीं किया और बाद में अपने प्रभाव का उपयोग कर भरतपुर में ही याचिकाकर्ता के स्थान पर तबादला करवा लिया। जिसके कारण अपीलार्थी का तबादला किया गया। अपील में कहा गया कि नियमानुसार एक कर्मचारी को फायदा पहुंचाने के लिए दूसरे कर्मचारी का तबादला नहीं किया जा सकता। जबकि इस मामले में प्रशासनिक जरूरत के लिए नहीं, बल्कि दूसरे प्रिंसिपल को लाभ पहुंचाने के लिए अपीलार्थी का तबादला किया गया है।

तीन बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। चित्रकूट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चोरी-नकबजनी करने वाली मध्यप्रदेश की एक गैंग के तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से दस से बारह लाख रुपए के सोने के आभूषण, चोरी की बाइक, स्कूटी और डुप्लीकेट चाबी बनाने के औजार भी जब्त किए है। पुलिस जाचं में सामने आया कि यह गैंग मध्यप्रदेश से जयपुर आकर होटलों में रुकती और रैकी कर वारदातों को अंजाम देती थी। इस गैंग के बदमाशों ने जयपुर में सात वारदात कबूल की हैं। इसके साथ ही दिल्ली, सूरत (गुजरात), महाराष्ट्र और राजस्थान के चूरू, बीकानेर, श्रीगंगानगर सहित कई अन्य जिलों में भी वारदात करने की बात स्वीकार की है।पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद मीणा ने बताया कि चित्रकूट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चोरी-नकबजनी करने वाली मध्यप्रदेश गैंग के भगवानपुरा (मध्य प्रदेश) निवासी गुरबीर सिंह चौहान, औझर (एमपी) निवासी हरजीत सिंह और उमटी (एमपी) निवासी शेर सिंह को गिरफ्तार किया है।

दुष्कर्म के आरोपी को उम्रकैद

जयपुर। जिले की पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने करीब 16 वर्षीय किशोरी का अपहरण कर उसके साथ दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त शाहिद उर्फ राजा को उम्रकैद की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर 3.25 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी केसी अटवासिया ने अपने आदेश में कहा कि 27 साल के अभियुक्त ने अवयस्क पीडिता का अपहरण कर उसके साथ दुष्कर्म जैसा गंभीर अपराध किया है। ऐसे में उसके प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक कमलेश शर्मा ने अदालत को बताया कि घटना को लेकर पीडिता के पिता ने 19 अक्टूबर, 2022 को फुलेरा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

तेज रफ्तार कार ने आएएस प्री परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके छात्र को कुचला

जयपुर। बजाज नगर थाना इलाके में तेज रफ्तार कार ने आएएस प्री परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके छात्र कुचल दिया और हादसे के बार चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने और राहगीर को टक्कर मार कर फरार होने का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस कार चालक की तलाश में जुटी हुई है।थानाधिकारी पूनम चौधरी ने बताया कि बरकत नगर चौराहे के पास लक्ष्मी स्वीट्स के सामने तेज रफ्तार कार ने पहले तो चार वाहनों को टक्कर मार दी। जिसके बाद बाइक सवार सुनील (23) चुरु निवासी को कुचल दिया। जिससे सुनील ने मौके पर ही दम तोड दिया। पुलिस ने मृतक के छोटे भाई मनफूल की शिकायत पर अज्ञात कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है। बताया जा रहा है कि मृतक सुनील जयपुर में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। वह ट्रेन से जयपुर आया था और बाइक कैब से गोपालपुरा स्थित अपने पीजी जा रहा था। इसी दौरान तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी।

अस्थाई पुजारी ही निकला मंदिर मूर्ति का चोर

जयपुर। अशोक नगर थाना पुलिस ने प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर में मूर्ति चोरी की वारदात का पर्दाफाश करते मंदिर में अस्थाई पुजारी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस गिरफ्तार आरोपित पुजारी से चोरी की वारदात को लेकर गहनता से पूछताछ करने में जुटी है। बताया जा रहा है गिरफ्तार आरोपित ने थाना इलाके में स्थित प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर से लगभग दो किलो वजनी चांदी की नागराज की मूर्ति और छत्र चोरी कर लिए और मौके से फरार हो गया। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी अस्थाई पुजारी को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने बताया कि स्थाई पुजारी किसी काम से अपने गांव चला गया था। मंदिर में पूजा-पाठ करने के लिए अस्थाई पुजारी अंकित को नियुक्त किया गया। मंदिर में साफ-सफाई के दौरान चांदी का छत्र और दानपात्र देकर अंकित की नियत बिगड़ गई और उसने मंदिर परिसर से दो किलो वजनी नागराज की मूर्ति ,चांदी के छत और दानपात्र चोरी कर कैब की मदद से लेकर फरार हो गया। पुलिस आरोपी से चांदी के छत्र ,मूर्तियां और दानपात्र बरामद कर लिए है।

ब्रांडेड नाम से नकली घी बनाने वाली फैक्ट्री का भंडाफोड़

जयपुर । जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) जयपुर-उत्तर और जयसिंह पुरा खोर थाना पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अफजल विहार कॉलोनी मानपुर-सड़वा में नकली घी के कारखाने का पर्दाफाश किया। पुलिस टीम ने मौके से बड़ी मात्रा में तैयार नकली घी, पैकिंग सामग्री और उपकरण बरामद किए हैं। वहीं पुलिस

■ 1 हजार 380 लीटर नकली घी, पैकिंग सामग्री बरामद

पुलिस ने नकली घी के कारखाने का पर्दाफाश कर नकली घी, पैकिंग सामग्री और उपकरण बरामद कर एक गिरफतार किया।

कार्रवाई के दौरान मुख्य आरोपी हनीष (36) निवासी अफजल विहार कॉलोनी को गिरफ्तार किया। आरोपी विभिन्न नामी ब्रांडों के नाम से नकली घी तैयार कर बाजार में सप्लाई कर रहा था। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करण शर्मा ने बताया कि कुछ माफिया संगठित रूप से नामी ब्रांड की पैकिंग में नकली घी तैयार कर बडे पैमाने पर बेच रहे थे। इस पर सख्त कार्रवाई के लिए अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त प्रथम नीरज पाठक और एसीपी आमेर सुरेंद्र राणावत के सुपरविजन में डीएसटी प्रभारी दिलीप कुमार सोनी और जयसिंह पुरा खोर थानाधिकारी राजेश शर्मा के नेतृत्व में टीम गठित की गई। जहां टीम ने अफजल विहार कॉलोनी मानपुर-सड़वा में नकली घी के कारखाने में दबिश मारते हुए टबों में भरा 1 हजार 380 लीटर नकली घी,194 लीटर महान घी, 450 लीटर सरस घी, 390 लीटर रिफाइंड सोयाबीन तेल,अमूल ब्रांड के 24 खाली टीन, कृष्णा घी के 3 हजार 400 रैपर, महान घी के 1 हजार 600 रैपर,1 हजार 400 पैकिंग थैलियां, सरस ब्रांड की 100 थैलियां,पाउच पैकिंग मशीन, इलेक्ट्रॉनिक कांटा, गैस सिलेंडर और अन्य उपकरण जब्त किया गया। साथ ही जयपुर डेयरी के प्रयोगशाला सहायक सुमित कुवांडा को मौके पर बुलाकर जांच कराई गई। उन्होंने पुष्टि की कि जब्त घी डेयरी का मूल उत्पाद नहीं है और उसकी पैकिंग भी नकली है।

आरोपी हनीष से पूछताछ में सामने आया कि वह सुभाष शर्मा नामक व्यक्ति के साथ मिलकर नकली घी का निर्माण और बिक्री कर रहा था। पुलिस ने बीएनएस, कॉपीराइट एक्ट और ट्रेड मार्क एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मंदिरों में चोरी करने वाले दो बदमाश सहित चोरी का माल खरीदने वाला भी गिरफ्तार

■ पुलिस ने दो शातिर नकबजनों को गिरफ्तार कर उनसे चोरी की गई 1.25 किलो चांदी बरामद की

जयपुर। करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मंदिरों में चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने दो शातिर नकबजनों को गिरफ्तार कर उनसे चोरी की गई 1.25 किलो चांदी बरामद की है। वहीं चोरी का माल खरीदने वाले एक आरोपी को भी दबोचा गया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

इस अवसर पर डीसीपी जयपुर पश्चिम हनुमान प्रसाद ने बताया कि करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मंदिरों में चोरी करने वाले रोकेश बैरवा (29) निवासी दूदू जिला जयपुर,धन सिंह (24) निवासी सिरसी रोड जयपुर और चोरी का माल खरीदने वाले गणेश कुमार सोनी निवासी सोडाला को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी सवाई सिंह ने बताया कि 29 नवंबर को ब्राह्मणों का मोहल्ला गोविन्दपुरा बस स्टैंड स्थित मुरली मनोहर जी मंदिर में चोरी की वारदात हुई थी। अज्ञात चोरों ने मंदिर का ताला तोड़कर मूर्तियों के आभूषण व चांदी के छत्र चोरी कर लिए थे।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस की टीम ने तकनीकी व मानव खुफिया सूत्रों के आधार रोकश बैरवा व धन सिंह को गिरफ्तार किया।

दोनों आरोपी पहले भी चोरी के मामलों में गिरफ्तार हो चुके हैं। पूछताछ में दोनों ने मुरली मनोहर मंदिर में चोरी की वारदात करना कबूल किया। पुलिस ने इनके कब्जे से 1.25 किलो चांदी के दो छत्र बरामद किए। पूछताछ में सामने आया कि आरोपियों ने चोरी का माल गणेश कुमार सोनी नामक सुनार को बेचा था। पुलिस ने उसे भी चोरी का माल खरीदने के आरोप में गिरफ्तार किया है। फिलहाल पुलिस आरोपियों से अन्य वारदातों के संबंध में पूछताछ कर रही है।

Celebrating the Strength and Spirit of Our Mountains

International Mountain Day, observed on December 11, celebrates the breathtaking beauty, cultural richness and ecological importance of the world's mountains. These towering landscapes support nearly half of humanity by providing fresh water, biodiversity, food resources and climate stability. The day serves as a reminder of the urgent need to protect fragile mountain ecosystems from threats like climate change, unsustainable tourism and deforestation. It also honours the communities who live in these regions and preserve their traditions. International Mountain Day encourages global awareness and collective responsibility to safeguard these natural treasures for future generations.

#LARGE & LIVING

The Humongous Fungus

Oregon's Hidden Giant Beneath the Forest Floor

Beneath the dense conifers and rugged terrain of Oregon's Malheur National Forest lies a marvel of nature: the 'Humongous Fungus,' an individual specimen of Armillaria ostoyae, more commonly known as the honey mushroom. While its visible mushrooms appear only in fall at the bases of trees, its true scale is nearly impossible to grasp at first glance. In the Reynolds Creek and Clear Creek regions, about eleven miles east of Prairie City, researchers have discovered that this still living organism spreads across an estimated 2,385 acres (roughly 3.7 square miles), ranking it among the largest known organisms on Earth by area.

What remains mostly underground is the web of mycelium and the thicker root like structures called rhizomorphs, which extend through soil and under the bark of trees, feeding on roots and decomposing wood. The fungus both kills living trees by infecting their root systems and continues decomposition after death, serving as a powerful agent of forest transformation. Despite this destructive capacity, it is also an ancient ecological engineer: estimates place its age at a minimum of 2,400 years, with some models suggesting it may be as old as 8,650 years. Scientists have estimated the biomass of this single living organism to weigh anywhere from 7,500 to 35,000 US tons (approximately 6,800 to 31,750 metric tonnes), depending on which parts, roots, mycelium, dead wood, it includes. This staggering mass and spread make the Humongous Fungus a contender for the title of 'world's largest living thing,' measured by both size and biomass.

The presence of this vast subterranean network has significant ecological implications. While it contributes to forest decay where hosts are infected, it also plays a role in nutrient cycling, soil health, and the long term structure of the forest ecosystem. Its growth is extremely slow: radial expansion is estimated at around 0.7 to 3.3 feet per year, which explains why such enormity takes centuries to develop.

Though its above ground manifestations, honey mushrooms, are ephemeral and modest, the organism's hidden parts are vast, ancient, and largely invisible to casual observers. Yet, the Humongous Fungus serves as a reminder that much of nature's profundity lies beneath the surface, in slow movements, deep roots, and unfolding over millennia. Understanding it shines light not only on fungal biology but on what it means for something to be 'alive,' not always in sight, but very much alive in scale and time.

A salabhanjika on the eastern torana at Sanchi.

The salabhanjika at Gwalior's Gujari Mahal Archaeological Museum.

The Sanskrit word salabhanjika literally translates to 'woman breaking a sala tree.' The figure, a woman standing under a tree and bending its bough with one arm, is an ancient South Asian iconographic type. This explains the triple flexion of the Gwalior yakshi's upper body, the relatively raised position of the two arm stumps and the hint of the tree behind her. In his 1929 essay The Woman and Tree or salabhanjika in Indian Literature and Art, Vogel traces the term salabhanjika to grammarian Panini's treatise Ashtadhyayi (6th-5th century BCE), in a list of Eastern Indian women's games, examples illustrating a rule. While there is no description of the game, Vogel deduces through morphological analysis that it involved plucking sala flowers. Over the next 1500 years, up to the 10th century, the word appears often, historian UN Roy contends in his article Salabhanjika Motif in Sanskrit Literature.

A Hoysala Empire-era salabhanjika in Belur, Karnataka.

Gyaraspur Ki Apsara In A Store Room With Bars?

#SALABHANJIKA

Bulbul Joshi

It's not very often that one sees a deity behind bars. It is a disconcerting experience, straight out of some clumsily-written supernatural fantasy. In the real world, such a sight is on view on the first storey terrace of Gwalior's Gujari Mahal Archaeological Museum. In a barred antechamber to the right of the curator's tube-lit and laminate-walled sarkari office rests a millennium-old nature spirit or yakshi, identified as a 'salabhanjika.' Officially dated between the 10th and 11th century CE, the stone sculpture is the armless torso of a voluptuous, richly bejewelled and elaborately coiffed woman. Hip cocked and leg visible through the slit of her antariya, she strikes a graceful tribhanga pose that bends at three points. Behind her inclined head and ornate headpiece are the remnants of branch-like projections jutting out from the relief.

Some of this detail is only discernible through a camera phone since the bars keep visitors too far to see the sculpture's full relief or walk around her, a frustrating limitation for a work long celebrated as one of the finest interpretations of the feminine form in Indian art, what art historian Ananda Coomaraswamy once called the 'woman-and-tree motif, fundamentally characteristic of Indian art.'

Dubbed the *Mona Lisa of India* by the tourism industry, apparently for her enigmatic smile, the yakshi is locally known as *Gyaraspur ki apsara* after the site she was discovered at. Gyaraspur is an ancient town in Madhya Pradesh's Vidisha district, about 350 kms south of Gwalior, containing a number of ruins of religious architecture of Buddhist, Jain and Hindu origins. While there is no public chronicle of her excavation, one can surmise that she was probably retrieved during the digs led by Gwalior State archaeologist MB Garde in the 1930s. Social media posts by Madhya Pradesh Tourism posit that she may have been part of one of Gyaraspur's major structures from the Paramara era, an ornamental swing, evoking entrance arch called the Hindola torana that once led to a temple.

The Sanskrit word *salabhanjika* literally translates to 'woman breaking a sala tree.' The figure, a woman standing under a tree and bending its bough with one arm, is an ancient South Asian iconographic type. This explains the triple flexion of the Gwalior yakshi's upper body, the relatively raised position of the two arm stumps and the hint of the tree behind her.

Flourishing in what is now Madhya Pradesh and produced across the subcontinent from Gandhara to Mathura to Nagarjunakonda, salabhanjikas serve as both architectural elements (sculptural rather than structural, as epigraphist Jean Phillipe Vogel clarifies) and plastic objects. Coomaraswamy identifies three distinct interpretations of the motif: the sacred tableaux of Buddha's nativity and later medieval Hindu river goddesses, and the secular scenes involving fertility metaphors which thrived throughout. He summarises the varieties, "Sometimes, these dryads stand on a yaksha or animal. Sometimes, they are adorning themselves with jewels, or using a mirror. Very often, they hold with one hand a branch of the tree under which they stand, sometimes one leg is twined round the stem of the tree (an erotic conception, for lata is both 'creeper' or 'vine,' and 'woman')."

Architecture and literature

In his 1929 essay, *The Woman and Tree or salabhanjika in Indian Literature and Art,* Vogel traces the term *salabhanjika* to grammarian Panini's treatise Ashtadhyayi (6th-5th century BCE), in a list of Eastern Indian women's games, examples illustrating a rule. While there is no description of the game, Vogel deduces through morphological analysis that it involved plucking sala flowers. Over the next 1500 years, up to the 10th century, the word appears often, historian UN Roy contends in his article *Salabhanjika Motif in Sanskrit Literature.*

Following the insights of both Vogel and Roy, as they navigate various texts from this period, we learn that salabhanjika is also referred to a festival or parva, possibly in Magadh, during which sala blossoms were gathered. The term not only signified the game but also the women who participated in it. The most famous among such women was Mahamaya, the Buddha's mother. It was in the sala wood of Lumbini that she stopped to play the game. Standing cross-legged under the tree, she clasped its branch and commenced labour in the tribhanga position, thus was born the Buddha.

It is precisely within early Buddhist architecture that the salabhanjika transitioned from a game or festival to a representational formula. According to Vogel, the toranas (gateways to enlightenment) of the stupa at Bharhut, dating back to a couple of centuries before the Common Era, feature the earliest proto-salabhanjika pillar figures.

In literature, as Vogel notes, the term debuts in *Buddhacharita*, Asvaghosa's early 2nd-century CE poem: *Avalambya gavaksapärsvamanya sayita capa-vibhagna-gatrayastih / viraraja vilambicaruhãra racita torana-salabhañjikeva*. Vogel's translation interprets this as a description of women who, having failed to entice the Prince with sensual pleasures, have collapsed into sleep.

Their architectural counterparts connote similar temptations to emphasise the Buddha's abstention. Roy explains: "These salabhanjika models, representing sensuous beauties, were engraved on the rail-posts of the stupas, and symbolize external allurements and worldly attractions, aversion to which had prompted the Buddha to renounce the pleasures of the palace." The Gwalior yakshi seems to be just such a torana salabhanjika, broken off from the Hindola arch and mounted in the museum.

By the Gupta period (4th-6th century CE), Roy tells us, the salabhanjika became rare for two reasons: a shift in Buddhist theology that reduced the demand for nativity scene and the parallel recasting of the torana figures with Vedic deities, the river goddesses, Ganga and Yamuna, for whom the sala branch no longer held any religious significance. At a memorial lecture at the Indian Art History Congress in 2010, art historian Devangana Desai contended that by 1000 CE, salabhanjika 'was no longer restricted to the Woman-and-Tree image but simply meant a statue of a woman.'

Roy notes that the word itself continued to appear in Sanskrit literature of the early medieval period, to which the Gwalior salabhanjika belongs. Although, by this time, the salabhanjika typically appears as a stambha-shirsha on the brackets or capitals of pillars in Hindu and Jain temples, Desai says, this does not seem to be the case of the Gwalior yaksi. She is perhaps an anachronistic torana salabhanjika.

The case for her classification is supported by a note in the 1971 book *5000 Years of Indian Art* by art historian Mario Bussagli and India's then National Museum director Calembus Sivaramamurti: firstly, a similar pose is extant on the side of the Hindola torana and secondly, the sculpture's superlative quality indicates that it was not merely ornamental, and may have held architectural value.

Fertility deity

Apart from her provenance, the other mystery of the Gwalior salabhanjika is her Mona Lisa smile.

To decipher it, we must turn to the codes of fertility iconography. In her lecture, Desai quotes art historian Vidya Dehejia's contention that 'it would be useful to redefine it (the salabhanjika motif) as making more direct reference to the rite of dohada, whereby the touch of women or contact with them brings trees, plants, and creepers into blossom.' Linking the dohada ritual to the mythography of the dryad, Coomaraswamy defines it as 'a pregnancy longing, and the tree is represented as feeling, like a woman, such a longing, nor can its flowers open until it is satisfied.'

Desai catalogues specific dohada rites associated with 10 trees. The most famous one, popularised in Sanskrit literature of the early 1st millennium by writers like Kalidasa, is that for the asoka, which blossoms with a kick from a young woman. The blossom of the mango tree, on the other hand, is prompted by a smile from a woman, or her act of blowing. The expression on the Gwalior salabhanjika's face could well allude to her ability to make mango trees bloom. The mango, associated with love, was the tree of choice for the Sanchi salabhanjikas many centuries prior. It was also where the 10th-11th century Gwalior salabhanjika's stambha-shirsha contemporaries stood inside temples. This raises the possibility of that iconography having been retained across the centuries or adapted for sculpting such a belated example of a torana salabhanjika.

The Gwalior yaksi's presence on the entrance arch of the temple underscores its function as a fertility deity. In its incarnation as pregnant Mahamaya giving birth as she holds the tree or the woman causing the pregnant tree to flower and eventually reproduce, the salabhanjika has always connoted life and human-nature synergy. Coomaraswamy observes, "These figures of fertility spirits are present here because the people are here. Women, accustomed to invoke the blessings of a tree spirit, would approach the railing pillar images with similar expectations." Transplanted from the atmosphere evoked by classical literature and the lyrical animism of ancient folklore, it is hard to imagine the salabhanjika delivering, pun intended, inside the barren premises of the Gujari Mahal Archaeological Museum curator's office.

Barred none

India's provincial museums have long struggled with poor display conditions and irresponsible management. Yet, imprisoning one of the subcontinent's most celebrated sculptures seems a new low. The lack of access is compounded by official indifference. When I tried to learn why the yakshi had been placed in a strongroom, I met a wall of bureaucratic deflection.

The fear of theft was mentioned, of some unrecorded incident? It is hard to say when such a theft would have taken place. Two Gwalioris who were children in the 1960s and '70s recalled memories of touching a free salabhanjika, suggesting she was not always locked up. One of them speculated that she was jailed after her trip to Paris for the Festival of India 1985-'86 (an Illustrated Weekly of India article from 1987 reports that Gujari Mahal Museum was forced to send their prize artefact). Incidentally, during the next Festival of India in the Soviet Union (1987-'88), two other nature spirits, Patna Museum's Didarganj Yakshi and Sanchi Museum's Salabhanjika, were damaged in transit. Perhaps, fearing a similar mishap, the Gwalior museum sealed its own. Yet, even before the 1980s, a 1977 Museums Conference report noted that she was kept 'in a double cupboard - one wooden, another iron.' Her incarceration, going on half a century, predates any known theft, and persists without explanation.

Ironically, the Mona Lisa, to which the Gwalior salabhanjika is often compared, was stolen in 1911 but not punished by being put in jail. Today, of course, she is installed inside a bulletproof glass enclosure that secures without obscuring. Closer home, despite being damaged, the Didarganj Yaksi continues to stand free. Why, then, can the Gujari Mahal Museum not replace the iron bars with a secure glass enclosure? The question hangs unanswered. By denying viewers a full encounter with an exquisite exemplar of one of India's most unique sculptural forms, the institution does a disservice to both public and heritage alike.

Around the same time as when the Gwalior salabhanjika was made, Somdeva wrote the Kathasaritasagar. Vogel recounts a story from it in which a gambler marries an apsara and follows her into the rain god Indra's celestial court to watch a dance. Caught bringing her mortal husband to the court, the apsara is cursed by Indra to become imprisoned inside a temple salabhanjika, to be freed only when the temple is demolished. Her intrepid husband disguises himself as an ascetic and tricks the king who built the temple into demolishing it to prevent inauspiciousness. Thus, the apsara was freed.

May the Gyaraspur ki apsara experience such deliverance soon.

rajeshsharma1049@gmail.com

Salabhanjikas at Museo d'Arte Orientale in Turin, Italy.

A salabhanjika, dubbed the Mona Lisa of India by the tourism industry, at Gwalior's Gujari Mahal Archaeological Museum.

#INSPIRATION

'Zia' Fitted 'Nisha'

From Headlines to Melody: How a Newspaper Inspired R. D. Burman's 'Nisha' in Sanam Teri Kasam

In the vibrant world of Bollywood music, legendary composer R. D. Burman was known not just for his genius melodies but also for his spontaneous creativity. One of the most fascinating stories from his career comes from the making of the 1982 film *Sanam Teri Kasam,* particularly the birth of the iconic name 'Nisha' in one of its memorable songs.

This tale offers a glimpse into how inspiration can strike from the most unexpected places, even a newspaper headline, and transform into a timeless piece of cinematic music.

The Spark of Inspiration: A Name from a Headline

During the production of Sanam Teri Kasam, R. D. Burman was deeply involved in composing and arranging the soundtrack. As the story goes, while flipping through the newspaper one day, he came across a headline featuring the then Pakistani military ruler General Zia-ul-Haq, commonly referred to as 'Zia.'

This simple word, Zia, caught Burman's attention. Tapping his foot rhythmically, he began to sing a playful tune around the syllable: "Zia... aha ha ha..."

Soon after, the question arose in the studio: what should the heroine's name be in the song? While the actress playing the female lead was Reena Roy, Burman wanted a name that would fit smoothly into his melody and evoke the right mood.

That's when the magic happened. Inspired by the sound and rhythm of Zia, and adapting it to fit the Indian musical and cinematic context, the name was transformed into 'Nisha,' a name meaning night in Hindi, rich with poetic and romantic connotations.

The Creation of a Classic

The song 'Nisha, Nisha, Nisha...' quickly became one of the standout tracks in Sanam Teri Kasam. Its catchy tune, combined with the enchanting name, captured audiences' imaginations. The story behind the name highlights Burman's unique ability to blend the contemporary and the classical, the everyday and the artistic. What might have been just a fleeting glance at a news headline became a seed for one of Bollywood's beloved songs.

R. D. Burman's Enduring Legacy

Rahul Dev Burman, fondly called Pancham Da, remains one of India's most revered music composers. His work combined innovation with emotional depth, and his ability to find inspiration in the ordinary set him apart.

The story of 'Nisha' in Sanam Teri Kasam is a perfect example of this genius, a reminder that sometimes, the biggest hits come from the simplest moments of curiosity.

THE WALL

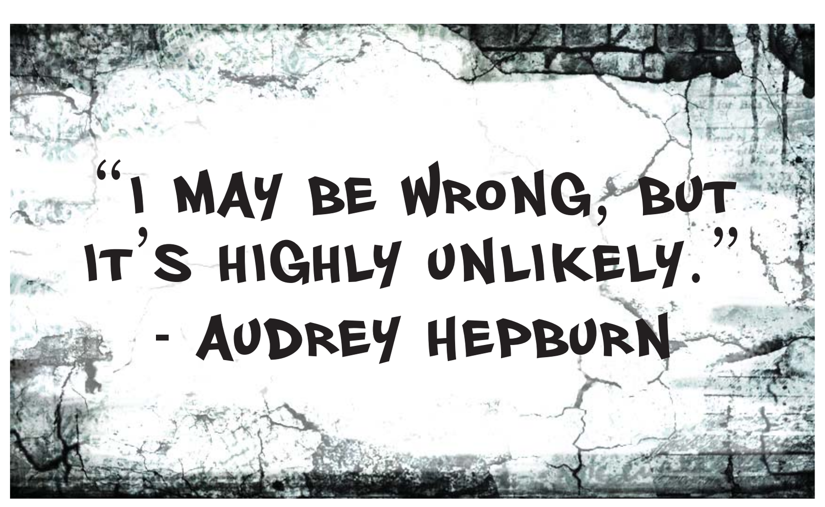

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

यमुना का पानी जल्द ही राजस्थान आएगा, इसकी डीपीआर बन रही है : सतीश पूनियां

कोटा आए भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां ने दिवंगत पूर्व एमएलए विजय सिंह पलायथा और भरत सिंह के परिजनों को सांत्वना दी

सतीश पूनियां ने पूर्व विधायक भवानीसिंह राजावत से आवास पर जाकर मुलाकात की

- प्रवासी राजस्थानी दिवस पर मुख्यमंत्री खुद इनीशिएटिव लेकर काम कर रहे हैं : पूनियां

कोटा, (निसं)। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और हरियाणा के प्रभारी सतीश पूनियां बुधवार को कोटा दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से भी वार्ता की। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के यमुना का पानी इस शासन में राजस्थान नहीं आने के बयान पर पूनिया ने कहा कि वे खुद के 50 साल में शासन में पानी नहीं ला पाए, दूसरा कोई ला रहा है तो तकलीफ है। बीते कांग्रेस शासन में केंद्र सरकार की कोई भी योजना प्रदेश में ठीक से नहीं लागू की गई। इनमें जल जीवन मिशन या आयुष्मान भारत से लेकर कई योजनाएं हैं। सतीश पूनियां ने कहा कि यमुना का पानी जल्द ही राजस्थान आएगा। इसकी डीपीआर बन रही है।

पूनियां ने कहा कि आमजन का आंकलन है कि प्रदेश में पिछली सरकार में पेपर लीक, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, बदहाल कानून व्यवस्था थी। मुख्यमंत्री भजनलाल के नेतृत्व में सरकार ने पेपर लीक पर अंकुश लगा दिया बुनियादी मसलों पर काफी काम हुआ। प्रवासी राजस्थानी दिवस पर मुख्यमंत्री खुद इनीशिएटिव लेकर काम कर रहे हैं। 7 लाख करोड़ के एमओयू धरातल पर उतरे हैं। राज्य में दो वर्षों में बड़ा काम निवेश का हुआ है। इस निवेश से रोजगार का सृजन होगा। प्रदेश आर्थिक तरक्की करेगा। राजस्थान ऐसा प्रदेश है जहां एसआईआर पर शत प्रतिशत काम हुआ। कैबिनेट विस्तार पर पूछे सवाल पर सतीश पूनियां ने कहा कि दिल्ली के संपर्क वालों को जितना पता है। उतना ही मुझे पता है लेकिन चर्चाओं से अच्छा ही हो रहा है कि लोगों को उम्मीद बनी हुई है, जिस तरह कुंवारे युवक को शादी की उम्मीद बंधी रहती है। पूनिया ने चुटकी ली कि जिस तरह से कुंवारे आदमी को शादी की उम्मीद है, इसी तरह से कुछ विधायकों को मंत्री बनने की उम्मीद रहेगी। होगा क्या, यह देखने का विषय है। जब मीडिया ने पूछा की संभावनाएं है क्या इस पर पूनिया बोले कि कुंवारे आदमी की कभी न कभी तो शादी होगी।

पूनियां दिवंगत पूर्व विधायक विजय सिंह पलायथा और पूर्व मंत्री भरत सिंह के घर गए और परिजनों को सांत्वना दी। इससे पहले सर्किट हाउस में भाजपा नेता और कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। इस दौरान भाजपा नेता मुकेश विजय, लक्ष्मण सिंह खींची, अल्पसंख्यक मोर्चा जिला अध्यक्ष साहिल मिर्जा, जाट समाज के राम सिंह चौधरी और विवेक चौधरी आदि मौजूद थे।

राजावत से मिलने उनके आवास पहुंचे :-भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं हरियाणा के प्रदेश प्रभारी सतीश पूनियां बुधवार को पूर्व विधायक भवानीसिंह राजावत से मिलने उनके निजी आवास पर पहुंचे। पूनियां एक निजी कार्यक्रम मे कोटा पधारे। राजावत के निवास पर आने से पहले उन्होंने सर्किट हाउस मे बीजेपी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। पूनियां ने बताया कि पहले तो विधानसभा में हमारी मुलाकात हो जाती थी, परन्तु काफी समय से मुलाकात नहीं होने के कारण मैं स्वंय राजावत से मिलने पहुंचा हूं। हम दोनों के सम्बन्ध काफी बरसों पुराने रहे हैं। इस कारण कोटा आने पर मैं राजावत से मिलने आया हूं। पूनियां के साथ पूर्व विधायक चन्द्रकांता मेघवाल भी साथ रही।

30 लाख के जेवर चोरी के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

- बच्चे के साथ दोस्ती की, परिवार के साथ विश्वास जमाया, फिर 30 लाख के गहने चोरी किये
- तीन आरोपियों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया था, तो वहीं एक आरोपी ने चोरी के गहनों को गलाने का काम किया था

चिड़ावा, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए एक बच्चे से दोस्ती और परिवार पर विश्वास जमाने के बाद करीब 30 लाख रूपए के जेवरातों की चोरी के मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें तीन आरोपियों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया था, तो वहीं एक आरोपी ने चोरी के गहनों को गलाने का काम किया था। पुलिस ने चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से कोर्ट ने आरोपियों को पांच दिन के पुलिस रिमांड पर भेजा है।

सीआई आशाराम गुर्जर ने बताया कि चिड़ावा कस्बे के रहने वाले आरिफ ने मामला दर्ज करवाया था कि उनके पड़ौसी विशाल भालोठिया समेत उसके साथियों ने उसके 13 साल के बेटे से पहले दोस्ती की और फिर उसे डरा धमकाकर उसके आलमारी की चाबी लेकर आलमारी में रखे करीब 30 लाख रूपए के जेवरात चुरा लिए। इस मामले की जांच एसआई कैलाशचंद्र को सौंपी गई।

मामले की जांच में सामने आया कि विशाल भालोठिया ने अपने साथी विक्रांत पुत्र गौतम शर्मा, अतुल शर्मा पुत्र सुभाष शर्मा के साथ मिलकर पहले आरिफ के दो बेटों से दोस्ती की। जिसके बाद तीनों का घर में भी आना जाना हो गया। आरोपियों ने आरिफ के 13 साल के छोटे बेटे से दोस्ती की, फिर उसे डरा धमकाकर पहले तो आलमारी की चाबी मंगवाई। इसके बाद एक दिन जब परिवार के अधिकतर सदस्य शादी में गए हुए थे। तब योजना बनाकर दोनों बेटों को अपने पास बुला लिया और इस प्लान में शामिल एक युवती आरिफ की पत्नी को अपने साथ लेकर चली गई। पीछे से आरोपियों ने आलमारी में रखे सारे गहने पार कर दिए। इसकी जानकारी भी करीब 20-21 दिन बाद तब सामने आई, जब आरिफ के परिवार को दूसरी शादी में जाना था और उन्होंने गहने संभाले। इस मामले में पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में स्यालू खुर्द हाल पारस अस्पताल के पास चिड़ावा निवासी विशाल भालोठिया पुत्र अमरसिंह, चिड़ावा कस्बे के वार्ड नंबर 13 निवासी विक्रांत पुत्र गौतम शर्मा, पंचायत समिति के सामने वाली गली में रहने वाले अतुल शर्मा पुत्र सुभाष शर्मा को गिरफ्तार किया है। वहीं चोरी किए गए सोने के गहनों को गलाने वाले पश्चिम बंगाल के मेदनीपुर जिले के गढबेता थाना इलाके के बालाराम गांव निवासी ज्वैलरी कारीगर बरकत अली खान पुत्र नूर आलम खान को गिरफ्तार किया है। इस मामले में एक युवती, जो वारदात वाले दिन योजना बनाकर आरिफ की पत्नी को अपने साथ घर के बाहर ले गई थी और अन्य शामिल आरोपियों की तलाश है।

जानकारी में सामने आया कि परिवादी आरिफ की मां विशाल भालोठिया के घर से ही दूध लाती थी। आरिफ की मां के साथ आरिफ के दोनों बेटे भी जाते थे। विशाल भालोठिया ने दोनों बेटों से दोस्ती की। लेकिन 13 वर्षीय छोटे बेटे को उसने टारगेट बनाया। उसे मोबाइल में गेम खिलाने और गाड़ियों में घुमाने ले जाता था। इसी दौरान उसने पहले तो धीरे धीरे बातों ही बातों में घर में रखे गहनों के बारे में पूछा। इसके बाद वारदात के हफ्तेभर पहले आलमारी की चाबी मंगवा ली। विशाल भालोठिया के साथ विक्रांत और अतुल भी शुरू से ही शामिल थे। आरोपियों ने आरिफ के बड़े बेटे से भी अच्छी खासी दोस्ती कर ली थी। आरिफ के बड़े बेटे का बर्थ डे मनाने के लिए भी पहुंचे थे। केक लेकर घर गए और केक काटकर बर्थ डे मनाया था।

गिरफ्तार आरोपी विशाल भालोठिया के पहले से अवैध हथियार, हत्या प्रयास, मारपीट के प्रकरण दर्ज हैं, तो वहीं अन्य आरोपी विक्रांत के भी खिलाफ भी चोरी का एक मामला दर्ज है। ये दोनों ही आपराधिक प्रवृत्ति के है। जबकि अतुल शर्मा का अभी कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिला है।

विवाहिता की संदिग्ध मौत, तीसरे दिन हुआ पोस्टमॉर्टम

- मारपीट का पुराना वीडियो वायरल होने से आक्रोश, कार्रवाई में जुटी पुलिस

रायसिंहनगर, (निसं)। यहां दहेज प्रताड़ना के मामले में विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। घटना के तीसरे दिन बुधवार को पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। इस मामले को लेकर इलाके में शोक और आक्रोश का माहौल है।

मृतका के पिता ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है। पिता के अनुसार उनकी बेटी की शादी 25 वर्ष पूर्व रायसिंहनगर निवासी छिन्द्रपाल पुत्र दीपाराम के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही पूजा को दहेज में नकदी और सामान की मांग को लेकर लगातार प्रताड़ित किया जा रहा था। पिता ने आरोप लगाया कि कई बार पंचायत में समझाइश के बावजूद प्रताड़ना का सिलसिला बंद नहीं हुआ। परिजनों का कहना है कि छिन्द्रपाल, उसकी माता काली देवी और परिवार के अन्य सदस्य वर्ष से पूजा पर अत्याचार करते रहे। परिजनों ने बताया कि 8 दिसंबर की शाम 7:47 बजे मृतका ने फोन कर बताया कि उसे फिर से बेरहमी से पीटा जा रहा है। इसके कुछ देर बाद मौत की सूचना मिली। परिजन सूरतगढ़ से तुरंत रायसिंहनगर पहुंचे, जहां उन्हें शव अस्पताल की मॉर्चुरी में मिला। परिजनों ने यह भी आरोप लगाया कि छिन्द्रपाल के किसी महिला से अवैध संबंध थे इसी विवाद के चलते उसकी सामूहिक रूप से हत्या किए जाने की आशंका जताई गई है। सोशल मीडिया पर पिटाई का पुराना वीडियो वायरल होने के बाद परिजनों और स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश फैल गया है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। परिजन इस मामले में न्याय की उम्मीद कर रहे हैं।

चोरी के माल सहित तीन आरोपी गिरफ्तार

- पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों का इटावा के ग्राम केशोपुरा में जुलूस भी निकाला

कोटा, (निसं)। इटावा पुलिस टीम ने चोरी के दर्ज मामले में कार्यवाही करते हुए चोरी के माल सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों का इटावा के ग्राम केशोपुरा में जुलूस भी निकाला।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक अवनीश कुमार शर्मा ने बताया कि फरियादी ने 3 दिसम्बर को इटावा थाने में रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में कहा कि ग्राम केशोपुरा में से उसका पम्प सैट जुगाड़ को कोई अज्ञात व्यक्ति चोरी कर ले गये है। ग्रामीण एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये पुलिस उप अधीक्षक ओमप्रकाश सरावग के सुपरविजन में इटावा थानाधिकारी संदीप विश्नोई के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने तकनिकी आधार व मुखबीर की सूचना पर नयागांव दुर्जनपुरा निवासी गिरीराज, रजोपा निवासी रामचरण एवं रजोपा निवासी त्रिभुवन को डिटेन कर अनुसंधान के बाद प्रकरण में गिरफ्तार किया। पुलिस टीम ने पकडे गये आरोपियों के पास से चोरी किये गये पम्पसैट जुगाड़ को भी बरामद किया।

अजमेर दरगाह और कलेक्ट्रेट को बम से उड़ाने की धमकी से हड़कंप

बुधवार सुबह जिला कलेक्टर को धमकी भरा ई-मेल मिला, सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हुई

- ई-मेल में खुद को पूर्व तमिल टाइगर्स समर्थक और टीएनएलए नेता एस. मरन के साइबर गुरिल्ला विंग का सदस्य बताया

अजमेर, (निसं)। जिले में एक बार फिर ख्वाजा साहब की दरगाह और कलेक्ट्रेट को उड़ाने की धमकी भरा ई-मेल मिलने से सुरक्षा एजेंसियों में हड़कंप मच गया। बुधवार सुबह कलेक्टर लोकबंधु को आधिकारिक मेल आईडी पर भेजे गए ई-मेल में दावा किया गया कि दोनों स्थानों पर आरडीएक्स आईईडी लगाए जा चुके हैं।

ई-मेल मिलते ही कलेक्टर अपने चैंबर से बाहर आ गए और तुरंत पुलिस को सूचना दी। बम निरोधक दस्ते, डॉग स्क्वॉयड, एटीएस, ईआरटी और साइबर टीम ने कलेक्ट्रेट व दरगाह परिसर में सघन तलाशी अभियान चलाया। दो घंटे तक की जांच में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, जिसके बाद राहत की सांस ली गई। इस दौरान दरगाह परिसर में जायरीन का प्रवेश पूर्णत: रोक दिया गया।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार पिछले दिनों 31 अक्टूबर, 4 दिसंबर, 5 दिसंबर, 8 दिसंबर, 9 दिसंबर और अब 10 दिसंबर को धमकी भरे ईमेल मिल चुके हैं। धमकी के मद्देनजर सुबह 11.30 बजे दरगाह को खाली करवाया गया। जन्नती दरवाजे से लेकर मुख्य द्वार तक सभी रास्ते सील कर मेटल डिटेक्टर व डॉग स्क्वॉयड से जांच की गई। कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिलने के बाद जायरीन को दोबारा प्रवेश दिया गया।

ईमेल में तमिल साइबर गुरिल्ला विंग का नाम :- ई-मेल में खुद को पूर्व तमिल टाइगर्स समर्थक और टीएनएलए नेता एस. मरन के साइबर गुरिल्ला विंग का सदस्य बताया गया है। मेल में आईएसआई और डीएमके गठजोड़ का भी उल्लेख किया गया है। पुलिस साइबर जांच के आधार पर आरोपी की पहचान करने में जुटी है।

व्यवसायी दंपती को 38 साल बाद मिला न्याय

पाटन, (निसं)। न्याय की राह भले लंबी हो, परंतु सच्चाई की विजय अंतत: होती है। इस बात की मिसाल पेश करते हुए नीमकाथाना के प्रतिष्ठित व्यवसायी रामावतार अग्रवाल और उनकी पत्नी नर्बदा देवी को करीब 38 वर्ष बाद न्याय मिला है। वर्ष 1987 में थाना नीमकाथाना में दोनों तथा अन्य के विरुद्ध एक मुकदमा दर्ज हुआ था। अधीनस्थ न्यायालय ने सुनवाई के बाद सभी आरोपों से दोष मुक्त कर दिया था, परंतु राज्य सरकार की ओर से इस निर्णय के विरुद्ध अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश क्रम संख्या-1, नीमकाथाना की अदालत में अपील प्रस्तुत की गई। अभियुक्तों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मनीराम जाखड़ ने प्रभावी और ठोस पैरवी करते हुए न्यायालय के समक्ष सभी कानूनी तर्क दृढ़ता से रखे। दोनों पक्षों को विस्तृत रूप से सुनने के पश्चात अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश क्रम संख्या-1 संतोष कुमार ने आखिरकार लगभग चार दशक पुराने इस प्रकरण में राज्य की अपील को खारिज करते हुए अभियुक्तगण को संपूर्ण रूप से दोषमुक्त कर दिया। लगभग 38 वर्षों तक चले इस मुकदमे के बाद आया निर्णय न केवल अग्रवाल दंपती के लिए राहत का विषय है, बल्कि यह न्याय व्यवस्था में विश्वास को भी मजबूत करता है।

पांच मकानों व एक मंदिर में चोरी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के रायला क्षेत्र में चोरों का आतंक हो रहा है। एक ही रात में पांच मकानों और एक मंदिर में चोरी हो गई। चोरों ने रायला के कुंडिया कला में पांच मकान और रायला चौराहे स्थित मंशापूर्ण बालाजी मंदिर के ताले तोड़ दिए। चोरों ने मकानों से लाखों की नकदी, सोने-चांदी के आभूषण और कीमती सामान उड़ाए। लगातार हो रही चोरी की इन घटनाओं ने पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि रात्रि गश्त में लापरवाही के कारण चोर बेखौफ होकर वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच में जुटी है और सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

आपसी रंजिश में युवक पर फायरिंग

कोटा, (निसं)। नयापुरा इलाके के आकाशवाणी कॉलोनी में आपसी रंजिश के चलते कुछ बदमाशों ने एक युवक पर फायरिंग कर दी। गनीमत रही कि फायरिंग में युवक बाल-बाल बच गया, गोली युवक के पेट को छूकर निकल गई।

जानकारी के अनुसार फायरिंग में प्रताप चौक निवासी रोहित सिंगुर घायल हो गया, जिसे उपचार के लिये अस्पताल में भर्ती कराया गया। रोहित सिंगुर मंगलवार देर रात्रि को बाइक से अपने छोटे भाई के साथ आकाशवाणी कॉलोनी की तरफ से आ रहा था, तभी रास्ते में कुछ जने कार में आये और बाइक को ओवरटेक करके कार बाइक के आगे लगाकर बाइक रोक दिया और कार में सवार एक ने अचानक से दो तीन फॉयर कर दिये, हमले में गोली रोहित के पेट के पास लगी। शहर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिलीप कुमार सैनी ने बताया कि फायरिंग के पीछे आपसी रंजिश का मामला सामने आया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने बताया कि हमले में घायल रोहित सिंगुर की शिकायत पर आशु व अन्य के खिलाफ नयापुरा थाने में मामला दर्ज किया है। पुलिस टीम गठित कर हमलावरों की तलाश की जा रही है, हमले में घायल का उपचार अस्पताल में चल रहा है।

परिवार को दो बार करना पड़ा अंतिम संस्कार

- बुजुर्ग मुस्लिम की अस्थियों को अलवर में दफनाया, एक दिन पहले हुआ था हंगामा
- इतनी बड़ी चूक होने के बाद पीएमओ डॉ. सुनील चौहान ने जांच कमेटी गठित की

अलवर, (निसं)। अलवर जिला हॉस्पिटल की मोर्चरी में 80 साल के कैलाश और 73 साल के मोहम्मद साबिर के शवों को लेकर मंगलवार शाम हंगामा हो गया था। कैलाश के परिवार को मोहम्मद साबिर का शव सौंप दिया गया था, जिसका अंतिम संस्कार भी कर दिया गया था। मामले का खुलासा होने पर परिवार को वापस बुजुर्ग कैलाश का अंतिम संस्कार करना पड़ा। वहीं मोहम्मद साबिर की अस्थियों को अलवर में ही दफनाना पड़ा। इतनी बड़ी चूक होने के बाद हॉस्पिटल प्रशासन ने जांच कमेटी गठित की है। पीएमओ डॉ. सुनील चौहान ने जांच कमेटी गठित की है। तीन दिन में जांच पूरी होगी। गलती का कारण समझकर व्यवस्था दुरुस्त की जाएगी। इसके अलावा हॉस्पिटल में शव की फोटो-वीडियो बनाना अनिवार्य कर दिया है, ताकि भविष्य में गलती न हो।

जानकारी के अनुसार छह दिसम्बर को पुलिस को तीन अज्ञात शव मिले थे। तीनों को अलवर जिला हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया गया था। 7 दिसम्बर को राजगढ़ के थानाराजाजी के गांव के लोग 80 साल के बुजुर्ग कैलाश का शव उसके परिजन लेकर गए थे। उस दिन अंतिम संस्कार कर दिया। 9 दिसंबर को पता चला कि कैलाश की जगह पाली के मोहम्मद साबिर का अंतिम संस्कार कर दिया। कैलाश का शव तो मुर्दाघर में रखा है। यह जाने के बाद सब घबरा गए। तुरंत अस्पताल आए। यहां साफ हुआ कि सच में कैलाश की जगह साबिर का अंतिम संस्कार हो गया, लेकिन साबिर भी लावारिश था। उसके परिजन नहीं थे। वह मूल रूप से पाली की मजार पर रहता था। पाली, अजमेर और अलवर में मुस्लिम समाज के लोगों को पता चला कि साबिर का इंतकाल हो गया है। शव अलवर हॉस्पिटल में हैं। उसका कोई वारिस नहीं है। ऐसे में अलवर जिला हॉस्पिटल आए। तब पता चला कि साबिर का शव गलती से थानाराजाजी भेज दिया और वहां अंतिम संस्कार हो गया। आखिर में उसकी अस्थियों को अलवर लाया गया और दफनाया गया।

सीमेंट प्लांट के खिलाफ जोधपुरा संघर्ष समिति का धरना 1100 दिन से लगातार जारी

बड़ी संख्या में ग्रामीण रैली के रूप में नारेबाजी करते हुये जिला कलैक्ट्रेट पहुंचे।

- संघर्ष समिति रैली निकाल कलेक्ट्रेट कार्यालय के मुख्य द्वार पर नारियल चढ़ाये, कलैक्टर ने अधिकारियों को कार्यवाही के निर्देश दिये
- समिति का आरोप है कि सीमेंट प्लांट के खिलाफ एनजीटी के निर्णय की पालना कराने में खान विभाग के एएमई बाधा उत्पन्न कर रहे हैं

कोटपूतली, (निसं)। सीमेंट प्लांट के खिलाफ जोधपुरा संघर्ष समिति का अनिश्चितकालीन धरना करीब 1100 दिनों से अनवरत् जारी है। संघर्ष समिति ने अपनी मांगों को लेकर कोटपूतली में बड़ा आंदोलन किया। समिति का आरोप है कि सीमेंट प्लांट के खिलाफ एनजीटी के निर्णय की पालना कराने में खान विभाग के एएमई अमीचंद दुहारिया बाधा उत्पन्न कर रहे हैं और प्लांट से मिलीभगत कर रहे हैं। इसी के विरोध में बड़ी संख्या में ग्रामीण तख्तियां व बैनर लेकर नगर परिषद पार्क में एकत्रित हुये और रैली के रूप में नारेबाजी करते हुये जिला कलैक्ट्रेट पहुंचे, जहां उन्होंने प्रदर्शन व धरना दिया। आंदोलनकारियों ने जिला कलैक्ट्रेट कार्यालय के मुख्य द्वार पर अपनी मांगों के प्रतीक रूप में नारियल भी चढ़ाये और जमकर नारेबाजी की। स्थिति की गंभीरता को देखते हुये पुलिस के भारी सुरक्षा बल सहित पुलिस उप अधीक्षक राजेश कुमार शर्मा की अगुवाई में भारी पुलिस जाप्ता तैनात रहा।

ग्रामीणों ने बताया कि अल्ट्राटेक सीमेंट प्लांट पर करीब 100 करोड़ रुपये कि अवैध खनन (लाइमस्टोन पत्थर चोरी) कि पैलन्टी निकाली गई, परन्तु बाद में केवल 37 करोड़ में मामला सैटल कर लिया। जिसकी पुन: जांच कराई जावे और दोषियों पर कार्यवाही की जाये एवं एएमई अमीचंद दुहारिया का स्थानान्तरण किया जाये। जिला कलैक्टर प्रियंका गोस्वामी ने प्रदर्शनकारियों की चिंताओं को देखते हुये संघर्ष समिति के प्रतिनिधि मंडल को वार्ता के लिये बुलाया। जिला कलैक्टर ने उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुये मौके पर ही एसडीएम रामावतार मीणा व एएमई अमीचंद दुहारिया को बुलाया और एनजीटी के निर्णय की पालना सुनिश्चित करने तथा मौके पर जाकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। एएमई के तबादले की मांग पर कलैक्टर ने कहा कि यह उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है। बैठक में समाजसेवी राधेश्याम शुक्लावास, संघर्ष समिति के सचिव कैलाश यादव, भूपसिंह, सतपाल यादव सहित अन्य ग्रामीण शामिल हुये। जिला कलैक्टर के निर्देशों के बाद एसडीएम रामावतार मीणा, तहसीलदार रामधन गुर्जर, खान विभाग और अन्य अधिकारियों की टीम जोधपुरा पहुंची, जहां प्रारंभिक जांच में पता चला कि प्लांट द्वारा 500 मीटर की परिधि में खनन किया जा रहा है। हालांकि शाम होने के कारण आबादी से खनन स्थल की दूरी का सटीक मापन नहीं हो पाया, जिसके लिये बुधवार सुबह 10 बजे का समय तय किया गया। इससे पहले जोधपुरा में जारी धरने पर ग्रामीणों ने अधिकारियों के सामने अपनी समस्यायें विस्तार से रखी और यह स्पष्ट किया कि जब तक उनकी मांगों पर ठोस कार्यवाही नहीं होती आंदोलन जारी रहेगा। इस मौके पर रामनिवास योगी, राकेश योगी, हरफूल, प्रभुदयाल, रामावतार यादव, हरिराम यादव समेत अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

बिजली पोल को लेकर दो पक्षों में विवाद

कोटा, (निसं)। महावीर नगर इलाके में बिजली पोल लगाने को लेकर दो पक्षों में जमकर हंगामा हो गया, दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर लाठियां बरसाना शुरू कर दिया। जानकारी के अनुसार निजी बिजली के कर्मचारी जब बिजली का पोल लगाने के लिये महावीर नगर इलाके के विस्वकर्मा नगर में पहुंचे तो एक हार्डवेयर दुकानदार और होटल मालिक के बीच पोल को आमने-सामने ना लगाने को लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया और देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों पक्षों में एक-दूसरे पर डंडे बरसाने शुरू कर दिये। महावीर नगर थानाधिकारी भुपेन्द्र सिंह ने बताया कि निजी बिजली कंपनी द्वारा पोल लगाने की कार्यवाही की जा रही थी, जिसको लेकर दो पक्षों में हंगामा हुआ था। हार्डवेयर दुकानदार ने शिकायत दी है। जिस पर मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

वूमेनिया प्रदर्शनी के पोस्टर का विमोचन किया

कोटा, (निसं)। भारतीय महिलाएं घरों में खाली बैठने के बजाय कुछ न कुछ बनाती रहती हैं। ऐसी महिलाओं को उद्यमिता की ओर अग्रसित करके एवं पहले से मौजूद महिला उद्यमियों की अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं को पूरा करने की दृष्टी से कैट वीमेन विंग व श्री धाकड़ महासभा महिला ईकाई, कोटा महानगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वूमेनिया-लाइफस्टाइल एक्जीबिशन की पहल महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण को मजबूत करने में सहायक होगी। यह उद्गार वूमेनिया-लाइफस्टाइल एक्जीबिशन के पोस्टर का सर्किट हाउस स्थित सभागार में विमोचन करते हुये डॉ. सतीश पूनियां ने कहे।

झालावाड़ रोड स्थित माहेश्वरी भवन में दो दिवसीय आगामी 13-14 दिसम्बर को आयोजित वूमेनिया-लाइफस्टाइल एक्जीबिशन में एक ही छत के नीचे भारत के विभिन्न प्रांतों के उत्पाद मिलने से शहरवासियों को शॉपिंग की सुविधा मिलेगी। यहां लोग परिवार सहित खरीदारी के साथ फूड कोर्ट का आनंद ले सकेंगे। एक्जीबिशन में एक ही छत के नीचे हर तरह के उत्पादों की स्टॉल्स है। फूड जोन में लोग स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद ले सकेंगे। कैट वीमेन विंग व श्री धाकड़ महासभा महिला ईकाई कोटा महानगर द्वारा महिलाओं के उत्थान के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं व सहयोग के लिये भी समर्पित रूप से कार्य कर रहा है। पोस्टर विमोचन के अवसर टीम की नीलम विजय तृप्ति नागर, भाविका प्रीत रमानी, चंचल नगर, प्राची शर्मा, एडवोकेट तनीषा बादल, मिलन सुवालका, आकांक्षा गुप्ता, वंदना नागर, कल्पना नागर, सरोज नागर, रीना विजय, नंदिनी विजय, भावना नागर और सुनीता नागर उपस्थित रहे।

संक्षिप्त

साइबर धोखाधडी मामले में आरोपी गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन वर्तमान में बढ़ रहे साइबर अपराध की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत जिला डीएसटी प्रभारी ओमप्रकाश चौधरी के नेतृत्व में गठित टीम एवं थाना अलीगढ़ पुलिस टीम ने 8-10 लाख रूपये की ऑनलाईन ठगी करने वाले साइबर अपराधी को डिटेन किया। कार्यवाही में सामने आया कि आरोपी एक होटल में बैठकर अपने मोबाईल से साईबर ठगी का काम कर रहा था, जिसके विरूद्ध प्राथमिकी जांच में अब तक 9 ऑनलाईन साइबर धोखाधड़ी की शिकायतें दर्ज होना पाया गया है। आरोपी चन्द्रेश मीना पुत्र हंसराज मीना, उम्र 30 साल निवासी उदयपुरिया थाना उनियारा को गिरफ्तार कर उससे पूछताछ की जा रही है, जिससे साईबर अपराधो के खुलने की संभावना है। आरोपी कई सोशल मिडिया चेनल के माध्यम से आमजन को लालच दिखाकर साइबर ठगी करता था, जो जिले के अलावा दिल्ली, गुजरात सहित कई राज्यों के व्यक्तियों को झांसे में लेकर उनके साथ ऑनलाईन साइबर धोखाधडी का कार्य करता था। आरोपी के कब्जे से एक स्मार्ट फोन जप्त किया गया है।

युवा महोत्सव आयोजित

टोंक। मुख्यालय स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय कोहना में जिला स्तरीय राजस्थान युवा महोत्सव आयोजित किया गया। इस आयोजन में 15 से 29 साल के कुल 1277 युवाओं ने पंजीकरण कराया, जिनमें अधिकांश प्रतिभागी स्कूलों से थे। प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को तालियां बजाने पर मजबूर किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पहुंचे पूर्व विधायक और पूर्व बीजेपी जिलाध्यक्ष अजीत सिंह मेहता ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी प्रतिभाओं को मंच देते हैं और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। मेहता ने कहा कि मंच पर बच्चों ने लोक नृत्य, गीत और पारंपरिक कला की शानदार प्रस्तुति दी, इससे युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर को नई पहचान मिलती है। यह कार्यक्रम राज्य सरकार के दो साल का कार्यकाल पूरा होने पर प्रदेशभर के जिला मुख्यालयों पर राजस्थान युवा महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। जिसके तहत टोंक मुख्यालय पर यह कार्यक्रम आयोजित कर कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिसमें चित्रकला, विज्ञान मेला, कविता व कहानी लेखन, भाषण, हस्तकला व वस्त्र कला, फड़ व भित्ति चित्र और कृषि आधारित मांडना कला इत्यादि है। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी संभाग स्तरीय राजस्थान युवा महोत्सव में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

'यूरिया की आपूर्ति सुनिश्चित करें'

टोंक। जिला कलेक्टर कल्पना अर्ग्रवाल ने कृषि विभाग की योजनाओं की समीक्षा कर अधिकारियों को निर्देशित किया है कि टोंक जिले में यूरिया एवं उर्वरकों की किसानों में सतत आपूर्ति सुनिश्चित करें। उन्होंने उर्वरकों का वितरण पूर्ण पारदर्शिता के साथ करने तथा जमाखोरी और कालाबाजारी पर विभागीय अधिकारियों को मुस्तैदी से नजर रखने के निर्देश दिए। साथ ही इस कार्य में लिप्त पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया। जिला कलेक्टर ने बुधवार को कलेक्टर कक्ष में जिला स्तरीय फर्टिलाइजर वितरण टास्क फोर्स एवं धरती माता बचाओं अभियान की जिला स्तरीय समिति की बैठक ली। इस दौरान कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक वीरेन्द्र सिंह सौंलकी, उद्यान विभाग के सहायक निदेशक चन्द्र प्रकाश बडाया, इफ्कों के डीएफएम शशि कुमार, चम्बल फर्टिलाइजर के डिप्टी मैनेजर पंकज राय, पुलिस उपाधीक्षक मृत्युंजय मिश्रा समेत कृषि विभाग के अधिकारी मौजूद रहें। संयुक्त निदेशक ने बताया कि जिले में उर्वरकों के वितरण की निरंतर मॉनिटरिंग की जा रही है। किसी विक्रेता के यहां कृषकों की संख्या अधिक होने पर कृषकों को पंक्तिबद्ध किया जाकर उनकी देखरेख में उर्वरकों का वितरण किया जा रहा है।

नम्बर मिलाइए
9587884433

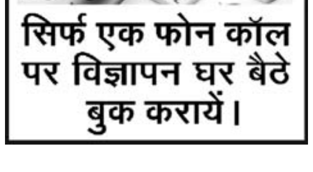

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

शैक्षिणक विजिट से छात्रों का सर्वांगीण विकास होगा : गिरिराज गुर्जर

निवाई। पीएम श्रीराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने ट्ययूनिंग ऑफ स्कूल कार्यक्रम के तहत पीएम श्री केंद्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली का शैक्षिणक विजिट किया। प्रधानाचार्य गिरिराज प्रसाद गुर्जर ने बताया कि इस विजिट का मुख्य उद्देश्य दोनों विद्यालयों के बीच शैक्षिणक व सह-शैक्षिणक गतिविधियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। छात्रों ने पीएम श्री केंद्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय व स्मार्ट कक्षाओं का अवलोकन किया। उन्होंने वहां की शैक्षिणक गतिविधियों, नवाचारों और पीएम श्री योजना के तहत संचालित विशेष कार्यक्रमों को करीब से जाना। उन्होंने बताया कि

ट्ययूनिंग ऑफ स्कूल कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को अन्य श्रेष्ठ विद्यालयों के वातावरण और पद्धितयों को जानने का अवसर मिला है। यह उनके सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस दौरान दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों ने संयुक्त रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों व खेल गतिविधियों में भाग लिया, जिससे उनके बीच सौहार्द और टीम भावना का विकास हुआ। शैक्षिणक विजिट में छात्रों ने विज्ञान और गणित प्रयोगशाला का प्रदर्शन और उपकरण संचालन की जानकारी ली। नवीनतम पुस्तकों और डिजिटल संसाधनों का परिचय लिया।

पीएम श्री केंद्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली में छात्रों ने शैक्षिणक गतिविधियों की जानकारी ली।

- **पीएम श्री विद्यालय निवाई के विद्यार्थियों ने पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय देवली का शैक्षिणक भ्रमण किया**

छात्रों द्वारा तैयार की गई कलाकृतियों, पेंटिंग का अवलोकन किया। पीएम श्री केंद्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवली के प्रधानाचार्य नवरत्न मित्तल ने विद्यार्थियों को पीएम श्री योजना के उद्देश्यों और शिक्षा के महत्व पर मार्गदर्शन दिया।

उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। मुख्य अध्यापक धर्मराज मीणा ने विद्यालय के बारे में जानकारी दी। इस विजिट में विद्यालय के 25 विद्यार्थी व 9 शिक्षकों ने भाग लिया।

यूरिया के लिए किसानों की भीड़

पावटा। फसलों के लिए आवश्यक यूरिया खाद को लेने के लिए बड़ी संख्या में किसान टोरडा सहकारी समिति में पहुंचे। सर्दी ने किसानों की परेशानी ओर बढ़ा दी है। ग्राम टोरडा स्थित सहकारी समिति पर यूरिया खाद लेने के लिए किसानों की सुबह से ही लंबी कतारें लग गई, यूरिया खाद की सीमित आपूर्ति और अत्यधिक मांग के चलते किसानों को घंटों ठंड में खाद के लिए इंतजार करना पड़ा। सुबह से ही लगी किसानों की लंबी कतारें प्रबंधन के लिए चुनौती बन गई। कृषि अधिकारी जयप्रकाश व सोहनलाल ने बताया कि टोरडा सहकारी समिति में कुल 600 यूरिया के कट्टे उपलब्ध हुए थे, जिन्हें 2 घंटे के अंदर किसानों को वितरित किया गया। वही अभी 2000 कट्टों की और आवश्यकता है। समिति की देखरेख में वितरण प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता के साथ संपन्न हुई। किसानों की संख्या अधिक होने के कारण आपूर्ति के दौरान किसानों को थोडी परेशानी का सामना करना पडा। वहीं किसानों ने मांग की है कि रबी की फसल को देखते हुए यूरिया की आपूर्ति को बढ़ाया जाए, ताकि उन्हें परेशानियों का सामना न करना पडे। यूरिया खाद की मांग अधिक होने के कारण वहां आई एक गाडी मात्र दो घंटे में खाली हो गई। कई किसानों को खाद नहीं मिल सका और उन्हें मायूस होकर खाली हाथ लौटना पड़ा।

योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील

- **आंतेला के ग्राम नीलका में वाटरशेड महोत्सव का आयोजन**
- **कार्यक्रम में विभागीय कार्यों एवं योजनाओं की जानकारी दी, विभिन्न स्टॉल्स एवं प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन**

पावटा। जलग्रहण विकास एवं भूसंरक्षण विभाग द्वारा मंगलवार को विराटनगर ब्लॉक की ठााम पंचायत आँतेला के ठााम नीलका में विकसित चारागाह विकास कार्य घर में वाटरशेड महोत्सव का आयोजन किया गया। विधायक विराटनगर कुलदीप धनखड़ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। विधायक धनखड़ ने ठाामवासियों से योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की एवं जलठाहण विकास एवं भू संरक्षण विभाग द्वारा किये गये कार्य सराहना करते हुए चारागाह विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया।

उन्होंने इस दौरान वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आँतेला के विद्यार्थियों द्वारा प्रभात फैरी का आयोजन किया गया। बालक-बालिकाओं द्वारा निबंध व रंगोली प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया। विभाग से अधीक्षण अभियंता हरिमोहन बैरवा ने विभागीय परियोजना प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया।

उन्होंने बताया कि पीएमकेएसवाई 2.0 योजनार्न्तगत ब्लॉक विराटनगर में कुल 354 कार्य करवाए गए है जिनमें ईसीडी निर्माण, अमृत सरोवर, तालाब रिनोवेशन, एनिकट, फार्मपॉण्ड, एमपीटी, पीटी, रिचार्ज शाफ्ट, सबसरफेस बैरियर व अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त 2000 से अधिक जलठाहण निवासियों को बाजरा, गेहू, मटर प्रदर्शन, चाफ कट्टर मशीन, स्प्रे मशीन व रेनगन से लाभांवित किया जा चुका है। अधिक्षण अभियंता ने बताया कि चारागाह में 2500 पौधे लगाये गए है जिनमें 2000 पौधे उद्यानिकी व 500 पौधे वानिकी के हैं। कार्यक्रम में राजीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा स्व निर्मित उत्पादों की स्टॉल लगायी गयी। जिनमें महिलाओं ने स्वनिर्मित अगरबत्ती, हैंडीक्राफ्टस ब्यूटी प्रोड्क्ट्स व खाद्य उत्पादों की प्रदर्शनी लगायी। समूह की महिलाओं द्वारा बताया गया कि वाटरशेड डिपार्टमेंट के द्वारा टी वन व टी टू के तहत रिवॉल्वंग फण्ड दिया गया है। कार्यक्रम के दौरान विराटनगर एसडीएम कपिल उपाध्याय, तहसीलदार लालाराम यादव व अन्य विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

महिला व बालिका हिंसा को रोकने के लिए जागरूक किया

- **जेंडर समानता को बढ़ाने के लिए सेवा प्रदाताओं की बैठक**

निवाई। सिकोईडीकोन संस्था के तत्वावधान में सदर पुलिस थाना परिसर में जेंडर पर आधारित हिंसा को समाप्त करने व जेंडर समानता को बढ़ाने हेतु सेवा प्रदाताओं के साथ ब्लॉक स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया।

शाखा प्रभारी अनीता शर्मा ने बताया कि 10 दिसंबर तक जेंडर आधारित शिक्षा को समाप्त करने व जेंडर समानता को बढ़ाने हेतु अभियान चलाया गया है। जिसमें ठााम पंचायत स्तर पर विद्यालय में बच्चों व समुदाय तथा जनप्रतिनिधियो के साथ बैठके आयोजित कर महिलाओं व बालिकाओं से जुडे मुद्दों पर चर्चा की गई। महिलाओं एवं बालिकाओं पर होने वाली हिंसा को रोकने के लिए समुदाय को जागरूक किया गया।

कार्यक्रम में पुलिस निरीक्षक राजेंद्र प्रसाद ने महिलाओं पर होने वाली हिंसा एवं उसकी रोकथाम के लिए किए जाने वाले प्रयासों की जानकार दी एवं जेंडर समानता को बढ़ाने के लिए संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयासों में भागीदारी निभाने के लिए आश्वस्त किया।

अर्जुनदेव बैरवा ने महिलाओं पर होने वाली हिंसा पर चर्चा करते हुए बताया कि शारीरिक हिंसा के साथ मानसिक और आर्थिक हिंसा की रोकथाम में महिला सलाह एवं सुरक्षा केंद्र व पुलिस प्रशासन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

महिला सलाह सुरक्षा केंद्र से सुनीता शर्मा व एडवोकेट नीतूसिंह विजय ने महिला सलाह एवं सुरक्षा केंद्र द्वारा महिलाओं के लिए दी जाने वाली सेवाओं की जानकारी दी। हेड कांस्टेबल गजराज सिंह, अनिल कुमार, लक्ष्मी नागरवाल, राजेश कुमार, रामनरेश व दिनेश कुमार ने भी विचार व्यक्त किए।

सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रम

टोंक। राज्य सरकार के दो वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'नव उत्थान-नई पहचान, बढ़ता राजस्थान-हमारा राजस्थान' की थीम पर 25 दिसम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमों का भव्य आयोजन होगा। जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल ने बताया कि बुधवार, 10 दिसम्बर को राज्य स्तरीय प्रवासी राजस्थान दिवस के साथ इन कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। जिसके तहत ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर पॉलिसी, व्यापार प्रोत्साहन नीति, निजी औद्योगिक पार्क योजना के लिए नीति, सेमीकण्डक्टर पॉलिसी, एयरोस्पेस एण्ड डिफेंस पॉलिसी, व्हीकल स्क्रैपिंग नीति, ट्रांजिट ऑरियन्टेड डवलपमेंट पॉलिसी, ग्रीन ग्रोथ क्रेडिट पॉलिसी व आयुष नीति का विमोचन किया जाएगा। इसी प्रकार 11 दिसम्बर को एनआरआर चैप्टर्स के साथ संवाद आयोजित होगा। 12 दिसम्बर को बदलता राजस्थान बढता राजस्थान के तहत विधानसभा क्षेत्रों के लिए रथों की रवानगी की जाएगी, साथ ही नवाचार दिवस (कॉन्क्लेव) के तहत स्टार्ट अप कॉन्क्लेवध्आई स्टार्ट कार्यक्रम, राजस्थान वेंचर कैपिटल फण्ड का शुभारम्भ किया जाएगा। इसी प्रकार 13 दिसम्बर को 15 दिवसीय सड़क सुरक्षा अभियान का शुभारम्भ होगा व 14 दिसम्बर को स्वच्छता कार्यक्रम के तहत मंदिरों, स्मारकों आदि को साफ-सफाई, स्वच्छ भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित होगें। 15 दिसम्बर को राज्य स्तरीय समारोह (मुख्य आयोजन एवं लाभार्थी सम्मेलन) आयोजितं। इसी प्रकार 16 दिसम्बर को जिला स्तर पर तीन दिवसीय प्रदर्शनी का शुभारम्भ एवं राजकीय कार्यालयों में एक घण्टे का साफ-सफाई अभियान, 17 दिसम्बर को सात दिवसीय ग्रामीण एवं शहरी सेवा फोलोअप शिविरों का शुभारम्भ, 18 दिसम्बर को महिला सम्मेलन, 19 दिसम्बर को किसान सम्मेलन पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत मिशन लाइफ के अंतर्गत जागरूकता अभियान, नमो नर्सरियों में बीज रोपण, 24 दिसम्बर को पर्यटन कॉन्क्लेव हवेलियों से हरियाली (इको-ट्यूरिज्म) के तहत नई पर्यटन नीति व फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति का विमोचन किया जायेगा।

पावटा शहर में ट्रैफिक व्यवस्था बदहाल

- **एक माह पूव थाना प्रभारी कश्मीर सिंह के कार्यकाल में यातायात व्यवस्था में सुधार देखने को मिला था। उनकी नियमित गश्त के चलते लोगों को जाम से काफी हद तक राहत मिली थी, उनके तबादले के बाद एक बार फिर जाम की समस्या हो गई**

पावटा। शहर में ट्रैफिक व्यवस्था दिनों-दिन बदतर होती जा रही है। मुख्य सडकों पर रोजाना लगने वाले जाम से आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड रहा है। सुबह और शाम के समय जाम की स्थिति और भी भयावह हो जाता है, जिससे कार्यालय जाने वाले कर्मचारी, स्कूली बच्चे और आम नागरिक घंटों जाम में फंसे रहते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि सडकों के किनारे अव्यवस्थित तरीके से खडी गाडियां और टोटो चालक कहीं भी वाहन रोककर सवारी उतारने-चढ़ाने की प्रवृत्ति इस समस्या को और गंभीर बना रही है। बाजार इलाकों में तो हालात और भी खराब हो जाते हैं, जहां पैदल चलने तक की जगह नहीं बचती।

शहर की सडकों पर पर्याप्त ट्रैफिक पुलिस की तैनाती नहीं होने के कारण जाम को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। कई बार एंबुलेंस और आपातकालीन सेवाओं के वाहन भी जाम में फंस जाते हैं। हालात ऐसे हैं कि कुछ ही देर में सडक पर चलना तो दूर, पैदल निकलना भी मुश्किल हो जाता है। गौरतलब है कि करीब एक माह पूर्व रहे थाना प्रभारी कश्मीर सिंह के कार्यकाल में यातायात व्यवस्था में सुधार देखने को मिला था।

उनकी नियमित गश्त और सख्ती के चलते लोगों को जाम से काफी हद तक राहत मिली थी, लेकिन उनके तबादले के बाद एक बार फिर जाम की समस्या जस की तस लौट आई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि वर्तमान में पुलिस की सक्रिय मौजूदगी नजर नहीं आ रही, जिससे अराजक स्थिति बनती जा रही है। स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से यातायात व्यवस्था सुधारने, अवैध पार्किंग पर कार्रवाई करने और प्रमुख चौक-चौराहों पर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती सुनिश्चित करने की मांग की है। यदि पुलिस द्वारा नो-पार्किंग, अतिक्रमण हटाने और गलत तरीके से खडे वाहनों पर सख्ती की जाए, तो जाम की समस्या से राहत मिल सकती है। लोगों ने याद दिलाया कि पूर्व थाना प्रभारी कश्मीर सिंह लगातार यही प्रयास करते थे, जिससे कस्बे को जाम से कुछ हद तक निजात मिली थी। अब कस्बेवासियों की मांग है कि नव नियुक्त थाना प्रभारी भी यातायात व्यवस्था को गंभीरता से लें और ठोस कदम उठाएं, ताकि पावटा को एक बार फिर जाम की समस्या से राहत मिल सके।

कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित

टोंक। अग्रवाल धर्मशाला में बुधवार को राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार एसोसिएशन का कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें देश भर से आए अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश सिंह तोमर ने वर्तमान सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि 2005 के बाद कर्मचारियों को पेंशन नहीं है, जनप्रतिनिधियों को हर बार की पेंशन मिलती है, उन्होने बताया कि दलितों पर राजस्थान में ही नहीं, देश में कहीं भी अत्याचार हो रहा है तो सगठन द्वारा जिला कलेक्टर व जिला पुलिस अधीक्षक को चेतायेगें। इसी क्रम में आगे बैरवा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामदयाल बैरवा ने कहा राष्ट्रीय मानवाधिकार एसोसिएशन राजस्थान में कमजोर है, इसे मजबूत करने की जरूरत है, इसका कार्ड लेकर जब कोई थाने, प्रशासन के पास जाता है तो कोई वैल्यू नहीं समझता, इसलिए संगठन को मजबूत करें, आज भी दलितो द्वारा मूंछ रखने पर मर्डर तक किया जा रहा है।

कैदियों को जेल में रहते हुये बेहतर बनाने का आव्हान

कोटपूतली। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार दिसम्बर माह के एक्शन प्लान को लेकर बुधवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष शिवानी सिंह की अध्यक्षता में जिला कारागृह में विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस मौके पर एडीजे प्रथम डॉ. राजेश कुमार, एडीजे चतुर्थ डॉ. सुरेश कुमार, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव डिम्पल जंडैल आदि भी मौजूद रहे। जिला जज शिवानी सिंह ने कैदियों को मानवाधिकार के इतिहास एवं महत्व के बारे में बताया। एडीजे प्रथम डॉ. राजेश कुमार ने कैदियों को जेल में रहते हुये स्वयं को बेहतर बनाने की बात कही। एडीजे चतुर्थ डॉ. सुरेश कुमार ने कैदियों को जेल में रहते हुये शिक्षा प्राप्त करने पर जोर दिया। सचिव डिम्पल जंडैल ने

कोटपुतली जिला कारागृह में विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता शिविर का आयोजन किया।

कैदियों के हित में किए गए कार्यो को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने जेल में निरूद्ध एक दिव्यांग कैदी को जयपुर फुट लगवाया एवं अन्य आर्थिक रूप से कमजोर कैदियों को प्राधिकरण की ओर से निःषुल्क विधिक सहायता उपलब्ध करवाई गई। वहीं कैदियों को उनसे जुड़े अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

वहीं दुसरी ओर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोपालपुरा में एडीजे तृतीय अंजुम खान की अध्यक्षता में षिविर का आयोजन हुआ। जहां एडीजे तृतीय अंजुम खान ने विधार्थियों को मानव अधिकारों के महत्व के बारे में बताया। उन्होनें विधार्थियों को अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी सजग होने हेतु प्रेरित किया। सचिव डिम्पल जंडैल द्वारा विधार्थियों को राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा चलाए गए अभियान सार्वजनिक उपयोगिता सेवा के बारे में भी बताया। जिसके तहत किसी भी प्रकार की सार्वजनिक समस्या के लिए लोग जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में सम्पर्क कर सकते है। सिविल न्यायाधीष एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट पूजा धानिया ने विधार्थियों को मानव के रूप में अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुये अपने कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। जिससे वे एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें।

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है मैं राजेन्द्र कट्टा सार्वजनिक रूप से घोषित करता हूँ कि मेरा पुत्र प्रखर कट्टा मेरे कहने में नहीं है तथा आये दिन मेरे साथ अभद्र तथा गलत व्यवहार एवं झगडा करता है इस कारण मै मेरे पुत्र प्रखर कट्टा से अब कोई पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक या कानुनी संबंध नही है। हमारी समस्त चल व अचल सम्पतियों के संबंध में या अन्य कोई लेन देन, ऋण अथवा संव्यवहार आदि करेगा तो वह अवैध, अमान्य एवं शून्य होगा और इसके लिये वो स्वयं जिम्मेदार होगा, और उसके कार्यो के लिये मैं जिम्मेदार नही रहूंगा।

भवदीय
राजेन्द्र कट्टा पुत्र स्वर्गीय श्री भगवान सहाय कट्टा निवासी बी-26, विजय बारी, पथ नं. 7, सीकर रोड, तीन दुकान एरिया, जयपुर मोबाईल -9829012581
जयपुर दिनांक 10/12/2025

आम सूचना
मकान नं. 1275 हनुमानजी के मंदिर के पास, चांदपोल बाजार, जयपुर मेरे अभिभाष्य डॉ. न्याय व्रत पुत्र आचार्य कल्याण शर्मा के स्वामित्व व कब्जे की सम्पत्ति है। किसी भी व्यक्ति द्वारा अनाधिकृत अतिक्रमण करने पर उसके खिलाफ आपराधिक कानूनी कार्यवाही की जावेगी।
अशोक देवानी, एडवोकेट, मो. 9829064041

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
क्रमांक: F-JDA/Zone 14/2025/D-126 आम सूचना
आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 269395 दिनांक 30/11/2025 को निम्नांकित भूखण्ड का Name Transfer जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है

क्र.सं.	आवेदक का नाम	मूल आवंटी/लीजधारक का नाम	भूखण्ड संख्या	भूखण्ड क्षेत्रफल	गृ.नि.स.सं./निजी खातेदारी/जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिसके लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
1.	Mahesh Chand Meena S/o Ramkripal Meena	डॉ. बाबू लाल जाटावत पुत्र श्री जीवन लाल जाटावत	452	266.66 Sq. yard	Private	Sanganer Officers Campus Vistar Part I Sector/ Block-A	Name Transfer	[illegible]

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में Name Transfer जारी करने पर किसी व्यक्ति, वरिष्ठ एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर jda.rajasthan.gov.in पर जाकर Objection module के माध्यम से अपनी online दर्ज करें, अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।

कार्यालय उपायुक्त मालवीय नगर जोन, नगर निगम जयपुर
(नई विधानसभा के पास, लालकोठी, जयपुर)
क्रमांक-एफ( )/न.नि.ज./मा.न.जोन/2025/2668 दिनांक-9.12.2025
सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर के द्वारा भूखण्ड संख्या 105बी, विजय नगर ए करतारपुरा जयपुर गुलाबबाडी गृ.नि. सहकारी समिति जयपुर का पट्टा विलेख जिसका कुल क्षेत्रफल 198.05 वर्गगज का श्री मुन्ना लाल गर्ग पुत्र स्व. श्री रामविलास गर्ग के नाम से 08.05.2002 को जारी किया गया है। मूल पट्टेधारी श्री मुन्ना लाल गर्ग पुत्र स्व. श्री रामविलास गर्ग की मृत्यु दिनांक 10.01.2023 एवं आवेदक की बहन श्रीमती मधु मित्तल की मृत्यु दिनांक 11.05.2019 को हो चुकी है। मूल पट्टेधारी श्री मुन्ना लाल गर्ग पुत्र स्व. श्री रामविलास गर्ग की मृत्यु पश्चात इनके शेष वारिसानों (सजरा अण्डरटेकिंग के आधार पर) के द्वारा दिनांक 26.11.2024 को रजिस्टर्ड हक त्याग पत्र आवेदक श्री अनिल कुमार गर्ग पुत्र स्व श्री मुन्ना लाल गर्ग के पक्ष में किया गया है। आवेदक श्री अनिल कुमार गर्ग पुत्र स्व. श्री मुन्ना लाल गर्ग के द्वारा आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत किये गये दस्तावेजों रजिस्टर्ड हक त्याग पत्र, शपथ पत्र-सजरा (अण्डरटेकिंग), रजिस्टर्ड पट्टा, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेजों की छायाप्रति के आधार पर भूखण्ड संख्या 105बी, विजय नगर ए करतारपुरा जयपुर गुलाबबाडी गृ.नि. सहकारी समिति जयपुर का नाम हस्तान्तरण श्री अनिल कुमार गर्ग पुत्र स्व. श्री मुन्ना लाल गर्ग के पक्ष में किया जाना है। इस नाम हस्तान्तरण बाबत किसी भी व्यक्ति संस्था, फर्म, कम्पनी को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय (उपायुक्त मालवीय नगर जोन नगर निगम जयपुर) में प्रस्तुत करें, अन्यथा निर्धारित समयावधि की समाप्ति के बाद, नियमानुसार नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही सम्पादित कर दी जावेगी।
उपायुक्त, मालवीय नगर जोन, नगर निगम, जयपुर

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
(व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4)
न्यायालय पारिवारिक न्यायालय क्र.सं. 1 जयपुर महानिगर
ममता विरुद्ध महेन्द्र
वाद/प्रार्थना पत्र 13 HMD
प्रार्थना-पत्र संख्या-891/24 सन्
नाम महेन्द्र कुमार शर्मा पुत्र स्व. ओकार दत्त जाति...पता 225, जयपुर पुलिस थाना करणी विहार
उक्त प्रार्थिया ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि नकल संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 20 माह 02 सन् 2026 को ... पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश को सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 08 माह 12 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
आज्ञा से-वरिष्ठ मुन्सरिम
मोहर अदालत पारिवारिक न्यायालय क्रम-1 जयपुर महानगर प्रथम

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 13/25
विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी नाम ग्यारसी देवी पत्नी जगदीश जाति गुर्जर निवास स्थान चतरपुरा देवीपुरा तहसील शाहपुरा जिला जयपुर
मृतक राजूराम पुत्र जगदीश गुर्जर चतरपुरा की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांक- 20.12.2025
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम कालूराम पुत्र जगदीश जाति गुर्जर निवासी चतरपुरा का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रिेशन, प्रदान किया जावें।
अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 20 माह 12 सन् 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आज दिनांक 09 माह 12 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
आज्ञा से-(ललिता शर्मा)
अपर जिला न्यायाधीश सं.1
मोहर अदालत शाहपुरा (जयपुर जिला राज.)

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्यगण अभिलाषा पत्नी श्री जगदीश गुर्जर, संतरा पत्नी श्री गणेश गुर्जर, सीमा देवी पत्नी श्री सुरेश गुर्जर, निवासीगण-गाजी बाबा की ढाणी, गुर्जरों की तलाई, सांगानेर जयपुर व श्री ओमप्रकाश चौधरी पुत्र श्री गोपाल चौधरी, निवासी मांग्यावास, सांगानेर जयपुर के मध्य एक रसीद दिनांक 11.06.2025 को आराजी खसरा नम्बर 535/81, 538/85,541/116, 543/83/82 कुल खसरा 05 कुल रकबा 2.1465 हैक्टेयर, पटवार हल्का हीरापुरा, भू अभिलेख निरीक्षक क्षेत्र हरसूलिया, तहसील माधोराजपुरा, जिला जयपुर के संबंध में निष्पादित की गयी थी लेकिन श्री ओमप्रकाश चौधरी द्वारा उक्त रसीद में लिखी गयी शर्तों की पालना नहीं करने पर मेरे अभिभाष्यगण ने 11 लाख रूपये की राशि वापिस ओमप्रकाश चौधरी को रूबरू गवाहान लौटा दी है तथा रसीद दिनांक 11.06.2025 को निरस्त कर दिया है तथा उपरोक्त वर्णित सम्पत्ति से ओमप्रकाश चौधरी का किसी प्रकार का कोई संबंध व सरोकार नहीं है। तथा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ओमप्रकाश चौधरी के पास मौजूद रसीद दिनांक 11.06.2025 के अनुसरण में किसी प्रकार का कोई संव्यवहार ओमप्रकाश चौधरी के साथ नहीं करें यदि किसी व्यक्ति संस्था/कम्पनी द्वारा कोई ऐसा संव्यवहार किया जाता है तो ऐसा संव्यवहार मेरे अभिभाष्यगण के प्रति प्रारंभ से ही अवैध एवं प्रभावशून्य समझा जावेगा। सूचित रहे।
दिनांक-10.12.2025 (रूस्तम शेख) एडवोकेट मो. 9414248148

नाम परिवर्तन

मैं अब तक अजीत सिंह पुत्र श्री रामपाल मीना निवासी ग्राम रूंध सिरावास,तह. अलवर, जिला अलवर ने अपना नाम परिवर्तन कर लिया है तथा अब इसके बाद मुझे अजीत सिंह मीना (Ajit Singh Meena) के नाम से जाना जावें

मैं अब तक लक्ष्मी मीना पति अजीत सिंह मीना निवासी ग्राम रूंध सिरावास, तह. अलवर, जिला अलवर ने अपना नाम परिवर्तन कर लिया है तथा अब इसके बाद मुझे लक्ष्मी देवी (Laxmi Devi) के नाम से जाना जावें

मै आर्मी नं. 2714775P नायक विनोद मेघवंशी यूनिट 24 गार्ड्स (17 ग्रेनेडियर्स) है। मेरे सैन्य दस्तावेजों में मेरे पिताजी का नाम हरिराम मेघवंशी (HARIRAM MEGHWANSHI) है जो की गलत है मेरे पिताजी का सही नाम हरि राम (HARI RAM) है।

I have changed my name from Chaitanya to Chaitanya Singh D/o Giriraj Singh R/o D-135, Mahaveer Marg, Hanuman Mandir, Ambabari, Vidhyadhar Nagar, Jaipur. For all purpose.

खोया पाया

सूचित किया जाता है कि मेरा चेक नं. 114038114039 दीपक पारीक के नाम बैंक ऑफ इंडिया वैशाली नगर जयपुर का जारी था वो खो गया है जिसे मिले कृपया सूचित करें। मो. 8696316175

मेरे मकान नंबर 5-एच-73, इंदिरा गांधी नगर जयपुर का मूल अलॉटमेंट लेटर एवं अन्य कागजात जयपुर में कहीं गिर गए मिलने पर सूचित करें। 9653999692

तोपखाना देश गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना ओम नगर जयपुर का प्लॉट नम्बर 44 के जेडीए पट्टा के साथ का नक्शा कहीं गिर गया। मिलने पर सूचित करें। सुमित रंजन 9634758888

मेरे नाम का हिस्सा प्लॉट जो कि खसरा नम्बर 454/2 मंगला मार्ग आयुर्वेद कॉलेज के पास ब्रह्मपुरी आमेर रोड जयपुर का असल विक्रय पत्र कहीं गिर गया है मिलने पर सूचित करें-पुष्पराज जैन 8058678738

गोपालपुरा गृह निर्माण सहकारी समिति लि. की आवासीय योजना जनक विहार, जयसिंहपुरा तहसील सांगानेर जयपुर में स्थित भूखण्ड संख्या बी-7, की श्री रघुनन्दन बंसल द्वारा प्रहलाद बागडा को विक्रय की गई मूल विक्रय पत्र दिनांक 23.02.2007 (चैन ऑफ डॉक्यूमेन्ट) कहीं खो गया है। मिलने पर सूचित करें। (श्रीमती ऋचा शर्मा एवं नीलम शर्मा 9828230001, 9413200122)

गोपालपुरा गृह निर्माण सहकारी समिति लि. की आवासीय योजना जनक विहार, जयसिंहपुरा तहसील सांगानेर स्थित भूखण्ड संख्या बी-8, की श्री श्याम बंसल द्वारा लालाराम बागडा को विक्रय की गई मूल विक्रय पत्र दिनांक 23.02.2007 (चैन ऑफ डॉक्यूमेन्ट) कहीं खो गया है। मिलने पर सूचित करें। (श्रीमती नीलम शर्मा 9413200122)

Maya Devi W/o late Jugal Kishor Verma 4da 23 Housing Board Shastri Nagar Jaipur property documents allotment later declaration latter and possession laters lost somewhere, if anybody found please contact 8003110000

कार्यालय नगर निगम जयपुर
(नन्दपुरी रेल्वे अण्डरपास के पास, जगतपुरा, जयपुर)
क्रमांक :- जसअ/2025/330 दिनांक: 05.12.2025
ई-निविदा सूचना संख्या - 01/2025-26
केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत उपर्युक्त श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम जयपुर के पंजीकृत निविदाताओं से अधिशाषी अभियन्ता झालाना जोन से संबंधित विकास कार्यो हेतु निविदाए आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम जयपुर की वेबसाईट www.jaipurmc.org.com व राजस्थान सरकार के पोर्टल http://sppp.raj.nic.in तथा http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड़ की जा सकती है। उक्त निविदाओं को (sppp.rajasthan.gov.in) पोर्टल पर अपलोड करवा दिया गया है।
(UBN No.-JMC2526WSOB02141)
अधिशाषी अभियन्ता
झालाना जोन
राज.संवाद/सी/25/15405 नगर निगम जयपुर

कार्यालय चिकित्सा अधिकारी प्रभारी
सामु. स्वा. केन्द्र, किशनगढबास
क्रमांक-516 दिनांक-10.12.2025
सामु. स्वा. केन्द्र किशनगढ बास में वर्ष 2026 हेतु निम्नानुसार फर्मो/पंजीकृत एजेन्सीयों से सीलबंद निविदायें आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	निविदा फार्म प्राप्त करने की दिनांक व समय	निविदा फार्म जमा कराने की दिनांक व समय	निविदा खोलने की दिनांक व समय	अनुमानित लागत वार्षिक	आमनत राशि
1	लैब एवं एक्स-रे रिजेन्टस हेतु	20.12.2025 दोपहर 12 बजे तक	20.12.2025 दोपहर 1 बजे तक	20.12.2025 दोपहर 2 बजे	900000	20000

निविदा का विस्तृत विवरण/शर्ते कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
चिकित्सा अधिकारी प्रभारी
सामु.स्वा. केन्द्र किशनगढबास

संक्षिप्त

व्यावसायिक शिक्षा पर गेस्ट लेक्चर

निवाई। स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल में इसी सत्र से शुरू हुई व्यावसायिक शिक्षा को लेकर गेस्ट लेक्चर का आयोजन किया गया। जिसमें व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत बैंकिंग फाइनेंशियल सर्विसेज एंड इंश्योरेंस विषय का चयन किया गया। जिसमें 40 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया है। कार्यक्रम के गेस्ट लेक्चर रिटायर्ड प्रिंसिपल हीरालाल गुर्जर द्वारा बच्चों को इंट्रोडक्शन ऑफ़ बैंकिंग एंड माइक्रोफाइनेंस सिस्टम के बारे में बताया गया। साथ ही बैंकिंग की कार्य प्रणाली वित्तीय सेवाओं व बीमा क्षेत्र और रोजगार संभावनाओं की विस्तृत जानकारी दी। गेस्ट लेक्चर हीरालाल गुर्जर ने छात्राओं को बताया कि आधुनिक अर्थ-व्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है और योग्य युवाओं के लिए इसमें असीम अवसर पर उपलब्ध है। प्रधानाचार्य कुंभाराम चौधरी ने बताया कि वर्तमान समय में कौशल आधारित शिक्षा का युग है। व्यावसायिक शिक्षा विषय भविष्य में कैरियर निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा। व्यावसायिक शिक्षा प्रभारी पूजा चंदला ने अतिथियों का स्वागत कर विषय पर परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

खेल महोत्सव का शुभारंभ 14 को

शाहपुरा । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान पर जयपुर ठामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में सांसद खेल महोत्सव 2025 का शुभारंभ शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र में दिनांक 14 दिसम्बर 2025 को होने जा रहा है। भाजपा जयपुर जिला देहात उत्तर मीडिया प्रभारी सुभाष जोशी ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन अमरसर में चौकी का बड़, खेल मैदान में सुबह 10 बजे तथा श्री कल्याण सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहपुरा के खेल मैदान में दोपहर 2 बजे से कबड्डी, वालीबाल, दौड़ 100 मीटर व 200 मीटर का आयोजन होगा।

छात्राओं को मूल अधिकारों की जानकारी

निवाई। राजकीय कन्या महाविद्यालय में मानवाधिकार दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सहायक आचार्य ने मुकेशकुमार मीणा ने मानवाधिकार दिवस पर मूल अधिकारों का वाचन करते हुए मूल अधिकारों की महत्ता व आवश्यकता पर विस्तृत व्याख्यान दिया। सहायक आचार्य भूगोल कैलाशचंद महावर ने भी विचार व्यक्त किए। सहायक आचार्य संस्कृत डॉ. गुंजन विजयवर्गीय ने छात्राओं को मानवाधिकार की महत्ता की जानकारी दी। प्राचार्य डॉ. प्रीति जैन ने मानवाधिकार दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर सुनील वर्मा व महेश कुमार सहित कई छात्राएं उपस्थित रही।

आवासहीनों का कलक्ट्रेट पर प्रदर्शन

भरतपुर (निस)। भरतपुर में आवासहीनों को आवास या ज़मीन दिलाने की मांग को लेकर जिला क्लक्ट्रेट मुख्यालय पर आवासहीन जन संघर्ष समिति के बैनर तले विशाल धरना प्रदर्शन किया गया। पांच दर्जन से अधिक महिलाओं और पुरुषों ने एकजुट होकर कलक्ट्रेट के गेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। नगर निगम ने उनसे 1 साल पहले फार्म भरवा दिए थे लेकिन अब नगर निगम उन्हें आवास नहीं दे रहा है। उनकी मांग है कि उन्हें आवास दिया जाए नहीं तो वह परिवार सहित धरने पर बैठे जायेंगे । प्रदर्शन कर रही महिलाओं का कहना है उनकी आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है और भरतपुर में वह मकान नहीं खरीद सकते नगर निगम ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान देने का वादा किया था।

पावटा में रथ यात्रा, सांसद खेल महोत्सव, फॉलोअप शिविरों की तैयारी

उपखंड अधिकारी डॉ.साधना शर्मा ने राज्य सरकार के कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर निर्देश दिए ।

- पावटा में ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ
- विकास कार्यों की झांकी प्रदर्शित करने और प्रचार सामग्री को आकर्षक बनाने के निर्देश

पावटा। पंचायत समिति पावटा कार्यालय में राज्य सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक हुई। जिसमें पावटा उपखंड अधिकारी डॉ.साधना शर्मा ने बैठक की अध्यक्षता की और ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

शर्मा ने अधिकारियों से कहा कि कार्यक्रम केवल औपचारिकता न हों, बल्कि उनका प्रभाव दिखना चाहिए। उन्होंने बताया कि 12 से 25 दिसंबर तक क्षेत्र पावटा में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों रथ यात्रा (मोबाईल वेन), सांसद खेल महोत्सव, फॉलोअप शिविरों के संबंध में ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया। इस दौरान रथ यात्रा द्वारा सरकार के दो साल के विकास कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं को जनता तक पहुंचाएगी। इस यात्रा के माध्यम से गांव-गांव जाकर योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। बैठक में जानकारी दी गई कि रथ यात्रा निर्धारित समय पर प्रत्येक पंचायत मुख्यालय से गुजरेगी। इसके लिए विभिन्न विभागीय अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, ठामीण विकास और कृषि विभागों को अपने-अपने स्टॉल और सूचना सामठी तैयार रखने के निर्देश दिए गए। वही उपखंड अधिकारी साधना शर्मा ने अधिकारियों के साथ सांसद खेल महोत्सव को लेकर खेल मैदानों का निरीक्षण किया।

उपखंड अधिकारी शर्मा ने स्पष्ट किया कि रथ यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अधिकारी की जिम्मेदारी तय है और उनसे प्रतिदिन की रिपोर्ट मांगी जाएगी। अधिकारियों को आमजन की समस्याओं को मौके पर ही सुनकर उनका समाधान करने पर भी जोर दिया गया।

कार्यक्रमों में भीड़ जुटाने, पब्लिक एड्रेस सिस्टम की व्यवस्था करने, विकास कार्यों की झांकी प्रदर्शित करने और प्रचार सामग्री को आकर्षक बनाने के निर्देश भी दिए गए। एसडीएम शर्मा ने अंत में कहा कि 12 से 25 दिसंबर तक चलने वाले इस विशेष आयोजन को ब्लॉक स्तर पर इस तरह आयोजित किया जाए कि इसका सीधा असर जनता के बीच दिखाई दे।

इस दौरान पावटा तहसीलदार लोकेंद्र मीणा, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी धर्मवीर जिंदोलिया, ब्लॉक सामाजिक सुरक्षा अधिकारी गेंदालाल, प्रवर्तन निरीक्षक पावटा संतोष मीणा, ब्लॉक पशु चिकित्सा अधिकारी पावटा पुष्पेंद्र, ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. कृष्ण यादव, सहायक अभियंता जेवीवीएनएल पावटा संजीव जाखड, शारीरिक अध्यापक विकास मीणा, राउमावि पावटा उप प्रधानाचार्य चिरंजी लाल गुर्जर, कनिष्ठ सहायक नगरपालिका पावटा प्रागपुरा अनिल जोनवाल, सीडीपीओ पावटा संगीता यादव, सहायक कृषि अधिकारी पावटा ओम भारती सिसोदिया, सहायक विकास अधिकारी पावटा विजेंद्र यादव, कनिष्ठ सहायक जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग पावटा टीकमचंद कुमावत, कनिष्ठ सहायक जल संसाधन विभाग पावटा बद्रीनारायण चोपड़ा, फॉरेस्ट विभाग पावटा यादराम जाट सहित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

अभिभाषक संघ के चुनाव कल

- अध्यक्ष पद के लिए त्रिकोणिय संघर्ष
- उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष व पुस्तकालय अध्यक्ष के आमने-सामने टक्कर

निवाई । अभिभाषक संघ के चुनाव 12 दिसंबर को आयोजित होंगे। जिसको लेकर अध्यक्ष पद के लिए तीन प्रत्याशियों ने आवेदन भरे गए है। जिससे अबकी बार अध्यक्ष पद के लिए त्रिकोणिय संघर्ष रहेगा।

इसी प्रकार उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष व पुस्तकालय अध्यक्ष के पद हेतु 2-2 आवेदन पत्र भरे गए है। जिससे बाकी के पदों पर प्रत्याशियों में आमने-सामने टक्कर रहेगी। निर्वाचन अधिकारी एडवोकेट दयाराम गुर्जर ने बताया कि अभिभाषक संघ के चुनाव हेतु अध्यक्ष पद के लिए एडवोकेट रामगोपाल जाट, कन्हैयालाल मीणा व सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष पद के लिए भागचंद बैरवा व रामदयाल शर्मा, सचिव पद के लिए रामजीलाल जाट व कजोड़मल गुर्जर, पुस्तकालय अध्यक्ष के पद हेतु नरेंद्रकुमार शर्मा व शिमला बाई गुर्जर व कोषाध्यक्ष पद के लिए रमेश कुमार शर्मा व सोराज चौधरी ने नामांकन भरे है।

अभिभाषक संघ के चुनाव को लेकर 12 दिसंबर को सुबह 11 से 4 बजे मतदान होगा। मतदान के बाद मतगणना होगी एवं मतगणना के तत्काल बाद परिणाम घोषित किया जाएगा।

चुनाव को लेकर कुल 85 मतदाता अपने मत का प्रयोग करेंगे। उल्लेखनीय है कि सभी प्रत्याशी चुनाव को लेकर अपने अपने मतदाताओं व चहेते अधिवक्ताओं से संपर्क करके अपने पक्ष में अधिकाधिक मतदान करवाने का आग्रह कर रहे हैं।

भाजपा से कांग्रेस में लौटे वाइस चेयरमैन

सांभरझील, (निसं)। सांभर नगर पालिका के दो दफा पार्षद रह चुके कांग्रेस के वाइस चेयरमैन नवल किशोर सोनी जो की अंदरूनी नाराजगी के कारण भाजपा में चले गए थे, लेकिन भाजपा में लंबे समय से उनकी अच्छी कद काठी और प्रतिष्ठा के बावजूद तवज्जो नहीं मिलने के कारण व्यथित होकर आखिरकार अपने पुराने घर लौट आए यानी कांठोस पुनः ज्वाइन कर ली।

हालांकि उनकी भाजपा में जाने की कोई इच्छा नहीं थी लेकिन क्योंकि मंत्री रहे सांसद लालचंद कटारिया से गहरी नजदीकी होने के कारण जब उनको मजबूरी में भाजपा ज्वाइन करनी पड़ी तो उनके कहने पर इन्होंने भी मन बना लिया था।

चर्चा जोरों पर चल रही है कि कटारिया वापस कांग्रेस में आ सकते हैं शायद इसी बात का इशारा मिलने के बाद सोनी ने यह महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

युवाओं ने अधिकारों के संरक्षण की शपथ ली

- युवाओं ने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया

शाहपुरा । उपखण्ड के सार्वजनिक पार्क में बुधवार को यूनिवर्सल ह्यूमन राइट्स काउंसिल के तत्वाधान मे राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ तरुण बांकोलिया अध्यक्षता मे अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस व संस्था का स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान पौधारोपण किया गया। युवाओं ने मानव अधिकारों के संरक्षण की शपथ ली कि वे जाति, धर्म, लिंग, भाषा आदि किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं करेंगे और सभी के अधिकारों का सम्मान व संरक्षण करेंगे। सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉ पूरणमल बुनकर ने कहा कि मानवाधिकार हमें गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार देते है और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना भी सिखाते है। समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रत्येक नागरिक को मानवाधिकारों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है।संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ तरुण बांकोलिया ने जानकारी दी कि मानवाधिकार दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1948 में पारित सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा की वर्षगांठ का प्रतीक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मानवाधिकार किसी सरकार का उपहार नहीं,बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने मानवाधिकार दिवस के मुख्य संदेशों पर प्रकाश डाला। इनमें समानता और न्याय का संरक्षण, भेदभाव के हर रूप का विरोध, कमजोर, शोषित और पीड़ित लोगों की आवाज बनना तथा समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाना शामिल है। सचिव हसवंत सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष इन्द्रराज मीणा,महासचिव सुरजभान बुनकर,रवि बैरवा, जगमोहन जांगिड़,लालचंद मधुकर, नरेन्द्र शर्मा आदि मौजूद रहे।

कृषक महिलाओं को स्वस्थ, ताजी सब्जियों के उत्पादन की जानकारी दी

- मुख्य अतिथि डॉ. हरफूल सिंह ने फसलों एवं सब्जियों में खाद एवं उर्वरक के महत्व एवं उपयोग की जानकारी दी वही कीट विभाग के आचार्य एवं विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. बीएल जाखड ने सफेद लट के नियंत्रण की जानकारी दी

निवाई। वनस्थली विद्यापीठ के कृषि विज्ञान केन्द्र पर जनजातिय उप योजना अंतर्गत पोषक वाटिका का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 25 जन जातिय कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर अपने घर पर स्वस्थ, ताजी एवं पौष्टिक सब्जियों का वर्षभर उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा के निदेशक डॉ हरफूल सिंह एवं विशिष्ट अतिथि केविके मुख्य वैज्ञानिक डॉ. बंशीधर चौधरी शिविर का विधिवत शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि डॉ हरफूल सिंह ने फसलों एवं सब्जियों में खाद एवं उर्वरक के महत्व एवं उपयोग की जानकारी दी। कीट विभाग के आचार्य एवं विभाग विभागाध्यक्ष डॉ बीएल जाखड ने सफेद लट के नियंत्रण की जानकारी दी। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना सब्जी फसल राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा के परियोजना प्रभारी डॉ. एसके बैरवा ने उन्नत सब्जीयों की किस्मों का चुनाव करने पर जोर देते हुए पोषक वाटिका में मीठा नीम एवं सहजन पौधे उगाने की जानकारी दी एवं परियोजना की गतिविधियों एवं परियोजना से विकसित सब्जीयों की उन्नत किस्मों के बारे मे विस्तृत जानकारी प्रदान की। उद्यान विज्ञान राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा सहायक के आचार्य डॉ योगेशकुमार शर्मा ने पोषक वाटिका में उगाई जाने वाली सब्जीयों के बारे में उनके की प्रबंधन की जानकारी दी। पादप रोग विज्ञान आचार्य डॉ आरके बागडी ने सब्जियों के रोगों की पहचान एवं उनके रोकथाम के उपाय के साथ सावधानी पूर्वक दवाइयों का छिडक़ाव करने के बारे में जानकारी। डॉ. बंशीधर चौधरी ने सब्जियों की खेती के माध्यम से किसानों की आय में बढ़ोतरी के तरीके बताए। डॉ नरेश कुमार अठावाल ने पोषक वाटिका मे सब्जीयों के कीट नियंत्रण की समन्वित विधियो के बारे मे बताते हुए नीम आधारित अर्क द्वारा कीट नियन्त्रण के तरीके बताए। डॉ. प्रीती वर्मा ने आंवला से बने उत्पादों की जानकरी दी। कृषि पर्यवेक्षक विवेक चौधरी ने कृषकों के पंजीकरण एवं अन्य गतिविधियों में सहभागिता निभाई। इस अवसर पर डॉ एसके बैरवा ने सभी कृषक एवं कृषक महिलाओं, कर्मचारीयों, विश्वविद्यालय प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया।

वर्धमान सागर महाराज के मंगल प्रवेश की तैयारी

निवाई। सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में राष्ट्रीय संत विराग सागर महाराज के शिष्य आचार्य विनिश्चय सागर महाराज ससंघ का विज्ञातीर्थ पर मंगल प्रवेश हुआ। जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। विज्ञातीर्थ कार्याध्यक्ष सुनील भाणजा ने बताया कि आचार्य विनिश्चय सागर महाराज का विज्ञातीर्थ पर आर्यिका ज्ञानश्री एवं ज्ञायकश्री माताजी का वात्सल्य मिलन हुआ। इस भव्य मिलन को देखकर सभी श्रद्धालुओं ने भगवान शांतिनाथ के जमकर जयकारे लगाए। जिससे आस-पास का वातावरण गूंजायमान हो गया। विज्ञातीर्थ कमेटी ने आचार्यश्री संघ की अगवानी की। विज्ञातीर्थ महिला मंडल ने आचार्यश्री के स्वागत में रंगोली सजाई एवं कलश लेकर अगवानी की। प्रवेश के बाद आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन किया गया। सायंकाल में आचार्यश्री की आरती की गई। बुधवार को प्रातःकाल अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ पर आचार्य विनिश्चय सागर महाराज संसघ के सान्निध्य में अतिशयकारी मनोकामना पूर्ण शांतिनाथ भगवान के मस्तक पर 1008 मंत्रों द्वारा जिन सहस्त्रनाम महाशांतिधारा की गई। सहस्त्रनाम महाशांतिधारा को देखने के लिए श्रद्धालुओं का जन सैलाब उमड़ा। उसके पश्चात पूर्वाचार्यों के अर्घ समर्पित किए गए। उसके बाद आचार्यश्री की अष्ट द्रव्य से पूजा-अर्चना की गई। आचार्य विनिश्चयसागर महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि संत प्रेम-तीर्थ है, ऋषि मुनि चलते फिरते तीर्थ है, वह जिस स्थान पर बैठ जाते हैं वही स्थान तीर्थ हो जाता है। ऋषि मुनि जंगल में जाकर भी बैठ जाएं तो वहीं समवशरण लग जाता है। संत किसी को अपने पास आने का निमंत्रण नहीं देते है, लोग स्वत खींचे चले आते हैं। जैसे कमल खिलता है तो भौंरे खींचे चले आते हैं, कमल की सुगंध में खिंचाव होता है जैसे ही संत के आचरण की सुगंध में खिंचाव होता है। उन्होंने बताया की धन संपत्ति कमाना बड़ी बात नहीं है, उसे धन संपत्ति का सही उपयोग करना बड़ी बात है। लोग धन तो कमा लेते हैं पर सही उपयोग के अभाव में उसका दुरुपयोग हो जाता है।

सार-समाचार

रामस्वरूप गुर्जर अध्यक्ष बने

बौंली -बामनवास । अभिभाषक संघ बौंली के वार्षिक चुनाव सहायक निर्वाचन अधिकारी विजय चौधरी की देखरेख में संपन्न हुए।सहायक निर्वाचन अधिकारी ने सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर रामस्वरूप गुर्जर, उपाध्यक्ष पद पर धर्मराज मीणा, कोषाध्यक्ष दौलत सिंह राजावत, सचिव मोहम्मद शाहिद शिरवानी,सह सचिव पद पर दीपक चंद्रावत को निर्विरोध निर्वाचित किया।नवीन कार्यकारी को पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता ओम प्रकाश मिश्रा एवं राजेश कर्मी सहित अन्य अधिवक्ताओं ने शुभकामनाएं दी।

अवाप्त भूमि से 16 तक कब्जा हटाने के आदेश

निवाई। रेलवे ओवर ब्रिज के लिए अवाप्त भूमि पर से अपना कब्जा हटाने के लिए सक्षम प्राधिकारी एवं उपखंड अधिकारी ने 16 दिसंबर तक की समय सीमा तय कर दी है। कब्जा नहीं हटाने पर 17 दिसंबर को प्रशासन कार्यवाही करेगा। भूमि अवाप्त प्राधिकारी एवं उपखंड अधिकारी प्रीति मीणा ने बताया कि अर्जन, पुनर्वास, पुनर्व्यस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम 2013 के तहत सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड निवाई द्वारा अवाप्त शुदा भूमि के मालिकों ने मुआवजा प्राप्त कर लिया। लेकिन अभी तक अपना कब्जा नहीं हटाया है। उन्होंने यह भी बताया कि जिन हितधारियों को सक्षम प्राधिकारी द्वारा मुआवजा प्राप्त करने हेतु अन्तिम से अन्तिम नोटिस जारी दिए जाने के बावजूद भी मुआवजा प्राप्त नहीं किया है, ऐसे सभी हितधारक को16 दिसंबर तक अवाप्त शुदा भूमि से अपना कब्जा हटाने के लिए अंतिम सूचना दी गई है। इसके बावजूद तय समय सीमा में अपना कब्जा नहीं हटाते हैं तो 17 दिसंबर को उक्त भूमि से प्रशासन द्वारा बेदखली की कार्यवाही की जाएगी।

श्मशान घाट विकास कार्य में घटिया सामग्री का आरोप

निवाई। शिवाजी पार्क के समीप स्थित माली समाज के श्मशान घाट पर करवाए जा रहे विकास कार्य में घटिया सामग्री का उपयोग करने का आरोप लगाते हुए आक्रोश व्यक्त किया। समाज के कालू गंगाडा, प्रहलाद माली, हनुमान अजमेरा, शंकर माली, नाथू माली, कैलाश निवाईवाल, कालू निवाईवाल, देवनारायण निवाईवाल, रामचंद्र निवाईवाल, ताराचंद ड्राइवर, पत्तु माली, कजोड़ माली, जमनालाल माली, रामबाबू निवाईवाल, हेमराज निवाईवाल, रामलाल गंगाडा, श्योजी माली, पूरण माली, बाबूलाल माली, सूरज ठेकेदार, राम कल्याण माली, नवरत्न माली, मदन माली, नानकराम माली, कन्हैया लाल माली, रमेश माली व छोटू लाल सैनी सहित समाज के लोगों ने बताया कि नगर पालिका द्वारा 17 लाख 50 हजार का विकास कार्य करवाया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि श्मशान घाट में कोटा स्टोन के नीचे सीमेंट का उपयोग नहीं हो रहा है। कोटा स्टोन के नीचे बजरी का ही उपयोग किया जा रहा है। जिससे कोटा स्टोन में बिल्कुल भी मजबूती नहीं है। श्मशान घाट पर टीन शेड लगाए गए हैं। उनकी भी लंबाई कम है। जिसके कारण बारिश के मौसम में टीन शेड का पूरा पानी कोटा स्टोन पर गिरेगा जिससे कोटा स्टोन जल्दी क्षितठास्त हो जाएगी। माली समाज के लोगों ने नगर पालिका से विकास कार्य गुणवत्ता पूर्ण करवाने की मांग की है।

भरतपुर में बच्चे को रौंदा, गाड़ी को आग लगाई

भरतपुर। बुधवार देर शाम शहर के मडरपुर चोराहे पर विजलीं बिभाग एवं बीडीए के एक ठेकेदार की गाडी से कुचलकर एक बच्चे की दर्दनाक मौत के बाद आक्रोशित लोगों ने ठेकेदार की गाडी को किया आग के हवाले। मौके पर लगा लोगो का भारी हुजूम। पुलिस ब प्रशासन पहुचा मौके पर। सड़क पर हुआ दोनो तरफ ट्रेफिक जाम बुधवार देर शाम शहर के मडरपुर चोराहे पर विजलीं बिभाग की गाड़ी से कुचलकर एक बच्चे की दर्दनाक मौत के बाद आक्रोशित लोगों द्वारा विजलीं बिभाग की गाड़ी को आग के हवाले करने का मामला। दमकल की गाडिया आग पर काबू पाने के प्रयास में जुटी। आग पर पाया गया काबू। ट्रेफिक हुआ जाम। मडरपुर चौराहे से ब्रिगेडियर घासीराम नगर के पास रामवीर एएसआई की पुत्रवधू अपने बच्चों को लेकर स्कूटी से जा रही थी । सड़क निर्माण चलने की वजह से तेज गति से आ रही बिजली ठेकेदार की पिकअप गाड़ी से स्कूटी पर सवार एक बच्चे की मौत हो गई महिला घायल हो गई। जिससे लोग आक्रोशित हो गए और वाहन को आग लगा दी। दमकल गाड़ियों ने आग बुझाई । सूचना मिलने पर पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे। मृतक के शव को आरबीएम अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है गुरुवार को पोस्टमार्टम कार्यवाही होगी।

भाजपा की रथ यात्रा 13 से

डीग भरतपुर (निस)। भाजपा मंडल जनूथर के कार्यकर्ताओं की बैठक डीग में गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम के आवास पर मंडल अध्यक्ष गोपेश कुमार शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें भाजपा के जिला उपाध्यक्ष सतीश बंसल मुख्य अतिथि थे। बैठक में 15 दिसंबर को राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के जन्म दिवस के अवसर पर सीकरी में रक्तदान शिविर आयोजित करने पर चर्चा की गई, तथा सरकार के 2 साल के विकास कार्यों को जन जन तक पहुंचाने के लिए गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह वेढम के नेतृत्व में 13 दिसंबर से 25 दिसंबर तक डीग जिले के बृज नगर विधानसभा में रथ यात्रा निकालने का निर्णय लिया गया । रथ यात्रा में गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह वेढम मौजूद रह कर लोगों से सीधे संवाद करेंगे।इस दौरान वह पंचायत मुख्यालयों पर रात्रि विश्राम कर जनसुनवाई कर लोगों की समस्याओं का समाधान करेंगे और उनके द्वारा बृज नगर विधान सभा क्षेत्र में स्वीकृत कराए गए 1000 करोड़ रुपए से अधिक राशि के विकास के कार्यों तथा आगे कराए जाने वाले विकास कार्यों पर चर्चा करेंगे ।

भरतपुर में सर्व ब्राह्मण महासभा का प्रदर्शन

- आईएएस संतोष वर्मा के खिलाफ कार्रवाई की मांग

भरतपुर (निस)। सर्व ब्राह्मण महासभा के आ ह्वान पर संपूर्ण भरतपुर जिले में सभी उपखण्डों भरतपुर, बयाना, रूपवास, नदबई, उच्चौन व रुदावल मुख्यालय पर ब्राह्मण समाज ने धरना प्रदर्शन कर आईएएस संतोष वर्मा का पुतला दहन किया ।

सर्व ब्राह्मण महासभा के महासचिव हेमराज शर्मा अंगिरा ने बताया है कि भरतपुर जिला मुख्यालय पर ब्राह्मण समाज ने एकत्रित होकर धरना प्रदर्शन किया। धरना स्थल पर संबोधित करते हुए सर्व ब्राह्मण महासभा के जिला अध्यक्ष पं. ताराचंद शर्मा चिचाना ने कहा कि आईएएस संतोष वर्मा ने स्तरहीन बात कर समाज को बेइज्जत किया है। इसने ब्राह्मण समाज की नारियों को टारगेट करते हुए अपनी नीच मानसिकता का परिचय दिया है। यह इस पद पर रहने लायक ही नहीं है। इसलिए सरकार तुरंत प्रभाव से कार्यवाही कर इसको दंडित करे।

सर्व ब्राह्मण महासभा के महासचिव हेमराज शर्मा अंगिरा ने धरना स्थल पर संबोधित करते हुए कहा कि आईएएस संतोष वर्मा एक आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इसने जज साहब के फर्जी हस्ताक्षर बनाकर कूटरचित दस्तावेज तैयार करने का अपराध किया है। इसके विरुद्ध महिलाओं ने शोषण और धोखाधड़ी के मुकदमे दर्ज करा रखे हैं । यह अपनी आपराधिक प्रवृत्ति के कारण जेल जा चुका है । फर्जी दस्तावेज और शपथपत्रों के आधार पर इसने आईएएस में प्रमोशन प्राप्त किया है। इसका आचरण लोक सेवक के पद और मर्यादाओं के विपरीत है । यह इस उच्च पद पर रहने लायक नहीं है। ब्राह्मण समाज मांग करता है कि इसको तुरंत प्रभाव से बर्खास्त करके जेल में डाल दिया जाए । इसके बाद धरना स्थल पर सभी ने संतोष वर्मा मुर्दाबाद के नारे लगाए तथा उसकी तुरंत प्रभाव से बर्खास्तगी की मांग की। अंत में सर्व ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष पं. ताराचंद शर्मा चिचाना के नेतृत्व में संतोष वर्मा का पुतला फूंका गया और सरकार को चेतावनी दी गई तत्काल प्रभाव से इसको बर्खास्त किया जावे, अन्यथा आगे आंदोलन और उठा किया जाएगा। धरना प्रदर्शन व पुतला दहन कार्यक्रम में ब्राह्मण समाज के गणमान्य डाक्टर ओमप्रकाश शर्मा, अशोक शर्मा, डॉक्टर देवेंद्र भारद्वाज, आकाश शर्मा अध्यक्ष युवा ब्राह्मण समाज, उपेन्द्र शर्मा एडवोकेट मालीपुरा, हरि पंडित जी, भोगीराम शर्मा, डोरी लाल शर्मा, बनवारीलाल शर्मा, लालचंद शर्मा, सुनील पीढ़ी, देवकीनंदन शर्मा, बबीता शर्मा, राम अवतार शर्मा, ललित आदि उपस्थित रहे।

3 माह से फरार आरोपी गिरफ्तार

पावटा। विराटनगर थाना पुलिस ने राह चलते व्यक्ति पर धारदार हथियार से मारपीट करने वाले 3 माह से फरार एक आरोपी को पकड़ा है। पुलिस आरोपी से पूछताछ करने में जुटी है। जिला पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड़ देवेंद्र विश्नोई ने बताया कि विराटनगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 30 अगस्त 2025 को गोविंद गुप्ता पुत्र सीताराम गुप्ता उम्र 30 साल निवासी भामोद अपने घर से भाई की दुकान पर जा रहा था। रास्ते में रोहिताश प्रजापत उर्फ छंगा पुत्र कन्हैयालाल कुम्हार उम्र 32 साल निवासी भामोद ने गोविंद के साथ गाली गलौच करते हुए धारदार हथियार से मारपीट की। जिस पर विराटनगर पुलिस थाने में मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपुतली नाजिम अली के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर उमेश निठारवाल के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा अभियुक्त की गहनता से तलाशी की।

मानव अधिकार दिवस पर बंदियों को उनके अधिकार बताए

सचिव रनवीर सिंह ने बंधियों को उनके अधिकारों की जानकारी दी ।

- अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस के अवसर पर उपकारागृह किशनगढ़ बास में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

किशनगढ़ बास। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के आदेशानुसार सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण खैरथल तिजारा रनवीर सिंह द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस के अवसर पर उपकारागृह किशनगढ़ बास में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सचिव रनवीर सिंह द्वारा जेल में बंदियों को अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस महत्ता एवं मानवाधिकारों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया। सचिव द्वारा बंदियों को उनके अधिकारों के बारे में अवगत कराया गया तथा मानव अधिकार संरक्षण 1993 के बारे में चर्चा की गई। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग तथा राज्य आयोग की कार्य प्रणाली तथा उनके कार्यों बारे में विस्तृत चर्चा की गई। सचिव द्वारा बताया गया कि मानवाधिकारों का हनन होने पर अपने मानवाधिकारों का संरक्षण किस प्रकार किया जा सकता है। सचिव रनवीर सिंह द्वारा बंदियों की समस्या को जानकर उनके निस्तारण हेतु उनके उपाय के बारे में चर्चा की गई।

युवा भारतीय टेनिस खिलाड़ियों, विशेषकर लड़कियों को, विश्व के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के खिलाफ खेलने का अवसर प्रदान करता है।
- सानिया मिर्जा

पूर्व भारतीय टेनिस खिलाड़ी, टीपीएल सीजन 7 को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — दिनेश कार्तिक

लंदन स्पिरिट ने द हंड्रेड में पूर्व भारतीय खिलाड़ी दिनेश कार्तिक को अपनी पुरुष टीम का मेंटॉर और बल्लेबाजी कोच बनाया है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के लिए भी 2025 में मेंटॉर और बल्लेबाजी कोच की भूमिका निभा चुके कार्तिक ने स्पिरिट के साथ जुड़ने पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा, लंदन स्पिरिट से जुड़कर मैं काफी उत्साहित हूं। जब मुझे मो, एमसीसी और टेक टाइटंस की योजनाओं के बारे में पता चला तो मैं काफी उत्सुकता से भर गया। इंग्लिश समर को लॉर्ड्स में काम करते हुए बिताना एक सपने के सच होने जैसा है।

क्या आप जानते हैं ?... 24 साल के इंटरनेशनल क्रिकेट करियर में सचिन ने 463 वनडे में 18426 रन बनाए हैं। उनके नाम वनडे में 49 सेंचुरी दर्ज हैं।

न्यू चंडीगढ़ में बढ़त दोगुनी करने उतरेगा भारत

दक्षिण अफ्रीका मैच जीतकर सीरीज में बराबरी करने के इरादे से उतरेगा

न्यू चंडीगढ़ 10 दिसंबर। कटक में पहला मुकाबला जीतने के बाद भारत गुरुवार को न्यू चंडीगढ़ में अपनी बढ़त को दोगुना करने तथा दक्षिण अफ्रीका मैच जीतकर सीरीज में बराबरी करने के इरादे से उतरेगा।

भारत को पहले मैच में मिली 101 शानदार जीत को देखते हुए प्लेइंग इलेवन में कोई बदलाव नहीं करना चाहेगी। हालांकि, शीर्षक्रम के बल्लेबाज खासकर शुभमन गिल और सूर्यकुमार यादव फॉर्म प्राप्त करना करने उतरेंगे। वहीं गेंदबाजी में एक बार फिर अर्शदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती, हार्दिक पांड्या और जसप्रीत बुमराह से उम्मीद होगी।

दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजों ने पहले टी-20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में काफी निराश किया था। ऐसे में वह दूसरे मैच में बेहतर प्रदर्शन करते हुए वापसी करना चाहेगा।

अगर दक्षिण अफ्रीका को यह मुकाबला जीतना है तो क्विंटन डिकॉक और एडन मारक्रम जैसे अनुभवी बल्लेबाजों को बड़ा स्कोर करना होगा।

परिस्थिति को देखते हुए भारत अपने एकादश में बदलाव कर सकता है। अगर पिच सूखी रहती है तो भारत अर्शदीप सिंह की जगह कुलदीप यादव को एकादश में शामिल कर सकता है और अगर बल्लेबाजी में गहराई सुनिश्चित करने का फैसला करता है तो हर्षित राणा को एकादश में जगह मिल सकती है।

न्यू चंडीगढ़ में ओस का असर शायद उतना देखने न मिले। यहां आईपीएल में पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम ने छह मुकाबले जीते थे जबकि पांच में उन्हें हार मिली थी। यहां 200 से अधिक स्कोर के साथ ही 111 के स्कोर का भी सफलतापूर्वक बचाव किया जा चुका है। इस पिच पर तेज गेंदबाजो का दबदबा रहा है।

भारत संभावित एकादशः- अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव (कप्तान), तिलक वर्मा, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, शिवम दुबे, अर्शदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती और जसप्रीत बुमराह।

दक्षिण अफ्रीका संभावित एकादशः- क्विंटन डी कॉक (विकेटकीपर), एडन मारक्रम (कप्तान), ट्रिस्टन स्टब्स, डेवाल्ड ब्रेविस, डेविड मिलर, डॉनोवन फरेरा, मार्को यानसन, लुथो सिपामला/कॉर्बिन बॉश/जॉर्ज लिंडे, केशव महाराज, लुंगी एन्गिडी और एनरिच नॉर्किया।

ब्लेयर और माइकल ने वेस्टइंडीज को 205 पर समेटा

वेलिंगटन, 10 दिसंबर। ब्लेयर टिकनर (चार विकेट) और माइकल रे (तीन विकेट) के शानदार प्रदर्शन के दम पर न्यूजीलैंड ने बुधवार को दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन वेस्टइंडीज को पहली पारी में 205 के स्कोर पर समेटने के बाद स्टंप्स के समय बिना कोई विकेट खोए 25 रन बना लिये है। आज यहां न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज को न्यूजीलैंड के गेंदबाज ब्लेयर और माइकल के कहर का सामना करना पड़ा और उसकी पूरी टीम 75 ओवर में 205 रन के स्कोर पर सिमट गई। सुबह के सत्र में जॉन कैंपबेल और ब्रैंडन किंग की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 66 रन जोड़े। 17वें ओवर में ब्लेयर टिकनर ने ब्रैंडन किंग (33) को पगबाधा इस साझेदारी का अंत किया। 19वें ओवर में टिकनर ने केवम हॉज (शून्य) का भी शिकार कर लिया। 29वें ओवर में जॉन कैंपबेल (44) माइकल रे का शिकार बने। न्यूजीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण के आगे वेस्टइंडीज के विकेट अंतराल पर गिरते रहे। शाई होप ने 80 गेंदों में आठ चौकों की मदद से 48 रन बनाये। कप्तान रॉस्टन चेज (29), जस्टिन ग्रीव्स (13), केमार रोच (शून्य),टेविन इमलाक (16) रन बनाकर आउट हुये।

75वें ओवर में जेकब डफी ने ओजे शील्ड्स (शून्य) को आउटकर वेस्टइंडीज की पहली पारी का 205 के स्कोर पर अंत किया। न्यूजीलैंड के लिए ब्लेयर टिकनर ने चार विकेट और माइकल रे ने तीन विकेट लिये। ग्लेन फिलिप्स और जैकब डफी ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड ने स्टंप्स के समय बिना कोई विकेट खोए 25 रन बना लिये है और डेवन कॉन्वे (नाबाद 16) तथा कप्तान टॉम लेथम (नाबाद सात) क्रीज पर मौजूद है।

अंडर 19 कूच बिहार ट्रॉफी - राजस्थान - मुंबई मैच

राजस्थान के कुशाग्र व रजत के शानदार शतक

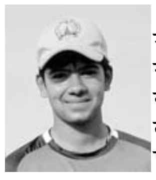

जयपुर, 10 दिसम्बर। मुंबई में खेले जा रहे राजस्थान - मुंबई अंडर 19 कूच बिहार ट्रॉफी मैच के तीसरे दिन का स्कोर :- मुंबई पहली पारी 250 आल आउट राजस्थान पहली पारी,90 आल आउट। राजस्थान दूसरी पारी 286 आल आउट। फॉलोऑन खेलते हुए राजस्थान ने आज कप्तान कुशाग्र ओझा व रजत बघेल के शानदार शतकों की सहायता से 286 रनो का स्कोर बनाया। टीम के लिए रजत बघेल 116, कुशाग्र ओझा 106, आदित्य सैनी नाबाद 39 रन। मुंबई के गेंदबाज सार्थक भिड़े 34/5, वेदांत 78/2, हर्ष 20/2 विकेट। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक मुंबई दूसरी पारी 60/2, राजस्थान के गेंदबाज प्रखर शर्मा, जतिन 1-1 विकेट।

अंडर-19 कोच की पिटाई, सिर में 20 टांके, कंधा फ्रैक्चर

पुडुचेरी, 10 दिसम्बर। पुडुचेरी क्रिकेट एसोसिएशन विवादों में घिर गया है। सोमवार को एसोसिएशन के अंडर-19 टीम के हेड कोच एस वेंकटारमन पर तीन लोकल खिलाड़ियों ने हमला कर दिया। रिपोर्ट के मुताबिक खिलाड़ी सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी की टीम से ड्रॉप किए जाने से नाराज थे। रिपोर्ट के अनुसार, यह हमला सोमवार सुबह करीब 11 बजे पुडुचेरी क्रिकेट एसोसिएशन के इंडोर नेट्स में हुआ। वेंकटारमन को गंभीर चोटें आईं हैं। उनके सिर पर 20 टांके लगे और कंधे में फ्रैक्चर हुआ। इस मामले की शिकायत सेडारापेट पुलिस स्टेशन में दर्ज की गई है। वेंकटारमन पहले पुडुचेरी क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव भी रह चुके हैं।

भारत 2026 में चार एटीपी चैलेंजर टूर टूर्नामेंट की करेगा मेजबानी

नयी दिल्ली 10 दिसंबर ।भारत 2026 में चार एटीपी चैलेंजर टूर टूर्नामेंटों की मेजबानी करेगा। यह टेनिस टूर्नामेंट बेंगलुरु, चेन्नई, नई दिल्ली और पुणे में खेले जायेंगे। भारत ने पिछले दो सालों में भी हर साल चार एटीपी चैलेंजर टूर टूर्नामेंट आयोजित किए थे। आने वाले साल के लिए इनमें से दो स्टॉप को डाउनलोड कर दिया गया है, चेन्नई एटीपी 100 से एटीपी 50 इवेंट में आ गया है, जबकि पुणे का महा ओपन एटीपी 100 से 75 हो गया है। बेंगलुरु ओपन के साथ पांच जनवरी को सीजन की शुरुआत होगी। चेन्नई ओपन नौ फरवरी को होगा, इसके बाद 16 फरवरी को दिल्ली ओपन (एटीपी 75) तथा 23 फरवरी को पुणे में महा ओपन होगा। भारत सात से आठ फरवरी को बेंगलुरु में डेविस कप क्वालिफायर में नीदरलैंड्स का भी सामना करेगा और इस साल आईटीएफ वर्ल्ड टेनिस टूर और डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट की मेजबानी कर सकता है।

भारत अगले साल मार्च में पहले कॉमनवेल्थ खो-खो चैंपियनशिप की करेगा मेजबानी

नयी दिल्ली, 10 दिसंबर ।भारत की मेजबानी में अगले साल नौ से 14 मार्च तक पहली कॉमनवेल्थ खो खो चैंपियनशिप खेली जायेगी। इस चैंपियनशिप में 24 से अधिक कॉमनवेल्थ देशों के हिस्सा लेने की उम्मीद है। कॉमनवेल्थ स्पोर्ट ने भारत में 2026 कॉमनवेल्थ खो खो चैंपियनशिप के आयोजन को मंजूरी दी है। इस चैंपियनशिप में पांच महाद्वीपों यूरोप, अफ्रीका, एशिया, ओशिनिया और अमेरिका हिस्सा लेंगे। इस साल जनवरी में नयी दिल्ली में हुए पहले खो खो वर्ल्ड कप में छह महाद्वीपों के 23 देशों (20 पुरुष टीमें और 19 महिला टीमें) ने हिस्सा लिया था। यह भारत में होने वाली पहली कॉमनवेल्थ खो खो प्रतियोगिता है। चैंपियनशिप में 16 पुरुष और 16 महिला टीमें होंगी, और यह पहले खो खो वर्ल्ड कप की तरह ही दोनों कैटेगरी में एक साथ आयोजित किया जायेगा। खो खो फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव उपकार सिंह विर्क ने कहा, ''हम वेन्यू को फाइनल करने के लिए कई राज्यों से बात कर रहे हैं।

सैमसन मेरे बड़े भाई की तरह हैं : जितेश

कटक, 10 दिसम्बर। कटक में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में विकेटकीपर के तौर पर चुने जाने के बाद भारत के विकेटकीपर-बल्लेबाज जितेश शर्मा ने संजू सैमसन के साथ अपने मजबूत रिश्ते के बारे में खुलकर बात की। इस स्थान के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद, जितेश ने अपने रिश्ते को सौहार्दपूर्ण, सम्मानजनक और आपसी विकास पर आधारित बताया। सैमसन के प्रभाव के बारे में बात करते हुए जितेश ने कहा कि मैं बहुत आभारी हूं कि वह टीम में हैं और मैं उनके मार्गदर्शन में सीख रहा हूं। सच कहूं तो, वह मेरे लिए बड़े भाई की तरह हैं और मुझे लगता है कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से ही प्रतिभा निखरती है। मुझे लगता है कि यह टीम के लिए भी अच्छा है।

जितेश ने भारतीय क्रिकेट में प्रतिभा की गहराई को स्वीकार किया और इस बात पर जोर दिया कि उनका और सैमसन का लक्ष्य एक ही है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय टीम में बहुत प्रतिभा है। आप इसे महसूस कर सकते हैं।

वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में विराट कोहली दूसरे स्थान पर

दुबई, 10 दिसंबर। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन एकदिवसीय मैचों की सीरीज में शानदार प्रदर्शन करने वाले भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली आईसीसी एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की ओर से जारी ताजा रैंकिंग के अनुसार कोहली की रैंकिंग में दो स्थान का सुधार हुआ और वह रैंकिंग में अब केवल रोहित शर्मा से पीछे हैं। रोहित ऑस्ट्रेलिया दौरे पर एक शतक और एक अर्धशतक लगाने के बाद पहली बार एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे थे और वह अभी भी शीर्ष स्थान पर बरकरार हैं। रोहित ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में कुल 146 रन बनाए। कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो शतक और एक अर्धशतक के साथ 302 रन बनाए थे और उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज भी चुना गया था।

इस समय शीर्ष 10 बल्लेबाज़ी रैंकिंग में रोहित और कोहली के अलावा शुभमन गिल और श्रेयस अय्यर भी मौजूद हैं। गिल पांचवें स्थान पर जबकि अय्यर 10वें स्थान पर हैं। के एल राहुल की भी रैंकिंग में दो स्थान का सुधार हुआ है और वह अब 12वें स्थान पर पहुंच गए हैं जबकि कुलदीप यादव वनडे गेंदबाज़ी रैंकिंग में तीन स्थान के सुधार के साथ तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी-20 के बाद अक्षर पटेल, अर्शदीप सिंह और जसप्रीत बुमराह की गेंदबाजी रैंकिंग में भी सुधार हुआ है। अक्षर दो स्थान के सुधार 13वें, अर्शदीप तीन स्थान के सुधार के साथ 20वें और बुमराह छह स्थान के सुधार के साथ 25वें स्थान पर पहुंचे हैं। वहीं डेवाल्ड ब्रेविस तीन स्थान के सुधार के साथ टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में आठवें स्थान पर पहुंचे हैं।

भारत ने अर्जेंटीना को हराकर जीता जूनियर विश्व कप हॉकी का कांस्य पदक

चेन्नई, 10 दिसंबर । दो गोल से पिछड़ने के बाद मेजबान भारत ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए नौ साल बाद पुरुषों के जूनियर विश्व कप में पहला कांस्य पदक जीता। तीसरे और चौथे स्थान के लिए हुए प्ले-ऑफ मैच में भारत ने अर्जेंटीना को 4-2 से हराया।

मेजबान टीम ने अर्जेंटीना के खिलाफ शानदार 4-2 से वापसी करते हुए जीत हासिल की, और सिर्फ 11 मिनट के छोटे से समय में चार गोल करके तीसरा स्थान हासिल किया। निकोलस रोड्रिग्ज (तीसरे') और सैंटियागो फर्नांडीज ने (44वें) मिनट में मेहमान टीम को बढ़त दिलाई थी, जिसके बाद भारत के लिए अंकित पाल ने (49वें), मनमीत सिंह ने (52वें), शरदानंद तिवारी ने (57वें) और अनमोल एक्का ने (58वें) मिनट में गोल किए। भारत ने खेल की शुरुआत आक्रामक तरीके से की, और अर्जेंटीना के डिफेंस में सेंध लगाने की कोशिश की। हालांकि, यह मेहमान टीम थी जिसने खेल के विपरीत जाकर बढ़त हासिल की, जब निकोलस रोड्रिग्ज (तीसरे मिनट) ने पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदला।

जुनून और जोश के बिना खिलाड़ी के तौर पर आगे नहीं बढ़ सकते : सचिन

नई दिल्ली, 10 दिसंबर। महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर ने मंगलवार को कहा कि युवा खिलाड़ी जुनून और जोश के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। उन्होंने युवाओं को 'मुश्किल चुनौतियों का सामना करने' और दूसरों के लिए मिसाल कायम करने की सलाह दी।

तेंदुलकर ने अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहा कि उन्हें क्रिकेट से इतना अधिक लगाव था कि वह इस खेल में आगे बढ़ने के लिए हर संभव प्रयास करने को भी तैयार रहते थे। उन्होंने कहा कि वह गर्मी की छुट्टियों में लगभग दो महीने तक रोजाना 12 घंटे तक अभ्यास करते थे। तेंदुलकर ने 'इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग (आईएसपीएल)' के तीसरे सत्र की नीलामी से पहले कहा, ''मैंने क्रिकेट खेलना इसलिए शुरू किया क्योंकि मुझमें जुनून था। मुझे इस खेल से बेइंतहा प्यार था और मैं बस भारत के लिए खेलना चाहता था। मैं इसके लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार था।'' उन्होंने आगे कहा, ''मेरे जीवन में कई पड़ाव आए। इसमें स्कूल क्रिकेट भी था और मैं कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार था। एक दौर ऐसा भी था जब मैंने अपनी गर्मी की छुट्टियों में लगातार 55 दिनों तक 12 घंटे अभ्यास किया और आखिरकार मैं बीमार पड़ गया। अगर जुनून और जोश नहीं है, तो आप आगे नहीं बढ़ पाएंगे।'' तेंदुलकर ने कहा कि एक खिलाड़ी के विकास के लिए कई चीजों का एक साथ आना जरूरी है, लेकिन सही समय पर अच्छा प्रदर्शन करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा, '' आपको आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत, योजना, उसे लागू करने की क्षमता, सही मार्गदर्शन और अनुशासन की जरूरत होती है।''

उन्होंने कहा, '' कई चीजें एक साथ आती है और फिर जब मौका मिलता है तो आपको मैदान पर उतरकर अच्छा प्रदर्शन करना होता है और इसी तरह आप अगले स्तर पर पहुंचते हैं।'' मास्टर ब्लास्टर ने कहा कि उम्मीदें उन खिलाड़ियों से अधिक होती है जिन्होंने अतीत में मिसाल कायम की है। इससे हालांकि किसी को भी परेशान नहीं होना चाहिए।

पैट कमिंस की एशेज़ में वापसी तय, ऑस्ट्रेलिया एडिलेड टेस्ट से पहले मज़बूत स्थिति में

नई दिल्ली, 10 दिसंबर। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच जारी एशेज़ सीरीज़ अब तीसरे टेस्ट की ओर बढ़ रही है, जहाँ हालात पूरी तरह ऑस्ट्रेलिया के पक्ष में नज़र आ रहे हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार ऑस्ट्रेलिया 2-0 से मज़बूत बढ़त बनाए हुए है और अब एडिलेड टेस्ट में टीम के नियमित कप्तान पैट कमिंस की वापसी लगभग तय मानी जा रही है। कमिंस जुलाई में वेस्टइंडीज़ के खिलाफ आख़िरी बार अंतरराष्ट्रीय मैच खेले थे। पीठ की चोट से उबरने के बाद वह अब पूर्ण फिटनेस में दिखाई दे रहे हैं और चयनकर्ताओं ने उन्हें 15 सदस्यीय टीम में जगह दी है। कोच एंड्रू मैकडॉनल्ड ने संकेत दिया है कि कमिंस ब्रिस्बेन टेस्ट में भी उतर सकते थे, लेकिन चिकित्सा एवं प्रबंधन सलाह के आधार पर उन्हें थोड़ा और समय दिया गया। उन्होंने कहा कि नेट्स में कमिंस ने पूरी क्षमता के साथ गेंदबाज़ी की है और उनकी तैयारी लगभग पूरी मानी जा रही है।

हेमन्य भारद्वाज की शानदार गेंदबाजी की बदौलत जयपुरिया विद्यालय विजयी

जयपुर, 10 दिसम्बर। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज खेले गये नैना क्रिकेट ग्राउण्ड जगतपुरा, पर खेले गये पूल-जी के मैच में जयपुरिया विद्यालय ने हेमन्य भारद्वाज 13 रन पर 3 विकेट कार्तिक बदलानी 17 रन पर 2 विकेट तथा भव्य शर्मा 26 रन पर 2 विकेट की शानदार गेंदबाजी तथा हार्दिक कुक्कड़ 48 रन की पारी की बदौलत नजदीकी मुकाबले में जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी को 2 विकेट से हराकर 2 अंक अर्जित किये।

टॉस जीतकर राजीव जयपुरिया विद्यालय ने पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया क्रिकेट एकेडमी की ओर से अमन शेखावत 46 रन, रोहन राजभर 24 रन, राहुल खण्डेलवाल 19 रन, शिवम उमेश 12 रन की मदद से 19.4 ओवर में 148 रन बनाकर आउट हो गये। गेंदबाजी में जयपुरिया विद्यालय की ओर से हेमन्य भारद्वाज 13 रन पर 3 विकेट कार्तिक बदलानी 17 रन पर 2 विकेट तथा भव्य शर्मा 26 रन पर 2 विकेट, यश त्रिपाठी व साहिब अभिचन्दानी प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे।

जवाबी पारी में जयपुरिया विद्यालय की ओर से ओपनर हार्दिक कुक्कड़ 48 रन, मृदुल मेघरानी 19 रन, साहिब अभिचन्दानी 15 रन, भव्य शर्मा 18 रन, वंश शर्मा 15 रन, हेमन्य भाारद्वाज 11 रन की मदद से विजय लक्ष्य 5 विकेट खोकर 149 रन 18.3 ओवर में बनाकर 2 विकेट से जीत दर्ज कर ली। गेंदबाजी में जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी की ओर से सयान 24 रन पर 3 विकेट, रोहन राजभर 24 रन पर 2 विकेट तथा दीपेन्द्र सिंह व स्वप्निल चौधरी प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। इस मैच का मैन ऑफ दी मैच हेमन्य भारद्वाज जयपुरिया विद्यालय रहें।

29वें पीएसपीबी इंटर-यूनिट सीनियर्स टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट 11 से

जयपुर, 10 दिसम्बर। 29वाँ पीएसपीबी इंटर-यूनिट सीनियर्स टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-26 कल से शुरू होने जा रहा है, जिसका आयोजन गेल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा जयपुरिया क्रिकेट अकादमी, जयपुर में किया जाएगा। 11 से 15 दिसंबर 2025 तक यह प्रतियोगिता पेट्रोलियम स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड (पीएसपीबी) की 9 सदस्य तेल कंपनियों की भागीदारी के साथ आयोजित की जाएगी। उद्घाटन समारोह में आयुष गुप्ता, डायरेक्टर (ह्यूमन रिसोर्स), गेल (इंडिया) लिमिटेड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। टूर्नामेंट में ओएनजीसी, आईओसीएल, बीपीसीएल, ईआईएल, एचपीसीएल, एनआरएल, ओआईएल, गेल और एमआरपीएल खिताब के लिए अपनी दावेदारी पेश करेंगी।

बायर्न म्यूनिख की वापसी जीत, गनाब्री चमके और लेनार्ट कार्ल ने फिर किया प्रभावित

नई दिल्ली, 10 दिसंबर। बायर्न म्यूनिख ने एक बार फिर मैच को बेहद रोमांचक बना दिया, लेकिन अंत में जीत दर्ज करते हुए एलियांज़ एरेना में वापसी पूरी की है। मौजूद जानकारी के अनुसार इस जीत के बाद टीम आख़िरी दो मैचों में किसी अप्रत्याशित नतीजे को छोड़ दे तो आराम से राउंड ऑफ 16 में शीर्ष आठ सीड के रूप में प्रवेश की स्थिति में पहुंच गई है। स्पोर्टिंग के गोलकीपर रुई सिल्वा ने भले ही तीन गोल खाए हों, लेकिन उनकी प्रदर्शन क्षमता पर सवाल नहीं उठाए जा सकते हैं। गौरतलब है कि पहले हाफ में लेनार्ट कार्ल का अद्भुत स्ट्राइक गोल में तब्दील हो सकता था, मगर ऑफसाइड के कारण उसे मान्यता नहीं मिली। इसके बाद सर्ज गनाब्री का गोल सिल्वा नहीं रोक सके, जबकि बाद में कार्ल और जोनाथन ताह द्वारा किए गए शॉट्स पर उनके पास बचाव का कोई ठोस मौका नहीं था, ऐसे में कहा जा सकता है कि गोलकीपर को रक्षापंक्ति ने काफी हद तक अकेला छोड़ दिया था।

जोनाथन ताह की बात करें तो यह गर्मियों में हुआ साइनिंग अब बायर्न के लिए पूरी तरह उपयोगी साबित होता नज़र आ रहा है। ताह का यह दूसरा गोल निर्णायक साबित हुआ है और संकेत देता है कि बड़े मौकों पर वे टीम को उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन करने में सक्षम हैं। इस मैच में अल्फोंसो डेविस की वापसी भी टीम बैलेंस के लिहाज़ से सकारात्मक कही जा रही है। जर्मन मिडफ़ील्डर जोशुआ किमिच का योगदान भी चर्चा में रहा, हालांकि एक आत्मघाती गोल के बावजूद उन्होंने विपक्षी हाफ में जिस तरह गेंद निर्माण, पासिंग और प्रेसिंग में प्रभुत्व दिखाया, वह उनके विश्वस्तरीय कौशल की गवाही देता है। मौजूद आंकड़ों के अनुसार किमिच ने जितनी बार गेम टेम्पो को नियंत्रित किया, उससे बायर्न के आक्रामक ढांचे को निरंतर बढ़त मिलती रही है। वहीं युवा लेनार्ट कार्ल अपनी परिपक्वता और सटीक फिनिशिंग से लगातार प्रभावित कर रहे हैं। पहले शानदार गोल के ऑफसाइड होने के बाद भी उनके आत्मविश्वास में कमी नहीं आई और दूसरा गोल उत्तम नियंत्रण और शॉट चयन का उदाहरण रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि कार्ल इस समय बायर्न के भविष्य का महत्वपूर्ण चेहरा बनते जा रहे हैं। आख़िर में मैच का मोड़ सर्ज गनाब्री ने ही तय किया। बता दें कि गनाब्री ने गोल करने के साथ-साथ एक अहम असिस्ट भी दर्ज कराई है और विपक्षी हाफ में लगभग 90 पासिंग सटीकता के साथ स्पोर्टिंग की डिफ़ेंस को तोड़ने में अहम भूमिका निभाई है।

शूटआउट में भारत ने उरुग्वे को हराया

सैंटियागो (चिली), 10 दिसंबर ।भारत ने आखिरी सेकंड में बराबरी करने के बाद उरुग्वे को एफआईएच हॉकी जूनियर महिला वर्ल्ड कप 2025 के 9/12 क्लासिफिकेशन मैच में 1-1 से ड्रॉ के बाद शूटआउट में 3-1 से हराया। भारत के लिए मनीषा ने (19वें) ने भारत के लिए गोल किया, जिसके बाद जस्टिना अर्रेगुई ने (60वें) मिनट सिर्फ दो सेकंड बाकी रहते पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदला, जिससे सेंट्रो डेपोर्टिवो डे हॉकी सेस्पेड, एस्टाडियो नैशनल में मैच शूटआउट में चला गया। भारत ने मैच की शुरुआत से ही गेंद पर कब्जा बनाए रखा, जल्दी दबाव बनाया और कई बार सर्कल में एंट्री की।

भारत ने स्क्वैश वर्ल्ड कप के पहले मैच में स्विट्जरलैंड को 4-0 से हराया

चेन्नई, 10 दिसंबर ।भारत ने स्क्वैश वर्ल्ड कप 2025 में अपने अभियान की शानदार शुरुआत करते हुए पूल बी के पहले मैच में पहली बार खेल रही स्विट्जरलैंड को 4-0 से हराया। एक्सप्रेस एवेन्यू मॉल में खेले गये मुकाबले में राष्ट्रीय चैंपियन वेलावन सेंथिलकुमार ने दुनिया की 296वें नंबर की खिलाड़ी रॉबिन गडोला पर 3-0 (7-6, 7-6, 7-5) से कड़ी टक्कर वाली जीत के साथ भारत को जीत की राह पर ला खड़ा किया।

आरसीए की सीनियर सलेक्शन कमेटी से हटाने पर हाईकोर्ट ने मांगा जवाब

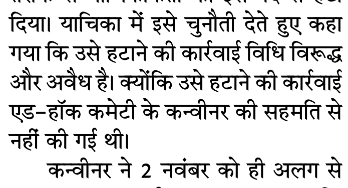

जयपुर, 10 दिसंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने आरसीए की सीनियर सलेक्शन कमेटी के चेयरमैन को पद से हटाने से जुडे मामले में प्रमुख खेल सचिव, सहकारिता रजिस्ट्रार, एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर और सदस्य धनन्जय सिंह, पिंकेश जैन, मोहित यादव और आशीष तिवाडी को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस संदीप तनेजा की एकलपीठ ने यह आदेश राहुल कांवट की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता को गत 21 जुलाई को सत्र 2025-26 के लिए आरसीए की सीनियर सलेक्शन कमेटी का चेयरमैन नियुक्त किया गया था। इस नियुक्ति पर आरसीए की साधारण सभा ने भी सहमति दे दी थी। वहीं गत 2 नवंबर को एड हॉक कमेटी के चारों सदस्यों ने विधि विरूद्ध तरीके से याचिकाकर्ता को इस पद से हटा दिया। याचिका में इसे चुनौती देते हुए कहा गया कि उसे हटाने की कार्रवाई विधि विरूद्ध और अवैध है। क्योंकि उसे हटाने की कार्रवाई एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर की सहमति से नहीं की गई थी।

कन्वीनर ने 2 नवंबर को ही अलग से आम सूचना जारी कर कहा था कि याचिकाकर्ता को हटाने की कार्रवाई गलत है। इसके अलावा याचिकाकर्ता की नियुक्ति को आरसीए की साधारण सभा ने अनुमोदित किया है। ऐसे में एक ओर जहां साधारण सभा में लिए गए निर्णय को एड-हॉक कमेटी पलट नहीं सकती, वहीं दूसरी ओर इस कार्रवाई में एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर की सहमति भी नहीं है।

जबकि बिना कन्वीनर कोई भी निर्णय नहीं लिया जा सकता। इसलिए एड-हॉक कमेटी के सदस्यों की ओर से लिए गए इस निर्णय को अवैध घोषित कर रदद किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों ओर एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर और सदस्यों से जवाब तलब किया है।

रघु सिन्हा आईटीएफ मास्टर्स 400 टेनिस टूर्नामेंट शुरू

टेनिस टूर्नामेंट में देसी-विदेशी खिलाड़ियों का जमावड़ा

जयपुर, 10 दिसम्बर। जयपुर क्लब में आज से शुरू हुए रघु सिन्हा आईटीएफमास्टर्स एमटी-400 टेनिस टूर्नामेंट का विधिवत शुभारंभ राजस्थान टेनिस एसोसिएशन के सचिव प्रो. राजीव शर्मा तथा शहर के प्रतिष्ठित उद्योगपति एवं खेल प्रेमी सुरेंद्र गोलछा द्वारा किया गया। आयोजन समिति के सदस्यों ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। टूर्नामेंट डायरेक्टर सी.ए. प्रदीप जैन ने उद्घाटन अवसर पर प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी दी तथा सभी खिलाड़ियों से अनुशासन और खेल भावना बनाए रखने की अपील की।

रघु सिंह-माला माथुर ट्रस्ट के ट्रस्टी सुधीर माथुर ने स्व. रघु सिंह जी को स्मरण करते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा और खेल के प्रति समर्पण के कारण यह टूर्नामेंट लगातार तीसरे वर्ष सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों और आयोजन दल को धन्यवाद देते हुए सहयोग बनाए रखने की अपील की।

मुख्य अतिथि प्रो. राजीव शर्मा ने टूर्नामेंट की व्यवस्थाओं की सराहना करते हुए कहा कि राजस्थान टेनिस एसोसिएशन भविष्य में भी इस आयोजन को पूर्ण सहयोग देता रहेगा। उन्होंने आगामी वर्ष में 700 श्रेणी के आयोजन में भी सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया।

रघु सिंह टेनिस क्लब के अध्यक्ष सुरेंद्र गोलछा ने स्व. रघु सिंह के जीवन और उनके खेल प्रेम पर प्रकाश डालते हुए भावपूर्ण शब्दों में कहा कि उनके आदर्शों पर चलते हुए यह आयोजन अनुशासन, पारदर्शिता और उत्कृष्टता के साथ संपन्न किया जा रहा है। कोर्ट में प्रो. शर्मा और गोलछा ने रैकेट से गेंद उछालकर टूर्नामेंट का औपचारिक उद्घाटन किया।

आयोजन समिति के संयोजक ललित सिंह तलेड़ा ने बताया कि इस वर्ष खिलाड़ियों और दर्शकों के लिए लाइव प्रसारण, मोबाइल पर रियल-टाइम स्कोर, तथा खिलाड़ियों की मैच शेड्यूल जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे प्रतियोगिता का अनुभव और भी बेहतर होगा।

देश-विदेश में गौरव बढ़ाने वाले प्रवासी राजस्थानी आज भी मिट्टी से जुड़े हैं- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने अगले वर्ष फिर राइज़िंग राजस्थान ग्लोबल इन्वैस्टमैंट समिट के आयोजन की घोषणा की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में पहले ''प्रवासी राजस्थानी दिवस-2025'' समारोह का बुधवार को भव्य उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, केंद्रीय उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल, केन्द्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव सहित कई नामी उद्योगपति, देश-विदेश से आए प्रवासी राजस्थानी उपस्थित थे।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य सरकार को प्रवासी राजस्थानी दिवस के आयोजन के लिए बधाई दी। उद्घाटन सत्र में ''कमिटमैंट इन एक्शन'' कॉफी टेबल बुक का विमोचन भी किया गया।

जयपुर, 10 दिसंबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में बुधवार को जयपुर के जेईसीसी सभागार में प्रदेश के पहले प्रवासी राजस्थानी दिवस-2025 के ऐतिहासिक समारोह का भव्य उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागडे, पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल, केन्द्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी, वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल और टाटा पावर के सीईओ और एमडी प्रवीर सिन्हा सहित, कई नामी उद्योगपति तथा देश-विदेश से आए प्रवासी राजस्थानी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विश्वभर से आए प्रवासी राजस्थानियों का स्वागत करते हुए कहा कि दुनिया में कहीं भी रहने वाले प्रवासी राजस्थानी आज भी अपनी मिट्टी से जुड़े हैं और उन्होंने देश-दुनिया में राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। मुख्यमंत्री ने अगले वर्ष फिर से राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के आयोजन की घोषणा भी की। उन्होंने प्रवासी समुदाय से आग्रह किया कि वे राजस्थान आएं और खुशहाल एवं आधुनिक राजस्थान के निर्माण में सहभागी बनें। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य सरकार को संदेश के माध्यम से प्रवासी राजस्थानी दिवस के आयोजन के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में प्रवासी राजस्थानियों और राज्य के बीच भावनात्मक जुड़ाव तथा साझा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष फिल्म भी प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम के दौरान 1 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों की ग्राउण्ड ब्रेकिंग की गई। उद्घाटन सत्र में कॉफी टेबल बुक, 'कमिटमेंट इन एक्शन' का भी विमोचन किया गया, जिसमें ''राइजिंग राजस्थान'' के तहत हुए एमओयू की प्रगति और ग्राउण्ड ब्रेकिंग की विस्तृत जानकारी शामिल है।

नौ विशिष्टजनों को ''प्रवासी राजस्थानी सम्मान''

जयपुर, 10 दिसंबर। प्रवासी राजस्थानी दिवस-2025 कार्यक्रम में देश-विदेश में विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने वाले प्रवासी राजस्थानियों, अनिल अग्रवाल, कुमार मंगलम बिड़ला, विनीत मित्तल, अजय पीरामल, माधव सिंघानिया, पूनमचंद राठी, नरसी कुलरिया, सी.एम. मूंदड़ा और प्रदीप राठौड़ को ''प्रवासी राजस्थानी सम्मान'' से सम्मानित किया गया।

बैल्जियम से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घोटाले के पकड़े जाने से कुछ दिन पहले, एंटीगा और बारबुडा भाग गया था। बाद में वह बेल्जियम में दिखाई दिया, जहां बताया जाता है कि वह इलाज के लिए गया था। भारत ने 27 अगस्त 2024 को बेल्जियम को प्रत्यर्पण अनुरोध भेजा था, जो मुंबई की एक विशेष अदालत द्वारा जारी गिरफ्तारी वारंटों पर आधारित था।

कोर्ट ऑफ कैसेशन के प्रवक्ता, अडवोका-जनरल हेनरी वैंडरलिंडन ने कहा, ''कोर्ट ऑफ कैसेशन ने अपील को खारिज कर दिया है। इसलिए, कोर्ट ऑफ अपील का फैसला बरकरार है।'' एंटवर्प कोर्ट ऑफ अपील ने भारत के प्रत्यर्पण अनुरोध को सही ठहराया था और इसे ''लागू करने योग्य'' कहा था।

एंटवर्प के कोर्ट ऑफ अपील के चार-सदस्यीय अभियोग कक्ष ने 29 नवंबर 2024 को जिला अदालत के प्री-ट्रायल चेंबर द्वारा जारी आदेशों में कोई कमी नहीं पाई। उन्होंने मुंबई की विशेष अदालत द्वारा मई 2018 और जून 2021 में जारी गिरफ्तारी वारंटों को लागू करने योग्य माना और चोकसी के प्रत्यर्पण की अनुमति दे दी।

'टैरिफ का कारण ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ऐसी किसी बातचीत की जानकारी नहीं है, तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने जवाब दिया: ''लेकिन अगर वे यह कहना चाहते हैं, तो उन्हें भारी शुल्क का भुगतान करते रहना होगा, और वे ऐसा नहीं करना चाहते।''

राजन की टिप्पणियों से ऑनलाइन बहस छिड़ गई, जिसमें कई मोदी समर्थकों ने यह तर्क किया कि भारत ने वैश्विक शक्तियों को संतुष्ट करने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार कार्य किया।

ये टिप्पणियाँ ट्रंप के उस दावे के संदर्भ में आईं, जिसमें वे लगातार यह कहते रहे हैं कि उन्होंने अकेले भारत और पाकिस्तान के बीच मई में हुए संघर्ष को रोका। पेनसिल्वेनिया के माउंट पोकोनो में एक रैली में समर्थकों को संबोधित करते हुए, ट्रंप ने कहा: ''10 महीनों में, मैंने आठ युद्धों को खत्म किया, जिसमें कोसोवो (और) सर्बिया, पाकिस्तान और भारत, वे आपस में लड़ रहे थे, इजराइल और ईरान, मिस्त्र और इथियोपिया... आर्मेनिया और अजरबैजान।'' उन्होंने मई के बाद से यह दावा लगभग 70 बार दोहराया है।

10 मई को एक युद्धविराम की घोषणा की गई, जो भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद हुआ था, जिसमें पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवाद संबंधी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया गया था, यह ऑपरेशन 22 अप्रैल को हुए पहलगाम हमले के जवाब में था, जिसमें 26 नागरिक मारे गए थे।

भारत ने यह बताया है कि युद्धविराम की घोषणा पाकिस्तान के सैन्य संचालन निदेशक द्वारा उनके भारतीय समकक्ष से संपर्क करने के बाद हुई थी, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इस मुद्दे पर चुप्पी बनाए रखी है। मोदी ने एक बार भी ट्रंप के दावे को खारिज नहीं किया है।

हालाँकि पाकिस्तान ने पहले इस दावे का विरोध किया था, बाद में उसने इसकी पुष्टि की और यहां तक कि ट्रंप को 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया, और भारत पाक युद्ध में ट्रंप के नेतृत्व और कूटनीतिक हस्तक्षेप की सराहना की।

एनडीए गठबंधन की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मोदी सरकार की ''पूर्व-नियोजित नीतियों'' का परिणाम है। सांसद ने यह भी कहा कि युवा मंत्री पर हमला अनुचित था, क्योंकि उन्हें यह पद संभाले अभी कुछ ही महीने हुए हैं और वे पहले से चले आ रहे ढांचे की गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं।

सूत्रों के अनुसार, टीडीपी नेतृत्व को सबसे ज्यादा चोट पहुंची है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की गहरी चुप्पी से। टीडीपी नेताओं का कहना है कि राष्ट्रीय संकटों के समय पीएम मोदी पहले भी व्यक्तिगत तौर पर सामने आए हैं, चाहे वह बालासोर ट्रेन दुर्घटना रही हो, पहलगाम में तीर्थयात्रियों पर हमला रहा हो या लाल किले का विस्फोट मामला। ''तो अब क्यों नहीं?'' एक वरिष्ठ टीडीपी पदाधिकारी द्वारा पूछा गया यह प्रश्न दोनों दलों के बीच बढ़ती भावनात्मक दूरी का संकेत है।

टीडीपी इस चुप्पी को ''गठबंधन धर्म'' का उल्लंघन मान रही है। पार्टी को उम्मीद थी कि राजनीतिक रूप से इस संवेदनशील समय में भाजपा का शीर्ष नेतृत्व उसके युवा मंत्री के समर्थन में आगे आएगा, खासकर इसलिये भी, कि एनडीए मौजूदा संसदीय स्थिति व्यवस्था में टीडीपी का समर्थन सरकार के लिये बेहद महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की ओर से 72 घंटे से अधिक समय तक कोई भरोसा दिलाने वाला बयान न आने के बाद, मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू खुद आगे आए। उन्होंने न केवल राम मोहन नायडू को नैतिक समर्थन दिया, बल्कि सार्वजनिक रूप से उनकी प्रशंसा भी की कि उन्होंने ''इस अभूतपूर्व संकट को परिपक्वता, पारदर्शिता और संतुलन के साथ संभाला।'' हालाँकि दोनों दलों ने कहा है कि गठबंधन की मज़बूती यथावत बनी हुई है, लेकिन इस घटना ने एनडीए के भीतर मौजूद नाज़ुक तनावों को उजागर कर दिया है। विश्लेषकों का कहना है कि यह घटना एक महत्वपूर्ण याद दिलाती है कि गठबंधन राजनीति में राजनीतिक संवेदनशीलता और समय पर संवाद, दोनों ही ज़रूरी होते हैं, खासकर उस सरकार में, जहाँ संख्या बल मायने रखता हो और क्षेत्रीय सहयोगियों का वज़न का काफी हो।

राहुल ने गृह मंत्री शाह ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किसी भी महत्वपूर्ण बिंदु का जवाब देने में नाकाम रहे, जबकि उनसे उम्मीद थी कि सरकार इन मुद्दों पर स्पष्ट जवाब देगी। राहुल गांधी ने कहा कि गृह मंत्री के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था कि चुनाव आयोग को पूरी छूट और पूर्ण प्रतिरक्षा क्यों दी गई।

अमित शाह ने इसका जवाब देते हुए कहा कि इंदिरा गांधी ने स्वयं को प्रतिरक्षा दी थी, जब अदालतों ने उनके चुनाव को अनुचित बताया था। अमित शाह ने कहा कि यही तो वोट चोरी है!! एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि अमित शाह इंदिरा गांधी की तुलना चुनाव आयोग से कर रहे हैं और क्या इंदिरा गांधी चुनाव हार नहीं गई थीं, चाहे उन्होंने कुछ भी किया हो? राहुल गांधी ने कहा कि अपने पूरे जवाब के दौरान गृह मंत्री रक्षात्मक दिखाई दे रहे थे और बिल्कुल आत्मविश्वासी नहीं थे।उन्होंने कहा कि वोट चोरी एक राष्ट्र-विरोधी कृत्य है।राहुल गांधी ने कहा कि अमित शाह ने इस सवाल का भी कोई जवाब नहीं दिया कि विपक्ष को डिजिटल, मशीन द्वारा पढ़े जाने योग्य और पारदर्शी वोटर सूची क्यों नहीं दी जा रहीं, जबकि वे इसकी लगातार मांग कर रहे थे।

राहुल ने कहा, इस पर गृह मंत्री ने एक शब्द भी नहीं कहा।उन्होंने कहा कि ईवीएम की संरचना पर पारदर्शी ऑडिट के मुद्दे पर भी वे पूरी तरह असहज दिखाई दिए।राहुल बोले, चुनाव आयोग की नियुक्ति प्रक्रिया से भारत के मुख्य न्यायाधीश को क्यों हटाया गया, इस पर भी कोई जवाब नहीं मिला।कांग्रेस ने कहा है कि मल्लिकार्जुन खड़गे कल राज्यसभा में गृह मंत्री द्वारा लोकसभा में कही गई कई बातों का जवाब देंगे और उनके द्वारा लोकसभा में बोले गए झूठ और आधे-अधूरे सच को मजबूती से चुनौती देंगे।

ट्रंप की प्रशासनिक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वह लिखते हैं, ''वे अब बूढ़े दिखते हैं, जैसा कि उस पद पर रहने वाला कोई भी व्यक्ति दिखेगा। लेकिन मुझे चिंता इस बात की है कि उनका संदेश बहुत बिखरा हुआ लगता है। पहले वह अधिक ध्यान केन्द्रित रख पाते थे।'' उनकी इन टिप्पणियों ने राष्ट्रपति पद के भारी दबाव, बढ़ती उम्र का तनाव, और परिवार के सदस्यों द्वारा बताई गई बातों की विश्वसनीयता के बारे में चर्चाओं को फिर शुरु कर दिया है।

ट्रंप के हाल के सार्वजनिक प्रदर्शनों पर राजनीतिक विश्लेषकों ने बारीकी से नज़र रखी हुई है। पिछले दिनों उनके कई भाषण बिना किसी खास कनैक्शन वाले विषयों पर भटकते रहे, जिस पर रिपब्लिकन दल के भीतर से भी आलोचना हुई कि वे महत्वपूर्ण समय पर मुख्य नीतिगत मुद्दों से भटक रहे हैं। कुछ मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने सामान्य रूप से, और बिना किसी विशेष व्यक्ति का मूल्यांकन किए, कहा है कि नेताओं के ऐसे पैटर्न अक्सर उनके निर्णय लेने की स्पष्टता पर सवाल उठाते हैं। जब ऐसे सवाल खुद नेता के परिवार की ओर से उठते हैं, तो वे और गंभीर माने जाते हैं।

सरकार के भीतर, ट्रंप का कैबिनेट किसी भी असाधारण संवैधानिक कदम पर विचार करता हुआ नहीं दिखता। 25वें संशोधन के तहत, कैबिनेट का बहुमत राष्ट्रपति को कर्तव्यों के निर्वहन में अक्षम घोषित कर सकता है और सत्ता उपराष्ट्रपति को सौंप सकता है। लेकिन इस संशोधन का कभी इस्तेमाल नहीं हुआ है, और ट्रंप के मौजूदा सलाहकार, जो प्रशासन की नीतिगत दिशा तय करने में बड़ी भूमिका रखते हैं, ऐसा कोई कदम उठाने पर विचार करेंगे, इसका कोई संकेत नहीं है। आलोचकों का कहना है कि स्टीफ़न मिलर, रसेल वॉट, जे.डी. वैंस और रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनियर जैसे प्रभावशाली लोग ट्रंप की अपने वफादारों के छोटे से समूह पर निर्भरता का लाभ उठाते हैं, इसलिए उन्हें चुनौती देने का कोई कारण नहीं देखते।

आख़िरकार, पूरी बहस शासन, पारदर्शिता और आधुनिक अमेरिकी राष्ट्रपति पद में अत्यधिक केन्द्रित सत्ता से जुड़ी व्यापक चिंताओं को दर्शाती है। ट्रंप तृतीय या राजनीतिक विश्लेषकों द्वारा उठाई गई चिंताओं को कितना महत्व मिलता है, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आने वाले महीनों में ट्रंप सार्वजनिक रूप से, और रोज़मर्रा के प्रशासनिक काम में, कैसा प्रदर्शन करते हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908